

आर.एन.आई. नं. 7387/63  
मुद्रण तिथि : 15-16 अक्टूबर 2022  
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 अक्टूबर 2022  
ISSN : 2456-611X



वर्ष : 60 अंक : 13  
मूल्य : 10/- पृष्ठ संख्या : 76  
डाक पंजीयन संख्या BIKANER/022/2021-23  
Office Posted At R.M.S., Bikaner

# श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

# श्रमणापासक

धार्मिक पाक्षिक

महावीर स्वामी केवलज्ञानी  
गौतम स्वामी चउनाणी  
महावीर स्वामी पहुँचे निर्वाण  
गौतम स्वामी को केवलज्ञान

**“जिस दीपक में तुम्हारे कर्तृत्व का तेल जल रहा होगा, उसकी ज्योत अखण्ड होगी।”**



**“बादलों का काम है सूर्य को ढकना – आवृत करना। जबकि सूर्य का स्वभाव सबको, बादल को भी प्रकाश देना। दूसरों की शक्ति को छीनने वाला स्वयं अपना अस्तित्व खो देता है। प्रकाश देने वाला बना रहता है।”**

**–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**



## आ ग म वा णी



सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।

–सूत्रकृतांग (1/6/23)

सत्य वचनों में भी अनवद्य सत्य (हिंसा-रहित सत्य वचन) श्रेष्ठ हैं।

The non-violent truth is the best from all truth.

अलियवयणं...

अयसकरं, वरकरणं, ...मणसंकिलेसवियरणं।

–प्रश्नव्याकरण (1/2)

असत्य वचन बोलने से बदनामी होती है, परस्पर वैर बढ़ता है और मन में संक्लेश की वृद्धि होती है।

Telling of untruth results in defamation, mutual animosity and mental misery.

पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि।

–आचारांग (1/3/3)

हे मानव! एक मात्र सत्य को ही अच्छी तरह जान ले, परख ले।

O Seeker! just know and understand the truth well.

सच्चस्स आणाए, उवदिठए मेहावी मारं तरइ।

–आचारांग (1/3/3)

जो मेधावी साधक सत्य की आज्ञा में उपस्थित रहता है, वह मार-मृत्यु के प्रवाह को तैर जाता है।

One who follows the path of truth swims across the chasm of death.

सहिओ दुक्खमत्ताए पुट्ठो नो झंझाए।

–आचारांग (1/3/3)

सत्य की साधना करने वाला साधक सब ओर दुःखों से घिरा रहकर भी घबराता नहीं है, विचलित नहीं होता है।

One who follows the path of truth, do not panic even

when surrounded by misery on all sides.

साभार– प्राकृत मुक्तावली





राय यमकते भानु समावा

## अनुक्रमणिका

### जीवनी/धर्मदेशना

The deep aagam study;	07
त्याग की शक्ति	09
त्याग का महत्त्व	11
मैं भी बन जाऊं महावीर	18
ऐसी वाणी बोलिए	21
श्रीमद् भगवती सूत्र	24
श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र	25

### तत्त्व ज्ञान

समकित के 67 बोल	27
पंच परमेष्ठी की पहचान	31
'दण्डक' शब्द का आगमिक अर्थ	33
प्रोत्साहन ही संघ का पोषण है	26
अनूठी साधिका : महासती पुष्पचूला	37
धर्ममूर्ति आनंदकुमारी	38
'वीर स्तुति' में भगवान महावीर के 60 विशेषण	47
धर्म का अधिशोषण या अवशोषण	51
इंस्टेंट ज्ञान, बढ़ता अज्ञान	52
रात्रिभोजन त्याग की महिमा	54
मानसिक प्रदूषण की भयावहता	56
दीपावली का बदलता स्वरूप	58
जीत गए मुकाबला भोले कबूतर	59

### भक्ति रस

हुकमगच्छ की यात्रा	60
Dangers of Mental Pollution	41
बालमन में उपजे ज्ञान	42
गुड बॉक्स	44
Greatness of Renunciation	45
उदयपुर समाचार	61

### विविध

### संस्कार सौरभ

### ज्ञान सार

## जितना त्याग : उतनी समता

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

जितना त्याग, उतनी समता और जितना भोग, उतनी विषमता। त्याग कितना होना चाहिए इसकी कोई सीमा नहीं होती। कोई दुःखी प्राणी को देखकर पांच पैसे की सहायता करता है, तो कोई दूसरा उसके दुःख का निवारण करने के लिए अपने अमूल्य जीवन का भी उत्सर्ग कर देता है। किस कारण के लिए कितना त्याग किया जा सकता है, यह अन्तःप्रेरणा की वस्तुस्थिति होती है, किन्तु मूल आवश्यकता यह है कि अन्तःकरण में त्याग की अटूट निष्ठा बने।

‘मैं किसी भी दूसरे प्राणी के हित पर कतई आघात न करूँ’ यह सामान्य निष्ठा हुई, लेकिन ‘मैं दूसरों के हितों की रक्षा के लिए अपने हितों को भी छोड़ दूँ’ यह त्याग की विशेष निष्ठा होगी। जहां जैसी स्थिति हो, वहां उस रूप में यदि यह निष्ठा बनी रहे, तो आप लाख सोचकर भी वह जगह नहीं बता पाएंगे, जहां किसी भी प्रकार का कोई संघर्ष पैदा हो सके। कहते हैं कि ताली दोनों हाथों से बजती है, एक से नहीं। जहां एक व्यक्ति ताली से अपना हाथ सरका ले, वहां ताली नहीं बजेगी। यह तो सही है ही, लेकिन जिसकी मजबूरी से ताली नहीं बजी है, वह भी पहले व्यक्ति से प्रेरणा लेने की बात सोचेगा। इसी तरह संघर्ष मिटता जाएगा, विषमता हटती जाएगी और समता फलती-फूलती जाएगी।

साभार- नानेशवाणी-13

## निर्वाण से पहले निर्माण

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

नमन, निर्वाण की प्रथम इकाई है। बिना नमन के निर्वाण असंभव है। तीर्थंकर भी जब साधना क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं तो सिद्ध भगवान को नमन करते हैं। नमन से निर्वाण की यात्रा प्रारंभ होती है। वर्तमान युग में निर्वाण संभव नहीं है। निर्वाण नहीं तो क्या, निर्माण तो हो ही सकता है। जन्म मिलना एक बात है, पर जीवन को कैसे जीना सर्वथा अलग बात है। नदी का पानी बहता हुआ समुद्र में जा गिरता है। एक जीवन ऐसा ही होता है जो बहता हुआ मृत्यु में जा समाता है। उस जीवन को जीने वाला बस जीता है, पर उसका आनंद नहीं ले पाता। क्योंकि अधिकांश लोग लकीर के फकीर बनकर जीते रहते हैं। उनके जीवन का कोई उद्देश्य ही नहीं होता। यदि कोई पूछ ले तो वे जवाब देंगे कि समय पास करना है, कर रहे हैं। कुछ लोग धन कमाकर जीवन की इतिश्री कर देते हैं। उस मार्ग से जो भी गुजरा उसका अनुभव अच्छा नहीं रहा है। वह प्रसन्नता से, राजी-राजी नहीं मर सका। जो मरते वक्त तृप्त नहीं हो पाता, शांति और संतोषपूर्वक नहीं मर पाता। उसे पुनः-पुनः संसार में जन्म-मरण की राह पर चलते ही रहना होगा। निर्वाण उसके लिए असंभव है। निर्वाण के पहले अपना निर्माण होना जरूरी है। व्यक्ति मकान बनवाता है तो विचार करता है कि यह भूकम्प से हिले नहीं। बिजली गिरे तो उससे मकान की क्षति न हो। हवा व प्रकाश उसमें आता रहे। तूफान में भी वह मकान हिले नहीं, आदि। उसे अपने जीवन के बारे में भी इसी प्रकार विचार करना चाहिए कि कैसी भी विकट परिस्थितियां आ जाएं, मैं कभी हिलूंगा नहीं। जीवन में कैसे भी भूकम्प आ जाएं, मेरे पैर उखड़ेंगे नहीं। मैं अटल रहूंगा, अविचल रहूंगा। हकीकत में यदि वह इसी प्रकार से अपना निर्माण कर लेता है तो निर्वाण उसका इंतजार करेगा। निर्वाण के पथ से उसे कोई हटा नहीं पाएगा, कोई रोक नहीं पाएगा। वह बंदा बेरोक-टोक अपनी मस्ती से निर्वाण को पाएगा। बस पहले स्वयं का सशक्त निर्माण कर लिया जाए।

साभार- प्रणव

दिनांक : 09.09.2016, भाद्रपद शुक्ला 8, शुक्रवार

## सुनहरी कलम से....

जय जिनेन्द्र!

‘अहिंसा’ शब्द मात्र ही शांति, मानवता, सौहार्द्र का सूत्रधार है। अहिंसा स्वरूप के सूक्ष्म अर्थ की समझ दूरगामी परिणाम दे सकती है। वाणी, वचन, व्यवहार व भाव द्वारा भी प्राणी मात्र को दुःख पहुंचाने में हिंसा को बताकर जैन दर्शन हिंसा की सूक्ष्म व्याख्या द्वारा पूरे जगत् के जीवों को विश्वशांति का अमोघ उपाय ‘अहिंसा’ को प्रतिष्ठापित कर रहा है।

अहिंसा सिद्धांत ने मानव के हाथों में बेड़ियां व मन-मस्तिष्क पर सद्भावना, भाईचारे के पहरे लगाए हैं। इसी दूरगामी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2007 में संयुक्त राष्ट्र संगठन के समक्ष 2 अक्टूबर को **अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस** के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव रखा गया। परस्पर सौहार्द्र, भाईचारा एवं अहिंसा की भावना के आगे बढ़ना असंभव-सा प्रतीत होता है। अतः वहां मौजूद 191 में से 140 देशों के समर्थन से यह प्रस्ताव पारित किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अहिंसा के प्रयोग द्वारा दुनिया को एक नई दिशा दी, एक नया मार्ग दिखाया। उन्होंने अहिंसा के बलबूते पर आजादी दिलाकर दुनिया के सामने मिसाल पेश की है। इसी सोच व कृत्य को सम्मान देते हुए यह दिवस मनाया जाता है

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व 5 मौलिक सिद्धांतों में सर्वप्रथम अहिंसा को विभिन्न जैन सम्प्रदाय अनेकानेक



**भगवान महावीर स्वामी** ने जीवन जीने हेतु रखा और इस सिद्धांत में ऊर्जा भरते हुए गतिविधियों के माध्यम से पुरुषार्थ कर रहे हैं।

2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा साक्षी है कि ‘जीओ और जीने दो’ का वृहद सूत्र सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने का एक मात्र मूल मंत्र है। इसकी सूक्ष्मतम विवेचना करते हुए हमारे **परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा को रोकने हेतु नए-नए आयाम दे रहे हैं, जिनमें व्यसनमुक्ति, उत्क्रांति, गुणशीलता आदि सबसे महत्वपूर्ण हैं। ये आयाम ‘सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय’ एवं ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ के भावों को जीवन्त रूप देते हैं और अहिंसा के साथ सामाजिक एकरूपता, अपव्यय एवं दिखावे पर रोक, संस्कारों पर जोर, सामाजिक विकास का पक्ष लेते हुए राष्ट्रीय एकता और विश्वशांति का संदेश देते हैं।

विश्व अहिंसा दिवस मनाया जाना इस बात का

2011 में संयुक्त राष्ट्र संगठन ने दुनिया से अपील की है कि पूरी दुनिया 2 अक्टूबर को **‘विश्व अहिंसा दिवस’** के रूप में मनाए।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ इसकी अनुमोदना करता है और आचार्य प्रवर के गुणशीलता आयाम के अंतर्गत विश्वधर्म और राष्ट्रधर्म को सर्वोपरि रखते हुए विश्वशांति हेतु प्रयत्नशील रहने का संकल्प लेता है। भगवान महावीर ने अहिंसा की परिभाषा को पराकाष्ठा तक समझा कर जीवन को सार्थक करने के सूत्र दिए हैं। हम सभी यह प्रण लें कि हम जीवों के प्रति दया भावना रखकर यथासंभव उनकी हिंसा एवं विराधना से बचकर ‘जीओ और जीने दो’ के सिद्धांत को आत्मसात् करने का पुरुषार्थ करेंगे तो ही हमारा भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाना सार्थक होगा। **वीर निर्वाण दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ...**

सह-सम्पादिका



## (PUJYA HUKMESH)

## The deep aagam study; Contemplation on the conduct of the former saints

Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.

Under the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the english translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.S.A.

Continued from 15-16 Sep. 2022-

**D**ear children! Hukmichand now came to be known as Muni Shri Hukmichand Ji, a humble disciple who started to gain knowledge in the presence of his Guru.

Pujya Shri Ji also opened the wealth of his knowledge to such a wonderfully talented, polite, and humble disciple. On receiving this, Muni Shri Hukmichandiji with full vigilance began to fill the wealth of his memory by choosing a Mukta from Rajhansvat Agam Ratnakar.

As a result of this, his charisma illuminated the entire Kota gachcha and he gained fame in a very short span of time. It has been heard and read that at that time 25 Pandit Muniraj and 26th Pandita Saadhvi Gulab Kanwarji were also in the same group (gachcha).

But just as in the cosmic world the harmonious union of Lakshmi and Saraswati is rare and special, similarly in the spiritual realm, a combination of excellent knowledge, strong faith, and moral conduct is rare and special. The same thing happened. In Kota Gachch also, along with excellent knowledge, faith and conduct also emerged.

Under the disguise of the new era, Saint-Sati started influencing the devotees towards themselves by doing mantra-tantra, amulets, and dora-danda. Along with this, they started using faulty (दोषयुक्त) places, food, clothes, and utensils. Not only this, but in the name of sthanak, they started falling into the trap of possessiveness. Seeing all this, the conscience of Muni Hukmesh was disturbed.

He began to think that sadhu saadhvi of the Sangh have become skilled in getting praise and applause from people by giving loud sermons with aagams' teachings and singing songs and hymns in frivolous language. But their conduct is exactly contrary to these sacred teachings from aagams.

After thinking about this, he started preparing a list of all those habits and behaviors, which the sadhu-saadhvis were recklessly disobeying (according to aagam). With this in hand, he waited for the right opportunity...

### Request at Guru's feet

Dear children! Muni Hukmesh's Chaturmas of 1890 was in Kota with Pujya Shriji. At the time, anyone who witnessed

muni Hukmesh's excellent moral ethics and conduct was completely in awe of him. Seeing this, feelings of hatred and bitterness started developing in the minds of the other Sangh munis.

Out of envy, they would provoke people by taunting them as orthodox or conservative. They also spoke ill about Muni Hukmesh to Pujya Shri. But Muni Hukmesh ignored their evil words by imbibing complete equanimity. Also, keeping one thing in mind that he should not disobey what is written in aagams with his conduct. With this thought in mind, one day he reached Guru's feet and after offering deep obeisance with full humility, he obliged - "Bhagwan! For the path of salvation, for which I broke the bond of family's affection and accepted restraint at your feet, the basis of its worship is Aagam, or is it personal desires disguised under the new era."

Hearing this, Pujya Shri Ji, showering his spiritual affection and stroking his hand on Muni's head said - "Muni Hukmesh! Aagam is the only basis of worship on the path of salvation. On the contrary, whether personal desires are fulfilled under the disguise of the era or if they are done with vie of others, these desires or tendencies deprave the basic virtue (गुण) as mentioned in the aagams. These independent desires contrary to the aagams are bound to lead the world astray, no matter who does it."

Hearing this from Gurudev, overjoyed Muni Hukmesh requested - "Gurudev! I find

some tendencies of a few saadhu-saadhvis of our Sangh opposite to what is mentioned in the aagams." Keeping the list at the feet of the guru, he started requesting - "Gurudev! It seems necessary to control them. Are you ready for it?"

Hearing the words of Muni Hukmesh, Pujyashri started saying - "Muni Hukmesh! Despite all your allegations being true, what should I say to them? You know that I have reached full senility. But if you discuss with all the saints and make them understand, then there is no prohibition from my side. I completely agree with everything you said. You go and discuss with all the saints and ask them about their preparation."

After listening to Gurudev, Muni Hukmesh started discussing with all the saints, elder and younger than him. Many saints started making fun of him. Many of them despite understanding the truth, did not show any readiness to rectify those things.

After giving up, Muni Hukmesh came to Gurudev's feet, told him everything, and started requesting - "Gurudev! If you have a feeling to walk on the true path as said in aagam, then I am ready to serve you completely. If not, then you should give me your blessings to follow the order of Aagam 'सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू'. I want to spend as much of my life as possible practicing self-control as mentioned in the aagams."

Continued...



**Muni Hukmesh!  
Aagam is the only  
basis of worship  
on the path of  
salvation.**



## त्याग की शक्ति

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008

श्री जवाहरलालजी म.सा.

धर्मदेशना

**भ**गवान के ज्येष्ठ पुत्र भरत ने जब अपने भाइयों से अपनी अधीनता स्वीकार करने को कहा, तो भाइयों ने उत्तर दिया कि पिताजी ने हमें आपका भाई बनाया है, दास नहीं बनाया। हम लोग आपके भाई बनकर रह सकते हैं, पर दास बनकर नहीं रह सकते।

भरत चौदह रत्नों के स्वामी थे। उन्हें अपने रत्नों का गर्व था। वे कहने लगे- 'मैं चक्रवर्ती हूँ। षट्खण्ड भरत क्षेत्र का अद्वितीय अधिपति हूँ। सम्पूर्ण भरत क्षेत्र में ऐसी कोई भी सत्ता कायम नहीं रह सकती, जो मेरी अधीनता स्वीकार न करे। जो मेरी आन (आज्ञा) न मानेगा, उसे कुचल दूंगा।'

भरत ने अपने भाइयों के पास संदेश भेज दिया कि या तो मेरी अधीनता स्वीकार करो या युद्ध करने के लिए उद्यत हो जाओ। यह संदेश जब मिला तो 98 भाइयों ने मिलकर परामर्श किया कि इस स्थिति में हमें क्या करना चाहिए? अंत में उन्होंने निश्चय किया कि "अगर हम लोग रहेंगे तो स्वतंत्र होकर ही रहेंगे, अन्यथा युद्ध करके अपनी बलि चढ़ा देंगे। हम भगवान ऋषभदेव के पुत्र गुलाम होकर जीवित नहीं रह सकते। हम गुलामी स्वीकार करके भगवान के उज्वल यश में कालिमा नहीं लगने देंगे। गुलामी अन्ततः गुलामी ही है, भले ही वह सगे भाई की ही क्यों न हो। पिताजी ने हमें स्वतंत्र किया है, अतएव स्वतंत्र ही रहेंगे। पिताजी ने हमें तथा भरतजी को राज्य दिया है, अतएव युद्ध करने से पहले इस विषय में पिताजी से सम्मति लेना आवश्यक है। पिताजी का निर्णय हमारा अन्तिम निर्णय होगा। यदि उन्होंने युद्ध करने की सम्मति दी तो हम लोग अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर युद्ध में जूझ पड़ेंगे और उनके अनुग्रह से हमें इन्द्र

भी पराजित नहीं कर सकेगा। कदाचित् उन्होंने भरतजी के अधीन होने की सलाह दी तो फिर सम्पूर्ण भाव से भरतजी की अधीनता स्वीकार कर लेनी होगी। पिताजी के निर्णय को हम बिना किसी संकोच के, बिना ननुनच किए अंगीकार करेंगे।"



98 भाई इस प्रकार निर्णय करके पिता के पास गए। विशिष्ट ज्ञानी भगवान पहले से ही सब बातें जानते थे। जैसे ही ये लोग उनके पास पहुंचे, भगवान ने कहा- "तुम भरत द्वारा सताए गए हो। वास्तव में मैंने तुम्हें स्वतंत्र ही किया है और स्वतंत्र रहना ही क्षत्रिय का धर्म है। मगर सर्वश्रेष्ठ स्वतंत्रता दूसरी ही वस्तु है। चौदह रत्न और नौ निधियां प्राप्त कर लेने पर भी भरत को संतोष नहीं हुआ है, यह देखकर भी क्या तुम्हारी आंखें नहीं खुलीं? संसार के समस्त पदार्थों की प्राप्ति कदाचित् किसी को हो जाए तब भी संतोष के बिना शांति नहीं मिलती। इससे विपरीत संतोषवृत्ति जिसके अन्तःकरण में व्याप्त हो जाती है, वह अकिंचन होने पर भी सुख का उपभोग करता है। असंतोष वह लपलपाती हुई ज्वाला है जिसमें घृत की आहुति देने से निरंतर वृद्धि ही होती जाती है। अतएव तुम लोग स्थिरचित्त होकर विचार करो।

अपने भाई भरत पर क्रुद्ध होना वृथा है। उस पर दया करके उसे सुधारो। भरत को राज्य के टुकड़े पर अभिमान आ गया है। उसने तुम्हें सताया है, यह अपराध उसका नहीं, वरन् उसमें अहंकार उत्पन्न कर देने वाले राज्य का है। यह राज्य ऐसे-ऐसे अनेक अपराधों एवं अवगुणों को उत्पन्न करता है। अगर तुम्हें इन अपराधों और अवगुणों से घृणा है तो तुम स्वयं राज्य की लालसा मत करो। तुम राज्य को तुच्छ समझो और मेरी शरण में आओ। मेरी शरण में आ जाने पर न तो तुम्हें भरत की अधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी और न ही युद्ध करना पड़ेगा। इतना ही नहीं, तुम सब प्रकार की परतंत्रता से मुक्त हो जाओगे। सच्ची स्वाधीनता का यही एक मात्र राजमार्ग है। निस्पृह एवं निरपेक्ष भाव में ही स्वाधीनता है। जहां पर पदार्थों के साथ संबंध हैं, वहां पराधीनता अनिवार्य है। पराधीनता की बेड़ियों को काटने का उपाय है, आत्मनिर्भर बनना। तुम पदार्थों के अधीन रहकर संसार की वस्तुओं को अपने सुख का साधन समझो और फिर पराधीनता से भी बचना चाहो, यह संभव नहीं है। पूर्ण स्वाधीनता पूर्ण स्वावलम्बन से ही आती है। अतएव अपनी मिथ्या धारणाओं को छोड़ो और मैं जिस पथ का आचरण द्वारा प्रदर्शन कर रहा हूं, उस पर चलो।”

भगवान का उपदेश सुनकर 98 भाई मुनि बन गए। भरत को जब अपने भाइयों के मुनि बन जाने का संवाद

मिला तो वह मूर्च्छित होकर सिंहासन से गिर पड़ा। आंखों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। वह भागा हुआ पिता के पास आया। जब उसने अपने भाइयों को मुनि के वेश में देखा तो वह कांप उठा। उसके संताप और पश्चात्ताप का पार न रहा। उसने कहा- “भाइयो! मैं अपराधी हूं। मैंने तुम्हारे ऊपर अत्याचार किया है। तुमने मेरे अत्याचार को विचित्र तरीके से सहन किया है।

जहां संसार के समस्त बल बेकार बन जाते हैं, अस्त्र-शस्त्र निकम्मे हो जाते हैं, वहां भी त्याग का बल अपनी अद्भुत और अमोघ शक्ति से कारगर होता है।

साम्राज्य की सुरा के मद में उन्मत्त होकर मैंने तुम्हें घोर कष्ट पहुंचाया है। मैं इन चक्रादि के चक्कर में फंस गया। चौदह रत्नों के चक्कर में अपने 98 भाइयों को भुला दिया। मुझे क्षमा का दान दो भाइयो! चक्रवर्ती भरत

आज तुम्हारे समक्ष क्षमा का भिखारी बना है।

इस प्रकार भरत का अभिमान चूर-चूर हो गया। उसका गर्व जल गया। भरत के 98 भाइयों ने भरत का गर्व किस प्रकार चकनाचूर कर दिया? इस प्रश्न का एक ही उत्तर है- त्याग से। त्याग में अनन्त बल है, अमित सामर्थ्य है। जहां संसार के समस्त बल बेकार बन जाते हैं, अस्त्र-शस्त्र निकम्मे हो जाते हैं, वहां भी त्याग का बल अपनी अद्भुत और अमोघ शक्ति से कारगर होता है।

इस प्रकार भगवान ऋषभदेव ने अपने 98 पुत्रों को जैनेन्द्री दीक्षा से दीक्षित किया। बाद में बाहुबली और भरत ने भी संयम धारण किया।

साभार- श्री जवाहर किरणावली भाग-17

## 12 प्रकार के महापापी

- |                              |         |                                     |         |
|------------------------------|---------|-------------------------------------|---------|
| 1. आत्मघाती                  | महापापी | 2. विश्वासघाती                      | महापापी |
| 3. गुरुद्रोही                | महापापी | 4. कृतघ्नी                          | महापापी |
| 5. झूठी सलाह देने वाला       | महापापी | 6. झूठी साक्षी देने वाला            | महापापी |
| 7. हिंसा में धर्म बताने वाला | महापापी | 8. सरोवर की पाल तोड़ने वाला         | महापापी |
| 9. जंगल में आग लगाने वाला    | महापापी | 10. हरा-भरा वन कटाने वाला           | महापापी |
| 11. बाल-हत्या करने वाला      | महापापी | 12. सती-साध्वी का शील भंग करने वाला | महापापी |



15-16 अक्टूबर 2022

धर्मदेशना

## त्याग का महत्व

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

**म**नुष्य-जीवन अमूल्य है, महान् है। हमें इसे और भी भव्य बनाना चाहिए। यदि हमारी क्रियाओं में संवर का संशोधन आ जायगा तो हमारा आपसी व्यवहार भी निश्चय ही भव्य बनेगा। संवर ऐसा चमत्कारिक है कि क्रिया के साथ मिलकर वह मनुष्य को आत्मिक शान्ति की ओर शीघ्रता से ले जाता है और मनुष्य में सच्ची मानवता को प्रस्फुटित कर देता है।

मनुष्य जब संवर के साथ क्रिया करना आरम्भ कर देता है तो शान्ति की मंजिल उसके लिए व्यवस्थित बन जाती है, सरल बन जाती है। उससे पापों का परित्याग होता है और धर्म का मधुर रस प्राप्त होने लगता है। जो भी व्यक्ति संवर की आराधना करते हुए क्रिया करेगा, वह क्रिया उसकी मोक्ष-मार्ग की ओर होगी। पवित्र मोक्ष-मार्ग में जो भी बाधाएं और विपत्तियां हैं संवर सहित क्रिया करने से उन सबका परित्याग होगा।

हमारी जो भी क्रियाएं संवर के साथ जुड़ें, वे त्याग के साथ जुड़नी चाहिए। संवर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। त्यागपूर्वक क्रिया का संवर के साथ जुड़ना स्वर्ण में सुगन्ध के समान है और वही क्रिया सार होती है। त्याग के साथ जब इन्सान चलता है तो जीवन में सारा कार्यक्रम व्यवस्थित बन जाता है। अतः त्याग की भावना के पूर्ण महत्त्व को भी अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

कभी-कभी मेरे भाई अपने मन की स्थिति व्यक्त करने के लिए कहते हैं कि महाराज! हम मन में त्याग कर लें, मन में त्याग आ जाना चाहिए, तब फिर प्रतिज्ञा करने के लिए क्यों खड़े होवें? वचन से त्याग क्यों करें? मैं इस शंका का निवारण यह कहकर करना चाहूँगा कि मन से भी त्याग हो, परन्तु केवल मन से ही त्याग हो, ऐसा नहीं

होना चाहिए। उसमें से 'ही' को निकाल कर 'भी' लगा लेना चाहिए अर्थात् मन से प्रारम्भ करिए वह तो परमावश्यक है ही, किन्तु मन में उठने वाले उस त्याग भावना के प्रवाह को इतना प्रबल बनाओ कि वह वाणी के रूप में प्रकट हो जाए। फिर इससे भी आगे यह प्रवाह इतना तीव्र बनना चाहिए कि वह काया के अणु-अणु में प्रवाहित हो जाए। यदि काया में, हाथ-पैरों में वे संस्कार नहीं आए तो मन का त्याग केवल मन तक ही सीमित रह जाता है, जिसका कोई विशेष मूल्य नहीं रह जाता। दूसरे ही क्षण वह त्याग भूख के रूप में परिणत हो जाता है। वहाँ कोई बंदिश नहीं रहती। संवर की क्रिया के स्तर रूप में वह त्याग जुड़ता है तभी वह वास्तव में जीवन बनता है।

कभी-कभी कोई मनुष्य ऐसे भी सोचता है कि त्याग करने से क्या लाभ? पाप-क्रिया अपने आप ही किसी दिन छूट जाएगी। यदि मन में ज्ञान की मात्रा पर्याप्त होगी तो पाप-क्रिया स्वतः ही छूट जाएगी। इस विचार में मैं यह संशोधन दूँगा कि छूट जाना एक बात है और स्वयं अपनी ओर से छोड़ देना दूसरी बात है। मनुष्य अपने जीवन में अनेक प्रक्रियाएँ करता है और वे छूटती भी रहती हैं, ऐसा प्रत्येक के साथ होता है। किन्तु स्वयं उन प्रक्रियाओं को छोड़ना विरले ही लोगों के साथ होता है। त्याग प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता, किन्तु त्यागना तो प्रत्येक व्यक्ति को पड़ेगा ही।

आज मनुष्य संवर के महत्त्व को समझ नहीं रहा है। वह संवर के रूप में क्रिया नहीं कर रहा है। इसीलिए वह शान्ति का अनुभव नहीं कर रहा है। वह समकित को नहीं जानता, संवर किसे कहते हैं और उसका जीवन में कितना महत्त्व है, यह भी उसे पता नहीं। परिणामतः वह त्याग से कोसों दूर है।

कौन नहीं जानता कि जीवन क्षणभंगुर है? कौन नहीं

जानता कि एक न एक दिन इस जीवन का अन्त सुनिश्चित है? किसे यह ज्ञात नहीं कि ये मकान, ये हवेलियाँ, ये परिवार आदि सब कुछ यहीं छूट जाने वाले हैं।

कोई स्वीकार करे अथवा न करे, किन्तु सभी लोग यह जानते हैं। फिर भी कितने लोग हैं जो स्वयं अपनी ओर से इन्हें त्यागने के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं? बहुत कम विरले ही लोग ऐसी तैयारी पहले से करके रखते हैं।

कोई छोड़ना चाहे अथवा न चाहे, उसे यह सब छोड़ना तो पड़ता ही है। परलोक को जब मनुष्य रवाना होता है तो परिवार, सम्पत्ति आदि सब यहीं छूट जाते हैं अर्थात् इनका त्याग उसे करना ही पड़ता है। तो बंधुओ! जो हो जाता है वह तो मुर्दे में और जो किया जाता है वह जीवित में। अतः जानदार, जीवित, चैतन्य, प्रबुद्ध मनुष्य वही है जो स्वयं स्वेच्छा से, ज्ञानपूर्वक, प्रसन्नता से त्याग करता है। शेष व्यक्तियों की गिनती तो जानदार मनुष्य में की जानी कठिन ही है।

आपके पास कोई वस्तु है, जिसे आप अपने से दूर नहीं करना चाहते। उसका त्याग करने की तनिक भी भावना आपके मन में नहीं है। लेकिन कोई आप से अधिक समर्थ एवं बलवान व्यक्ति आप से वह वस्तु छीनकर ले जाता है तब आप यदि ऐसा कहें कि आपने उस वस्तु का त्याग कर दिया तो आपका यह कथन मिथ्या है। यह तो स्वयं को धोखा देना हुआ। उस वस्तु को ग्रहण करने की आपकी तीव्र इच्छा थी, भावना थी, किन्तु जबरदस्ती वह आपसे छीन ली गई, तो वह त्याग नहीं है।

त्याग स्वेच्छा से होता है। 'इदं न मम' अर्थात् यह मेरा नहीं - इस प्रकार संकल्प करके जो व्यक्ति किसी वस्तु का त्याग करता है तो वह सच्चा त्याग कहलाता है। अब वह त्याग चाहे किसी छोटी-सी वस्तु का हो, चाहे एक कोड़ी या दमड़ी का हो, चूँकि उसके पीछे सच्ची त्याग भावना है इसलिए ऐसा त्याग करने वाला व्यक्ति जीवन में आनन्द का अनुभव अवश्य करेगा। संवरपूर्वक स्वेच्छा से किया गया ऐसा त्याग सचमुच परम सुखदायी

होता है।

इसके विपरीत अनिच्छापूर्वक रो-रो कर किए जाने वाले त्याग का कोई वास्तविक मूल्य नहीं है। जो छूटना है, वह तो छूटेगा ही। छूटने की प्रक्रिया तो होनी ही है। पाप के जो कर्म बंधे हैं वे भी समय पाकर छूटेंगे ही, किन्तु संवर का आश्रय लेकर स्वेच्छा से शीघ्रातिशीघ्र उन पाप के संस्कारों को रोकने और नष्ट करने में ही मानव की विशेषता निहित है।

एक वृक्ष खड़ा है। समय आने पर वह एक दिन अवश्य ढह जाएगा। इसी प्रकार पाप के संस्कार भी एक दिन छूटेंगे, किन्तु इसमें विशेषता नहीं है। अपने इरादों से, प्रयत्न से उन्हें छोड़ा जाए इसी में विशेषता है।

एक ओर बात यहाँ समझ लेनी चाहिए। जब भी त्याग का समय आए, तब त्याग तो करना ही है, किन्तु उसमें अभिमान की वृत्ति कदापि नहीं आने देनी चाहिए। कभी भी ऐसा नहीं सोचना अथवा करना चाहिए कि मैंने यह त्याग किया। यदि ऐसा अहं भाव आ गया तो मानना पड़ेगा कि एक भूत को घर से निकाला तो उसके स्थान पर दूसरा भूत आ गया।

एक रूपक सामने प्रस्तुत करते हुए इस बात की और भी सरल रूप से समझाने का प्रयत्न करता हूँ। एक आदमी एक खाली पीपे में असली गाय का घी लेना चाहता है। इस उद्देश्य से वह दुकानदार के पास पहुँचकर असली घी देने को कहता है। दुकानदार बेजीटेबल घी नहीं रखता, हमेशा शुद्ध, असली घी रखता है और बेचता है। दुकानदार पूछता है कि घी किस बर्तन में दूँ? तब वह व्यक्ति अपना घासलेट का पीपा सामने करके कहता है कि लो इसमें दे दो।

बेचारा दुकानदार सोचता है कि यह तो घासलेट का पीपा है। इसमें थोड़ा घासलेट भी है। यदि इसमें असली घी दे दिया तो वह घासलेट के साथ मिलकर जहर बन जाएगा। वह खरीददार से कहता है कि भाई इस पीपे में घी लेना हो तो पहले इसका घासलेट खाली कर दो। वह आदमी घासलेट निकाल लेता है और फिर से पीपा

दुकानदार के सामने रख देता है। उस पीपे में से घासलेट की बदबू अभी भरी हुई थी। यह देखकर वह व्यापारी फिर कहता है- भाई! इसमें अभी घासलेट की बू भरी है। इससे घी खराब हो जाएगा। तुम्हें खाने में अच्छा स्वाद नहीं आएगा और मेरी दुकान की बदनामी होगी सो अलग। मैं हमेशा अच्छा घी बेचता हूँ, किन्तु तुम्हारे गन्दे पीपे के कारण मुझे व्यर्थ ही बदनाम होना पड़ेगा।

यदि दुकानदार इतना सब स्पष्ट कर देने के बाद भी खरीदने वाला उसी प्रकार के गन्दे पीपे में घी ले जाए तो दोष किसका? दोष तो खरीदने वाले का ही रहेगा न? क्योंकि व्यापारी ने कर्तव्य दृष्टि से सब बात यथास्थिति कह दी।

इस रूपक का अभिप्राय यह है कि शुद्ध घी लेना है, उसमें किसी प्रकार की बदबू नहीं चाहिए तो पीपे को साफ करना होगा, पहले इसकी बदबू उड़ानी पड़ेगी। यदि एक व्यक्ति सत्ता और सम्पत्ति से युक्त रहे, पाँचों इन्द्रियों के भोगों में लिप्त रहे और भोगता हुआ सोचे कि मैं मन से त्यागी रहूँगा और मन से मोक्ष हो जाएगा। तो क्या ऐसा होना संभव है? वहाँ तो ऐसा ही होगा कि घासलेट के पीपे में घी ले रहा है। अब्बल तो उसमें घी आएगा ही नहीं, क्योंकि उसमें घासलेट भरा है, मान लो कि आ भी गया तो सब रापट-रोला हो जाएगा, गुड़ गोबर हो जाएगा।

हाँ, दुर्गुणों रूपी घासलेट को निकालकर फिर त्याग का शुद्ध घी लीजिए। इतना ही नहीं, उसमें से त्याग के अभिमान की घासलेट की बदबू निकालना आवश्यक है। यदि वह सम्पत्ति और सत्ता के त्याग की बदबू भी आपके आत्मा रूपी पीपे में रह गई तो फिर 'संवर-सार' का घृत भी आपके लिए विष के ही समान रहेगा।

अतः त्याग के साथ-साथ अहंकार को भी हटा दीजिए। अहंकार को हटाए बिना बदबू मिटने वाली नहीं है। संवर और क्रिया के विषय में सोचिए और सोचकर प्रण कीजिए। प्रण किए बिना कोई भी बात चरितार्थ होने वाली नहीं है। यदि आपके मन में त्याग की सच्ची भावना

है तो उसे मूर्त रूप दीजिए, प्रण कीजिए और उसका निर्वाह कीजिए। ऐसा प्रण सबके सामने कीजिए, उसमें कोई बुराई नहीं है। यदि आपके मन में अहंकार नहीं है तो उससे दूसरों का हित ही होगा, दूसरों को उससे प्रेरणा मिलेगी। किन्तु आप ऐसा कोई त्याग कर नहीं रहे हैं। सबके सामने ऐसा कोई प्रण ले नहीं रहे हैं। इसका क्या कारण है? कारण है- आपके हृदय की कमजोरी।

आखिर आप प्रतिज्ञा क्यों नहीं ले रहे हैं? इसीलिए नहीं कि आप सोचते हैं कि यदि मैंने प्रतिज्ञा ले ली और वह भंग हो गई तो क्या होगा? इसका अर्थ यही है कि आपके मन में कमजोरी है। आपके संकल्प में दृढ़ता नहीं है और दूसरे अर्थ में आप के मन में त्याग की वास्तविक भावना है ही नहीं। यदि त्याग की सच्ची और पक्की भावना हो तो फिर प्रतिज्ञा करने में कोई हिचकिचाहट होनी ही नहीं चाहिए। आप प्रत्याख्यान नहीं ले रहे हैं, बाहर प्रण नहीं ले रहे हैं तो आप में मानसिक कमजोरी व्याप्त हो रही है। जितनी मात्रा में यह कमजोरी है, उतनी मात्रा में यह कहा जा सकता है कि आप में से घासलेट की बदबू आ रही है। अभी आपका मन रूपी पात्र पूर्ण स्वच्छ नहीं हुआ है। यदि पूर्ण स्वच्छता होती तो आप सबके सामने त्याग करने की प्रतिज्ञा लेते।

व्यावहारिक क्रिया का एक उदाहरण आपको देता हूँ। अभी कुछ दिन पूर्व राजस्थान के मुख्यमंत्री सुखाड़ियाजी ने मुख्यमंत्री पद से त्यागपत्र दिया था। यदि वे केवल मन से ही सोच लेते कि मेरे मन में त्यागपत्र देने की भावना है, अब इसे जाहिर करने से क्या फायदा? यदि वे अपने इस दृढ़ संकल्प को अपने मन तक ही रखते और सोचते कि मैंने त्यागपत्र दे दिया, तो क्या इतना सोच लेना पर्याप्त होता? क्या उनका त्यागपत्र वैधानिक माना जा सकता था?

नहीं! जनता कहती कि आप त्यागपत्र देना चाहते हैं तो लिखित रूप में क्यों नहीं देते? यदि लिखित रूप में नहीं देते तो इसका अर्थ है कि आपके मन में अभी भी मुख्यमंत्री पद की लालसा बनी हुई है। अब चाहे वे

## श्रमणोपासक

कितनी भी शपथ खाकर यह कहते कि मैं त्यागपत्र देना चाहता हूँ तो कोई इस बात को स्वीकार नहीं करता। वह बात तो सत्य और स्वीकार्य तभी हुई जब उन्होंने वैधानिक रूप में लिखित त्यागपत्र प्रस्तुत किया।

इस पूरी प्रक्रिया को आप समझें। मन की बात को उन्होंने वाणी से उच्चारण किया और फिर उसकी क्रियान्विति के रूप में लिखित त्यागपत्र दिया, तभी वह त्यागपत्र स्वीकृत हुआ।

अतः इसे दूसरे रूप में इस प्रकार कहा जा सकता है कि मन का कितना भी दृढ़ संकल्प हो, किन्तु विधिवत् प्रक्रिया जब तक नहीं होती है, तब तक वहाँ जीवन की स्थिति में त्याग नहीं होता है। इसी बात को एक अन्य उदाहरण देकर भी आपके सामने स्पष्ट करने का प्रयत्न करता हूँ, ताकि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात आप लोगों को पूरी तरह से समझ में आ जाए।

देश में चुनाव होते हैं। राज्यों में विधानसभाएँ बन जाती हैं और केन्द्र में संसद का निर्माण हो जाता है। राज्यसभा तथा लोकसभा, ये दो सदन होते हैं। अब इन विधानसभाओं तथा संसद के प्रतिनिधि मिलकर राष्ट्रपति का चुनाव करते हैं तो राष्ट्रपति का चुनाव पूर्ण जनतान्त्रिक प्रणाली से हो जाता है। राष्ट्रपति जो चुने गए, उनका भी पूर्ण एवं शुद्ध संकल्प है कि मैं इस पद पर रहकर देश की सेवा करूँ। किन्तु इतने मात्र से वे राष्ट्रपति नहीं मान लिए जाते और उनके चुनाव की प्रक्रिया पूर्ण नहीं मान ली जाती। यद्यपि वे चुनकर इस पद पर आए हैं, फिर भी पूर्णरूप से राष्ट्रपति पद का अधिकार और भार सम्हालने से पूर्व उन्हें सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश द्वारा उस पद के कर्तव्य को निर्वाह करने हेतु शपथ दिलाई जाती है। जब यह शपथ सबके सामने ली जाती है तभी वे अन्तिम रूप से राष्ट्रपति माने जाते हैं और सारी प्रक्रिया तभी पूर्ण मानी जाती है।

बन्धुओ! जब अन्य व्यावहारिक क्षेत्रों में ऐसी स्थिति है, तब धार्मिक क्षेत्र में भी आप उस प्रक्रिया का पालन क्यों नहीं करते और ऐसा क्यों कहते हैं कि जो हो

गया सो गया, हमको त्याग करने की आवश्यकता नहीं है या हमें प्रतिज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं है।

आज का संसार बहुत अशान्त है। मनुष्य को एक पल भी चैन और शान्ति नसीब नहीं होती है। वह शान्ति के लिए इधर-उधर भटक तो रहा है, लेकिन यह जानता ही नहीं कि शान्ति किस प्रकार मिल सकती है? मैं आपसे बार-बार कहता हूँ कि यह शान्ति त्याग के बिना कभी मिलने वाली नहीं है।

एक बन्दर कूदता-फाँदता एक हवेली की छत पर जा पहुँचा। वहाँ एक कुन्जा पड़ा हुआ था। कुन्जे का मुँह सँकड़ा था और पेट विशाल था। उसमें चने भरे हुए थे। बन्दर को चने खाने का चाव होता ही है, सो उसका लालच जागा और उसने उस कुन्जे में अपना हाथ डाल दिया और मुट्ठी में चने भर लिये। मुट्ठी भर जाने के कारण वह बंधी हुई मुट्ठी कुन्जे के सँकड़े मुँह में से बाहर नहीं आ सकती है।

वह बन्दर बेचैन हो गया। न तो वह लालची चने छोड़ सकता था और न चने से भरा हुआ हाथ कुन्जे से बाहर आ सकता था। वह चिल्लाने लगा। किन्तु चिल्लाने से क्या होने वाला था? वह अपने तरीके से कहता था कि कुन्जे ने उसे पकड़ लिया है।

आप उस बन्दर की मूर्खता पर अवश्य हँसेंगे। किन्तु यदि मैं आपको बताऊँ कि बहुत कुछ उस बन्दर जैसी स्थिति ही आजकल बहुत से मनुष्यों की भी है तो आपको आश्चर्य हो सकता है, लेकिन यह बात सत्य है। जिस प्रकार बंदर का यह कहना मूर्खता है कि कुन्जे ने मेरी मुट्ठी को पकड़ लिया है, उसी प्रकार मनुष्य का यह कहना कि संसार ने मुझे बाँध रखा है, निरा पागलपन ही है। बन्दर कहता है कि मैं चने तो नहीं छोड़ूँगा। तो फिर चने नहीं छोड़ने हैं तो मुट्ठी भी कुन्जे से मुक्त होने वाली नहीं है। इसी प्रकार हम कहते हैं कि भाई! शान्ति चाहते हो तो त्याग करो। बिना त्याग किये शान्ति नहीं मिल सकती है। तब आप कहते कि महाराज! यह तो हमारे वश का नहीं। हम अपने परिवार, सम्पत्ति, सत्ता आदि

## श्रमणोपासक

को तो नहीं छोड़ सकते। यदि आप इन्हें नहीं छोड़ सकते तो उस बन्दर के समान जकड़े रहिए और कुन्जे को दोष देते हुए शान्ति-शान्ति चिल्लाते रहिए, लेकिन आपको शान्ति तो नहीं मिल सकती।

अतः बन्धुओ! त्याग-संवर से रहित जो खाने का योग है वह भी दुःखदायी होता है। इसलिए त्याग के महत्त्व को समझिए और स्वयं कर्ता बनकर त्याग की ओर बढ़िए। यदि आप ऐसा करेंगे तो सारी विषमताएँ मिट जाएंगी और आपको शान्ति का सोपान प्राप्त होगा। अन्यथा त्याग के अभाव में तो जीवन में अशान्ति ही अशान्ति है।

एक भाई ने सूचना दी है कि सरकार शीघ्र ही एक ऐसा कानून ला रही है जिससे यदि किसी व्यक्ति के पास उसकी आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति अथवा भूमि है तो उसे सरकार बिना कोई मुआवजा दिए राष्ट्र के हित में अपने कब्जे में कर लेगी। यदि ऐसा कानून आ जाता है तो अन्य व्यक्तियों की भी ठीक वही स्थिति हो जाएगी जैसी राजाओं या जागीरदारों की हुई है। अब ऐसी परिस्थिति में यदि जबरदस्ती यह त्याग करना पड़ा तो फिर क्या वह त्याग कहलाएगा? नहीं। वह तो देना ही पड़ेगा, छोड़ना ही पड़ेगा, त्यागना ही पड़ेगा। अतः हमें दीर्घदृष्टि से सोच-विचारकर चलना चाहिए और त्याग करने, शान्ति और सन्तोष को प्राप्त करने का सुअवसर हाथ से नहीं निकलने देना चाहिए।

आज मनुष्य त्याग के स्थान पर ग्रहण करने एवं संचय करने की वृत्ति लिए हुए चारों ओर हाय-हाय करता फिर रहा है। सम्पत्ति और सत्ता के झूले में वह दीवाना बनकर झूल रहा है। वह संवर के सार के तरीके को न अपनाकर भोग-विलास में डूबा हुआ है। वह यह विचार एक क्षण के लिए भी नहीं करता कि ये संसार के प्रपंच, ये हाट-हवेली इत्यादि सब यहीं रह जाने वाले हैं। आत्मा के साथ जाने वाले सन्तोष और शान्ति की ओर से उसकी आँखें बन्द हैं।

आचार्यश्रीजी दिल्ली पधारे। एक दिन प्रातःकाल वे दैनिक कार्यों से निपटने के लिए लाल किले की ओर जा

रहे थे। लाल किला भारत के इतिहास में प्रसिद्ध है। इसके तीन कोट हैं और चारों ओर विशाल खाइयाँ हैं। आचार्यश्रीजी सोच रहे थे कि इस लाल किले को बनवाने वाले महाप्रतापी, महासमर्थ सत्ताधीश सोचते थे कि यह किला अजेय है। इसकी सीमाओं में कभी कोई शत्रु प्रवेश कर ही नहीं सकता। इस विशाल और अजेय किले में उनकी सन्तानें सुखपूर्वक चिरकाल तक निवास करेंगी और उन्हीं के समान शासन करती रहेंगी।

किन्तु बन्धुओ! आप जानते हैं कि वे लाल किले को बनवाने वाले शहंशाह भी चले गए और उनकी औलादों का भी पता नहीं कि वे किस झौपड़ी या छप्पर में आज निवास कर रहे हैं। अनेक लोग उस किले में प्रविष्ट हो चुके और अनेक शत्रुओं ने उस किले का भेदन अनेक बार कर दिया।

अतः विचार करने की बात यही है कि कोई भी व्यक्ति अथवा उसकी सन्तानें स्थायी रूप से किसी भी एक स्थान पर कभी रहने वाली नहीं है। ऐसा न कभी हुआ है और न होगा। जब यह स्थिति है और सूर्य के प्रकाश की भाँति उजागर है तब मनुष्य को चाहिए कि वह सत्य को पहचाने, उसे स्वीकार करे तथा अपनी आत्मा के कल्याण के लिए भोग-मार्ग का त्याग करके सुख प्रदान करने वाले त्याग-मार्ग पर आगे बढ़े।

मनुष्य की तो मानो मति ही फिर गई है। वह तो उल्टे मार्ग पर बेतहाशा दौड़ा चला जा रहा है। समाज की सारी व्यवस्था ही उल्टी हो गई है। सारा वातावरण ही विषाक्त हो गया है। शिक्षा का बहुत ढिंढोरा आज पीटा जा रहा है। घोषणाएँ होती हैं कि देश में किसी को अशिक्षित नहीं रहने दिया जाएगा। रोज नए-नए स्कूल और कॉलेज खोले जाते हैं किन्तु मैं कहता हूँ कि जब हमने अपना लक्ष्य ही गलत निर्धारित किया हुआ है, तब इन सारे प्रयत्नों का परिणाम उल्टा नहीं मिलेगा तो क्या होगा?

मैं शिक्षा का विरोधी नहीं हूँ। भला कोई भी व्यक्ति शिक्षा का विरोध कैसे कर सकता है? लेकिन यह तो देखना ही पड़ेगा कि शिक्षा जो दी जा रही है वह मनुष्य,

## श्रमणोपासक

समाज, मानवता के हित में है अथवा अहित में? आज स्कूलों और कॉलेजों का वातावरण कैसा है? वहाँ क्या शिक्षा दी जा रही है? वहाँ से पढ़कर, शिक्षित होकर निकलने वाले छात्र-छात्राएँ क्या योग्यता लेकर बाहर आ रहे हैं? जिस प्रकार की योग्यता लेकर वे हमारे समाज में आ रहे हैं, उसका एक उदाहरण देखिए-

एक महिला कॉलेज से शिक्षित होकर निकली। वहाँ उसने नृत्य करना सीखा। बाहर आकर अब उसे नृत्य करने और जीवन का आनन्द लेने की कामना जागी। ऐसा करने के लिए उसे पैसे की आवश्यकता थी। ईमानदारी का पैसा कमाना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए दिन-रात, सुबह-शाम ऐड़ी-चोटी का पसीना बहाना पड़ता है। किन्तु उस महिला को, जो कि आजकल की शिक्षा पद्धति से शिक्षित होकर आई थी; न मेहनत करती थी और न ईमानदारी की कोई चिन्ता थी। उसे तो केवल पैसा चाहिए था।

अतः उसने अपनी नृत्यकला के सहारे सिनेमा आदि में जाकर पैसा कमाने की आधुनिक विद्या सीख ली। यह नई विद्या सीखकर उसने स्वयं को बड़े ठाठ-बाठ से सजाया, सुन्दर वस्त्र पहने और अप-टू-डेट मैम साहब बनकर एक अस्पताल में पहुँची।

अस्पताल में वह डॉक्टर से मिलना चाहती थी। वहाँ मरीजों की भीड़ थी तो चपरासी ने कहा- मैम साहब, लाइन में अपने नम्बर से आइये। मैम साहब ने अपने पर्स से पाँच रुपये का नोट निकाला और चपरासी की मुट्ठी में थमा दिया। बस नई विद्या ने काम दिखाया। चपरासी ने तुरन्त उसे अन्दर भेज दिया।

अब देवीजी डॉक्टर के पास पहुँची। डॉक्टर ने उनकी शान-बान और सजावट देखकर सोचा कि ये किसी बड़े घर की महिला है। वह अन्य सब मरीजों को हटाकर उसकी सेवा में हाजिर हो गया। पूछा-“कहिए श्रीमतीजी! मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।”

देवीजी ने कहा- “डॉक्टर साहब! मैं बहुत आवश्यक कार्य से आपके पास आई हूँ। मेरे पति का इलाज करना है। आपकी बड़ी प्रशंसा सुनकर आपके पास आई हूँ। अब आपका ही सहारा है।”

अपनी प्रशंसा सुनकर और देवीजी के रूप-यौवन तथा ठाठ-बाठ से प्रभावित होकर बड़े डॉक्टर साहब एकदम विचलित हो गए और बोले- “कहिए! मुझे क्या करना है? आपके पति को क्या हो गया है?”

देवीजी ने चुपचाप पचास रुपये का नोट डॉक्टर के हाथ में थमा दिया, जिसे डॉक्टर ने उसी प्रकार चुपचाप अपनी जेब के हवाले कर दिया। महिला बोली- “मेरे पतिदेव को एक मर्ज हो गया है कि उन्हें समय-समय पर पागलपन सवार हो जाता है और वे मुझसे कहते हैं कि लाओ रुपये, लाओ रुपये। अब डॉक्टर साहब आप बताइये कि मैं कहाँ से लाऊँ इतने रुपये? मैं बड़ी दुःखी हो रही हूँ। कृपया मेरे पतिदेव का इलाज कर दीजिए। ये पचास रुपये जो मैंने आपको दिये इन्हें तो आप भूल जाइये। आपकी फीस मैं इलाज के बाद पूरी दे दूँगी, आप चिन्ता न करें, मेरे पति का इलाज आप अवश्य कर दीजिए।”

डॉक्टर साहब मान गए। देवीजी ने कहा- “डॉक्टर साहब। जब मैं अपने पतिदेव को यहाँ लेकर आऊँ तब मुझे कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। आप एक बात का और भी ध्यान रखें कि मेरे पतिदेव को तो पागलपन सवार होता रहता है। वे तो आपके पास आकर भी यही रट लगाएंगे कि लाओ रुपये, लाओ रुपये। तो आप उनका इलाज करके, उन्हें पचास रुपये दे दीजिएगा ताकि उनका रोग अधिक न बढ़े।

ऐसा कहकर देवीजी ने एक और पचास का नोट डॉक्टर साहब को दे दिया। डॉक्टर ने कहा- “मैं समझ गया। आप कोई चिन्ता न करें। मैं आपके पति का इलाज कर दूँगा। ऐसा कहकर उन्होंने अपने चपरासी से कहा- “देखो, ये देवीजी अपने पति को लेकर आएंगी। उनके



साथ कोई रोक-टोक मत करना।”

इतनी व्यवस्था करके वह महिला सीधी अपने घर गई और एक बढिया-सा तांगा किराए पर लेकर बाजार में उस स्थान पर गई जहां पर बड़े-बड़े जौहरियों की दुकानें थी। हाथ में शानदार पर्स लटकाए, सजी-धजी वह एक बड़े जौहरी की दुकान में गई। दुकान के मालिक ने समझा किसी बड़े रईस घराने की कोई महिला जवाहरात खरीदने आई है सो उसने बड़े आदर से उसका स्वागत किया और अनेक प्रकार के मूल्यवान आभूषण उसे दिखाने लगा। देवीजी ने उनमें से बहुत से अच्छे-अच्छे अपनी पसन्द के आभूषण ले लिए। वे कुल पचास हजार रुपयों के हुए। देवीजी ने जौहरी से कहा- ‘यह आभूषण मैं खरीद रही हूँ। आप अपने मुनीमजी को मेरे साथ भेज दीजिए। मेरे पति अस्पताल में बड़े डॉक्टर हैं। वहां से मुनीमजी रुपये ले आएंगे।’

जौहरी ने मुनीमजी को आदेश दिया और मुनीमजी महिला के साथ वे आभूषण लेकर चल

पड़े। महिला ने आभूषण बैग में रख लिए। वे लोग सीधे अस्पताल पहुंचे। वहां पहुंचकर देवीजी सीधी डॉक्टर के पास पहुंची और बोली- डॉक्टर साहब! मैं अपने पति को ले आई हूँ। कृपया उनकी जांच कर लीजिए। डॉक्टर ने पूछा- ‘वे कहाँ है?’ महिला ने कहा- ‘बाहर खड़े हैं।’

डॉक्टर ने चपरासी को भेजकर मुनीमजी को भीतर बुलाया। महिला भीतर चली गयी। मुनीमजी ने सोचा कि देवीजी अपने डॉक्टर पति से मुझे रुपये देने के लिए कह दिया होगा। वे भीतर चले गए।

अब तमाशा आरम्भ हुआ। मुनीमजी के आते ही डॉक्टर साहब ने अपने औजार संभाले। एक यन्त्र वे मुनीमजी के मस्तिष्क पर फिट करने लगे। मुनीम बेचारा घबराया और बोला- ‘अरे-अरे डॉक्टर साहब, यह क्या कर रहे हो? लाओ रुपये दो जल्दी से, मैं लेट हो रहा हूँ।’

डॉक्टर ने सोचा कि इसे पागलपन का दौरा पड़ गया है। तो वह जल्दी-जल्दी उसकी जांच करने का प्रयत्न

करने लगा। उधर मुनीम बेचारा चिल्लाने लगा- ‘लाओ रुपये, लाओ रुपये। डॉक्टर मुनीमजी का निरीक्षण करना चाहता था, लेकिन मुनीमजी बोले- ‘डॉक्टर साहब! मुझे पचास हजार रुपये दीजिए और यह बकवास बन्द कीजिए। यह सुनकर डॉक्टर उसे पचास रुपये देने लगा, तो मुनीम ने कहा- ‘पचास रुपयों से क्या होगा? आपकी पत्नी ने पचास हजार रुपयों के आभूषण मेरी दुकान से खरीदे हैं। भरोसा न हो तो पूछ लीजिये उनसे.....।’

ये बात सुनकर डॉक्टर साहब का माथा ठनका। उन्होंने मुनीमजी से पूछा- ‘क्या बात है जी? आपको तो पागलपन का दौरा आता है। आपकी पत्नी ऐसा कह रह थी।’ मुनीमजी ने कहा- कौनसी पत्नी? मैं तो फलां दुकान का मुनीम हूँ। आपकी पत्नी ने अभी पचास हजार रुपये के जेवर खरीदे हैं, मुझे रुपये दीजिए।’ डॉक्टर ने कहा- कौनसी पत्नी? कैसे रुपये? वह औरत तो कहती है कि आप उसके पति हैं और आपको पागलपन का दौरा आता है।’

कैसा पागलपन? अरे डॉक्टर साहब! मालूम पड़ता है कि वह औरत हम दोनों को पागल बनाकर चकमा दे गई। दौड़ो दौड़ो, पकड़ो उसे। पुलिस में रिपोर्ट करो। अरे हम तो लुट गये।’

सत्य ही वह जौहरी लुट चुका था और डॉक्टर बेवकूफ बन चुका था तथा चिड़िया उड़ गई थी।

तो बन्धुओ! आप देखिए इन विषयों को ग्रहण करने वाली और आधुनिक शिक्षा को प्राप्त करने वाली हमारी बहनें ही चारित्रिक पतन के किस गर्त में पड़ जाती हैं।

यदि इस पतन के प्रवाह को रोकना है तो हमारे जीवन में त्यागपूर्वक संवर आना चाहिए। संवर की स्थिति से चलने से जीवन में समानता आती है। शांति सोपान को प्राप्त करने का यही एक मात्र मार्ग है।

साभार- नानेशवाणी-22 (शांति के सोपान)



## मैं भी बन जाऊं महावीर

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

**आ**ज के दिन प्रभु महावीर का निर्वाण हुआ। आज से वीर संवत चालू हो जाता है। विक्रम कार्तिकी वर्ष का प्रारंभ भी आज से माना गया है। नयी रचना, नयी सृष्टि, नया सारा कार्य चालू हो जाता है। तीर्थकर नहीं रहे। आर्य सुधर्मास्वामी को गणाधिपति पद पर प्रतिष्ठित किया गया। वीर वंश आदि पट्टावलियों में कुछ ऐसा भी संकेत मिलता है कि प्रारंभ में ही तीर्थकर देव ने सुधर्मास्वामी को गणाधिप पद पर प्रतिष्ठित किया था, किंतु स्पष्टता नहीं होने से यह बात भली-भांति स्पष्ट है, निर्विवादित है कि भगवान महावीर ने निर्वाण के पूर्व आर्य सुधर्मास्वामी को गणाधिप पद पर प्रतिष्ठित किया, जिससे श्रुत की परंपरा अविच्छिन्न रूप से चलती रहे। ज्ञान का प्रवाह प्रवाहित होता रहे।

आचार्य सुधर्मास्वामी ने अपने समय में उस ज्ञान को प्रवाहित किया। हम आगमों में देखते हैं कि आर्य जंबू स्वामी ने आचार्य सुधर्मास्वामी से वाचनाएं लीं। विनम्र भावों से वाचनाएं लीं। ज्ञान की प्राप्ति के लिए हमारे भीतर कुछ योग्यताएं भी होनी चाहिए। यदि हमारे भीतर योग्यता नहीं होगी तो ज्ञान मिल जाने पर भी हम उसका सही रूप में परिणमन नहीं कर पाएंगे। परिणमन व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर है। हमारी जठराग्नि जैसी होगी, हमारी विचारधारा जैसी होगी हम उसी प्रकार से उसका परिणमन कर पाएंगे। इसलिए शास्त्रकार प्रारंभ में मंगल करते हैं, मध्य में मंगल करते हैं और अंत में मंगल करते हैं। तीन बार मंगल किया जाता है।

पहले मंगल का उद्देश्य है कि शिष्य की बुद्धि में, शिष्य की मति में ज्ञान मंगल रूप में अवस्थित हो। मध्य मंगल का उद्देश्य है कि यह ज्ञान आगे भी दिया जा सके और तीसरा, अविच्छिन्न रूप से परंपरा चलती रहे। ये मंगल, अमंगल और विघ्न बाधाओं को दूर करने में समर्थ होते हैं। मंगल दो प्रकार के कहे गए हैं - एक द्रव्य मंगल और दूसरा भाव मंगल। द्रव्य मंगल कुमकुम-मौली को कहा गया है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप को भाव मंगल के रूप में स्वीकार किया गया है। भाव मंगल के आधार पर हमारे सारे अमंगल दूर हो जाते हैं। हमें विचार करना है, चिंतन करना है।

भगवान महावीर ने बिना पूछे, बिना मांग किए अपुट्ट-वागरणा प्रस्तुत की। उत्तराध्ययन सूत्र भगवान की अपुट्ट-वागरणा है, ऐसा माना जाता है। यह ऐसा ग्रंथ है, ऐसा पाठ है जिसमें हमें समग्र चीजें प्राप्त हो सकती हैं। द्रव्यानुयोग ज्ञान इसमें मिलेगा। गणितानुयोग इसमें मिलेगा। धर्म-कथानुयोग इसमें मिलेगा और चरण-करणानुयोग इसमें मिलेगा। आगमों को चार भागों में विभक्त किया गया। चारों अंश, चारों भाग उत्तराध्ययन सूत्र में हमें प्राप्त होते हैं। यह एक ही ग्रंथ अपने आपमें समग्र है। एक का भी अच्छी तरह से अध्ययन कर लिया जाए तो सर्वांग अध्ययन हो सकता है। ये केवल मेरे कथन की बात नहीं है। सारे आगमों में जो बिखरा सामान है, उसके सारे बीज उत्तराध्ययन सूत्र में हमें मिल जाएंगे या यों कहा जाए कि सारे आगमों के बीज उत्तराध्ययन सूत्र में रहे हुए हैं। इसके माध्यम से हम बहुत अच्छी तैयारी कर सकते हैं। वर्ष में एक बार पूरे उत्तराध्ययन सूत्र का अध्ययन करने का प्रयत्न हमें करना चाहिए। यदि मूल पढ़ने में असुविधा है तो खाली अर्थ-अर्थ, विवेचन-विवेचन का भी अध्ययन कर लिया जाये और अच्छी तरह से उस पर विचार किया जाये तो कोई कारण नहीं है कि जीवन में बदलाव नहीं आये।

बदलाव लाने के लिए हमें तैयार रहना पड़ेगा। ये नया वर्ष, वीर निर्वाण वर्ष, विक्रम संवत वर्ष चालू हो रहा

है। वैसे तो भारत में बहुत सारे नए वर्ष चालू होते हैं, किंतु भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् वीर निर्वाण संवत् एक ही चालू होता है। इसके संदर्भ में मुझे ज्यादा कहने की आवश्यकता नहीं है। हमें प्रेरणा अवश्य लेनी है कि ये नया वर्ष हमारे जीवन में किस प्रकार से परिणत हो? नये वर्ष से हम क्या नई उमंगें ले सकते हैं? नए वर्ष में हम अपने भीतर क्या कुछ नयापन अर्जित कर सकते हैं? क्रोध, मान, माया, लोभ तो हम अनादिकाल से अर्जित करते आ रहे हैं। इनका संचय हम करते आ रहे हैं। यदि इन्हीं का संचय किया तो कुछ नया नहीं होगा। नया यदि कुछ करना है तो ज्ञान को बढ़ाए, दर्शन को बढ़ाए, चारित्र को बढ़ाए – अपने भीतर क्षमा, मृदुता, सहजता, सरलता को विकसित कीजिए। आगम की भाषा में बात करें तो एक क्षमा का गुण जीवन में आने से व्यक्ति कभी अप्रसन्न नहीं हो सकता। उसके जीवन में तनाव नहीं आ सकता। प्रसन्नता उसके जीवन में बरकरार रहेगी।

हम नए वर्ष में नयी उमंगों के साथ, नए उल्लास के साथ अपने जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ाने का लक्ष्य बनावें। सारी नकारात्मक सोच समाप्त हो जाए। किसी भी पहलू को सकारात्मक रूप से सोचें। जब सकारात्मक सोच जागृत हो जाएगी तो भीतर प्रसन्नता का प्रवाह स्वतः प्रारंभ हो जाएगा। ऐसी प्रसन्नता के प्रवाह को हम नये वर्ष में प्राप्त करेंगे। ऐसा लक्ष्य रखें कि पूरे वर्ष तक चाहे मेरे सामने कैसी भी परिस्थितियां आ जाएं, मैं अपने आप में दुःखी नहीं होऊंगा। मैं अपने आपको परेशान नहीं समझूंगा। चाहे कैसी भी स्थिति रहेगी, मैं अपने हाल में मस्त रहने का प्रयत्न करूंगा। ऐसा यदि हम विचार करते हैं, ऐसा यदि हम संकल्प करते हैं, अच्छाइयों को स्वीकार करने की दिशा में हमारी तत्परता रहेगी तो निश्चित रूप से हम नयी उमंग के साथ इस वर्ष को जी पाएंगे और अपने आपको धन्य बना पाएंगे।

नया वर्ष भी है तो हमें कोई-न-कोई शुभ संकल्प ग्रहण करना है, छोटा हो चाहे बड़ा। यहां पर प्रत्येक नियम अपना महत्त्व रखता है। कोई नियम छोटा नहीं है। मौके पर एक सूई भी बहुत काम करने वाली होती है। मौके पर एक आलपिन भी आपकी गति को रोक सकती है। आप मेटल डिटेक्टर से घुसना चाहते हैं तो एक आलपिन आपको रोक देगी। हमारे यहां पर नियम कोई छोटा नहीं है, कोई बड़ा नहीं है। फिर भी कोई छोटे-बड़े के भेद करते हैं तो कैसा भी हो, आज एक नियम अवश्यमेव एक वर्ष के लिए लेंगे, अपनी रुचि के अनुसार।

विवाह-शादी की निमंत्रण पत्रिका में लिखा होता है कि स्वरुचि भोजन की व्यवस्था है। लिखा हुआ रहता है ना? तो हमारे यहां पर भी स्वरुचि पचकखाण है। अपनी रुचि के अनुसार पचकखाण करेंगे किंतु एक पचकखाण अवश्यमेव करेंगे। एक पचकखाण अवश्य लेंगे और पूरे सालभर के लिए। न कोई कारण, न कोई बहाना कि यह हो गया, वो हो गया। ऐसा हो गया, वैसा हो गया। कुछ भी नहीं। अभी से, जब से पचकखाण ग्रहण करेंगे तब से लेकर यदि आयुष्य कर्म प्रबल रहा और आने वाले समय में वापस आपने दर्शन किए तो इसी दिन तक बराबर चलेगा। ऐसी दृढ़ता के साथ नए वर्ष में अवश्य अपने आपको धन्य बना पाएंगे।

अपनी रुचि अनुसार पचकखाण ग्रहण करें। एक साल के लिए पचकखाण की लिस्ट दी जा रही है-

1. एक साल तक उत्तराध्ययन सूत्र अर्थ सहित पढ़ेंगे। 1 से 36 अध्ययन तक।
2. केवल हिंदी अर्थ उत्तराध्ययन सूत्र का एक वर्ष में पूरा पढ़ेंगे।
3. एक साल तक रोजाना एक दिन में 21 आइटम से ज्यादा नहीं खाना। दवाई की छूट है।
4. सालभर तक बाजार की मिठाई का त्याग।
5. पूड़ी-मिठाई का त्याग। घर की और बाजार की भी नहीं खावें।
6. सालभर तक प्रतिदिन एक विगय का त्याग। पांच विगय में से एक विगय का त्याग- दूध, दही, घी, तेल और मिठाई। उसमें से एक दिन में एक चीज नहीं खाना। (1) दूध नहीं पीना, (2) दही नहीं खाना, (3)

घी नहीं खाना, (4) तेल नहीं खाना, (5) मिठाई नहीं खाना यानी प्रतिदिन एक विगय का त्याग करना।

7. एक साल तक बाजार की नमकीन का त्याग करना।
8. एक साल तक भोजन के समय मोबाइल का त्याग करना।
9. रोजाना एक घंटा मौन रहना या रोजाना भोजन करते समय मौन रहना।
10. एक साल तक घर में रहते हुए कच्चा पानी नहीं पीना।
11. एक साल तक प्रतिदिन एक रोटी बिना संयोजना के यानी रोटी के साथ कुछ भी नहीं लेना। सब्जी नहीं, दूध नहीं, दही नहीं लगाना। रोटी अलग खाना, सब्जी अलग खाना, मिस्र करके नहीं खाना। उपवास हो तो अलग बात है। चाहे रोटी हो या चावल, संयोजना के लिए कुछ लेना नहीं।
12. एक साल तक महीने में चार दिन प्रतिक्रमण करना।
13. एक साल में 15 संवर करना। चाहे पौषध करो, चाहे संवर करो। साल में 15 संवर करना।
14. सालभर में 100 दिन बड़े स्नान का त्याग। पानी की किल्लत बहुत ज्यादा हो रही है, इसलिए 100 दिन बड़े स्नान का त्याग।
15. एक साल तक टी.वी. नहीं देखना।
16. एक साल तक रात्रि भोजन का त्याग।
17. एक साल तक सचित्त वस्तु या सचित्त पदार्थ खाने का त्याग।
18. एक साल तक कच्चे/सचित्त सलाद का त्याग।
19. एक साल तक होटल में भोजन नहीं करना।
20. एक साल तक, महीने में 4 दिन मोबाइल का त्याग करना।
21. एक साल तक, महीने में 2 दिन मोबाइल का त्याग करना।
22. दिन में भोजन एक बार करें या दो बार करें या तीन बार करें किंतु दिन में एक बार तो किसी की मनुहार किए बिना खाना नहीं। घर में किसी को भी मनुहार कर सकते हैं। माता-पिता, भाई-बहिन, पत्नी, पुत्र-पुत्री, किसी की भी मनुहार करना।
23. एक साल तक स्वाध्याय काल होने पर प्रतिदिन 100 गाथा का स्वाध्याय करना। कम से कम 100 गाथा का स्वाध्याय करना और 100 गाथा का स्वाध्याय नहीं कर सकते हों तो किसी भी धर्म की कोई भी पुरतक के 3 पेज पढ़ना।
24. एक साल में 100 गाथा याद करना।
25. एक साल में कम से कम एक नानेशवाणी किताब पूरी पढ़ना।
26. एक साल में जिणधम्मो को पूरा पढ़ना।

अपनी सामर्थ्यनुसार भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर एक प्रत्याख्यान वर्ष पर्यन्त या उससे अधिक अवधि हेतु अवश्य ग्रहण करें। जो प्रत्याख्यान आपने लिया है उस पर चिन्ह लगाकर आस-पास विराजित साधु-साध्वी जी से पच्चक्खाण लेवें और ऐसी अनुकूलता न होने पर स्वयं ग्रहण कर दृढ़तापूर्वक निभाएं।

## ऐसी वाणी बोलिए

ज्ञान सार

## मित वचन

15-16 सितम्बर 2022 अंक से आगे...

‘ऐसी वाणी बोलिए’ धारावाहिक प्रतिमाह आपके समक्ष आ रहा है। क्रमशः इस धारावाहिक में ‘हित वचन’ के ध्यातव्य 8 बिन्दु आप पढ़ चुके हैं। अब अगले क्रम में ‘मित वचन’ के बिन्दु संख्या 1 व 2 को समाहित किया गया है। इन्हें पढ़कर जीवन में उतारने का प्रयास करें।

## C मित वचन

★ कम बोलना अथवा कम शब्दों में बोलना

यानी जब आवश्यक हो तभी बोलना और जितना आवश्यक हो उतना ही बोलना।

★ सत्यभाषी बनने के लिए जैसे हित भाषी बनना आवश्यक है, वैसे ही मितभाषी भी बनना आवश्यक है। क्योंकि जो व्यक्ति जितना ज्यादा बोलता है, वो उतना ही कम विचार कर पाता है। बिना विचारे बोलने वाला व्यक्ति कभी भी असत्य और अहितकारी बोल सकता है, अतः व्यक्ति यदि कम से कम बोलना शुरू कर दे तो वो वाणी के द्वारा होने वाले दोषों (समस्याओं) से स्वतः ही बच सकता है। (‘‘मोहरिए सच्चवयणरस पलिमंथू’’ वाचालता सत्य वचन का विघात करती है)

(श्री स्थानांग सूत्र 6/102)

★ ‘‘सच्चं च हियं च मियं च गाहगं च’’

ऐसा सत्य वचन बोलना चाहिए, जो हित, मित और ग्राह्य हो। (प्रश्न व्याकरण सूत्र 2/2)

## आप Type X हैं या Type Y?

## Type X

जिन्हें बोलना पसंद है, कोई सुनने वाला मिलना चाहिए।

## Type Y

जिन्हें मौन रहना पसंद है।

सम्यक् देव गुरु धर्म से जुड़ने के पूर्व आप किस रूप में थे?

Type :

सम्यक् देव गुरु धर्म से जुड़ने के बाद आप किस रूप में हैं?

Type :

संसार में लोग अनेक बार जहां नहीं बोलने से भी काम चलता है, वहां भी बोलते हैं और इतना बोलते हैं कि उनसे बचने के लिए या तो उन्हें चुप करना पड़ता है या उनसे छुपना पड़ता है। यहां कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं :-

1. विकथा करना 2. बीती घटनाओं को बार-बार सुनाना 3. बीच में बोलना 4. बिना पूछे बात-बात पर सलाह देना 5. परनिंदा करना 6. स्वप्रशंसा करना 7. खुद के बारे में नेगेटिव बातें करना 8. निरर्थक प्रश्न पूछना 9. समस्या पर अतिवर्चा करना 10. छोटी-सी बात को विस्तार-पूर्वक कहना।

आत्महितैषी श्रावक-श्राविकाओं को इनका वर्जन करके, अत्यन्त आवश्यकता होने पर ही बोलना चाहिए, वरना मौन रहना चाहिए।

## 1 विकथा करना

★ विकथा यानी व्यर्थ की कथा करना। यह 4 प्रकार की कही गई है -

1. स्त्री/पुरुष कथा 2. भक्त कथा 3. राज कथा 4. देश कथा

★ भगवान ने कहा- 'समयं गोयम! मा पमायए' समय मात्र का भी प्रमाद मत करो, क्योंकि समय बहुत कम है और काम बहुत ज्यादा, किंतु दुनिया में अनेक लोग ऐसे हैं, जिनके पास समय बहुत ज्यादा है और काम बहुत कम। इसलिए ऐसे लोगों को अपना समय (टाइम) पास करके पूरा करना पड़ता है।

लोग अनेक प्रकार की व्यर्थ बातें करते हैं :- यथा -

(A) उसका ऐसा हो गया, उसका वैसा हो गया, उसके घर मेहमान आ गए, वो ऐसे थे, वैसे थे। उनके साथ वो वहां घूमने गया, पिक्चर देखी, पिक्चर ऐसी थी, हीरो-हीरोइन वैसे थे... आदि। दूसरों से संबंधित ऐसी बातें करना, जिससे हमारा कोई वास्ता ही न हो।

(B) अभी कपड़े की अमुक फैशन आई है। मैं खरीदने गई थी, इतने कपड़े लाई हूं, इतने में लाई हूं, इतना डिस्काउंट मिला। मेरे घर नया लेपटॉप आया है, वो ऐसा वैसा है, मुझे ये पसंद है वो पसंद है... मैं ये खाती हूं वो खाती हूं, मैं इतने बजे सोती हूं, इतने बजे उठती हूं... इस प्रकार की चर्चाएं घंटों करते रहना, जिसका परिणाम - '0' (Zero)



### Time Waste + Energy Waste

★ कुछ लोगों को बोलने की इतनी आदत पड़ जाती है कि यदि उन्हें अवसर मिलता जाए तो वे दिन-रात ही बोलते रहेंगे।

जैसे - फूटे हुए मटके में पानी नहीं टिकता, वैसे इनके पेट में बात नहीं टिकती। ये बातों ही बातों में इतना बोलते हैं कि वो बातें भी बोल जाते हैं, जो नहीं बोलनी होती।

★ व्यक्ति जितना अधिक बोलता है, उतना उसका मन अस्थिर (Unstable) होता है। जैन योग ग्रंथों के अनुसार 'असफलता का सबसे बड़ा कारण अस्थिरता है'।

### प्रेरक प्रसंग

पूज्य आचार्य श्री नानेश बचपन से ही बहुत कम बोलते थे। संयम लेने के बाद अपने इस गुण की वजह से उन्होंने खूब सारा अध्ययन किया और सेवा का भी कार्य किया। वे जिन संतों के पास भी सेवा में जाते, सभी उनसे खुश हो जाते। कोई कहते- 'इतना कम बोलने वाला और अधिक सहने वाला संत हमने आज तक नहीं देखा।' कोई कहते- 'ये मेरी सेवा भी दिल से करते हैं और उतने ही मन से अध्ययन भी करते हैं, यह प्रशंसनीय है।' कोई कहते- 'ये तो घंटाघर की घड़ी के समान हैं, कम बोलते हैं और समय-समय पर ही बोलते हैं, इसलिए सब इनकी बात सुनने के लिए लालायित रहते हैं। एक बार तो वैराग्य अवस्था में जब वे किसी के घर खाना खाने गए और खाकर पुनः जाने लगे तो श्रावक ने कहा- 'अभी 10 मिनट थोड़ी बातें कर लेते हैं फिर चले जाना।' तब उन्होंने जवाब दिया- 'मुझे अपने कार्य समय पर पूरे करने होते हैं, बातों में समय लगाना उचित नहीं है, आपको कुछ पूछना हो तो आचार्य भगवन् से पूछ लें।' कहकर वे लौट गए।

“किसी मूर्ख व्यक्ति की पहचान उसकी वाचालता से होती है जबकि बुद्धिमान व्यक्ति की पहचान उसके मौन से होती है।”

(पाइथागोरस)

## 2 खुद के साथ बीती दुःखद घटनाओं को बार-बार दूसरों को सुनाना

### ★ 'नातिकंङ्कितं सेयं अरुयस्सावरज्जती'

घाव को अधिक खुजलाना ठीक नहीं, क्योंकि खुजलाने से घाव अधिक फैलता है।

(सूत्रकृतांग सूत्र 1/3/3/13)

★ समय बीत जाता है, पर लोग बातों को पकड़कर बैठ जाते हैं। उन्हीं पुरानी कहानियों को वे बार-बार रिवाइज (Revise) करते हैं, अपने आस-पास के लोगों को विस्तार-पूर्वक बार-बार सुनाते हैं और अपने वर्तमान को दुःखद बनाते रहते हैं।

“कोई हमारी पीड़ा का कारण नहीं है, हमारी कथा ही हमारी व्यथा है।” (आचार्य श्री रामेश)

आइये देखते हैं कि लोग किस प्रकार पुरानी बातों को दोहराते हैं :-

- (A) किसी ने सालों पहले कुछ दुर्व्यवहार कर दिया, उसका रोना-रोना : 'मेरे को अपने पुराने दिन याद आते हैं तो इतना दुःख होता है क्या बताऊं? अमुक व्यक्ति ने मेरे साथ इतना बुरा किया, इतना बुरा किया, जितना तो कोई दुश्मन भी नहीं करता होगा। एक दिन की बात है... इस प्रकार आगे से आगे बताते जाना और रोते जाना।
- (B) इसी प्रकार अपनी बीमारी की, अपने नुकसान की, अपने हार (Failure) की कथाएं सुनाकर अफसोस करते रहना - 'काश ऐसा नहीं हुआ होता, काश वैसा हुआ होता, काश मुझे पढ़ाया होता, काश मुझे मेरी मर्जी से जीने दिया होता... काश... काश...' आदि।

- ★ सफल लोग सकारात्मक और उत्साहवर्धक बातों को याद रखते हैं, जबकि असफल लोग अधिकतम नकारात्मक और दुःखद बातों को याद रखते हैं।
- ★ हमारी दुःखद कहानियों में अक्सर लोगों को कोई रुचि नहीं होती और उसी बात को बार-बार सुनने की तो रुचि बिल्कुल नहीं होती, अतः मितभाषी को इस विषय में मौन रहना चाहिए।
- ★ यदि हम पुरानी बातों में ही उलझे रहेंगे तो जीवन में कुछ नया कैसे कर पाएंगे? अपनी अलमारी को नयी पुस्तकों से सजाने के लिए पुराने अखबार तो निकालने ही पड़ेंगे।
- ★ श्रावक इस बात को समझता है कि पूर्व में जो भी हुआ वह सब मेरे ही कर्मों का उदय था, अतः वह उन बातों की राग द्वेषात्मक चर्चा करके पुनः-पुनः वैसे कर्मों का बंध नहीं करता, बल्कि वह उन बातों को स्वीकार कर लेता है और उनसे जुड़े लोगों को माफ कर देता है।

**Note -** कुछ लोग अपना मन हलका करने के लिए अपने बच्चों को भी पुरानी घटनाएं सुना देते हैं, इससे बच्चों के मन में कुछ लोगों के प्रति द्वेष उत्पन्न हो जाता है। फिर बच्चे उनसे मनमुटाव रखने लगते हैं। इस प्रकार द्वेष की परम्परा बढ़ती जाती है। हमें बताना ही है तो **Positive** बातें **Share** करनी चाहिए और यदि कोई **Negative** बात बतानी भी हो तो उससे जुड़े लोगों का नाम बताकर उनके प्रति जहर भरने जैसी बात नहीं करनी चाहिए।

★ मन की बात कहना भी हो तो उससे कहना जो सुनने में समर्थ हो, गम्भीर हो। जो बात का बतंगड़ करता है, उसे नहीं बताना चाहिए।

-क्रमशः



## श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 सितम्बर 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

### ज्ञान का वर्णन श. 8 उ. 2

**पूर्वापर संबंध-** ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार वर्णन प्रस्तुत है।

**प्र. 2318 श्रोत्रेन्द्रिय का नाम प्रथम स्थान पर क्यों है ?**

उत्तर श्रोत्रेन्द्रिय, श्रुतज्ञान में मुख्य कारण है और पुण्यवानी अधिक होने पर ही यह इंद्रिय (पंचेन्द्रिय जाति) प्राप्त होती है। अतः पाँचों इंद्रियों में इसका नाम प्रथम स्थान पर है।

**प्र. 2319 नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष किसे कहते हैं ?**

उत्तर इंद्रियों की सहायता के बिना सिर्फ अपनी आत्मा से जानना 'नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष' ज्ञान है। जैसे- पर्वत को सिर्फ अपनी आत्मा से जानना।

**प्र. 2320 नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष के कितने भेद हैं ?**

उत्तर नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष के तीन भेद हैं- अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान।

### अवधिज्ञान

**प्र. 2321 अवधिज्ञान किसे कहते हैं ?**

उत्तर अवधि यानी मर्यादा अर्थात् आत्मा को रूपी पदार्थों का जो मर्यादित ज्ञान होता है, उसे अवधिज्ञान कहते हैं। जैसे- अवधिज्ञान से भरतक्षेत्र को जानने वाला भूतकाल और भविष्यकाल के 15 दिन जानता है यावत् असंख्यात द्वीप-समुद्रों को जानने वाला भूतकाल और भविष्यकाल के असंख्यात काल को ही जानता है। सर्वज्ञों की तरह अनंतकाल को नहीं जानता है। यह इसकी मर्यादा है। अवधि का विस्तृत वर्णन श्रीमद् नंदीसूत्र में दिया गया है।

**प्र. 2322 परम अवधिज्ञान में क्या मर्यादा है ?**

उत्तर परम अवधिज्ञानी भी रूपी पदार्थों की समस्त (त्रैकालिक) पर्यायों को नहीं जानते-देखते हैं। यही इस ज्ञान की मर्यादा है। श्रीमद् प्रज्ञापनासूत्र की वृत्ति में उल्लेख है कि परम अवधिज्ञानी अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।

**प्र. 2323 क्या सभी परम अवधिज्ञानियों का ज्ञान समान होता है ?**

उत्तर श्रीमद् प्रज्ञापनासूत्र पद 5 में इनकी पर्यायों में अनंतवाँ भाग यावत् अनंत गुणा (षट्स्थान पतित) अंतर भी बताया है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः





15-16 सितम्बर 2022 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- सरिता बेंगानी, कोलकाता

**पूर्व चित्रण-** जब नमिराजर्षि ने देवलोक के समान सुखों को त्यागकर अभिनिष्क्रमण (दीक्षा) करने का दृढ़ संकल्प किया तब पहले देवलोक के इन्द्र देवराज शक्रेन्द्र स्वयं राजर्षि की परीक्षा लेने ब्राह्मण वेश में आए कि यह त्याग क्षणिक है या वास्तविक वैराग्य है। इन्द्र ने नमिराजर्षि को स्वजनों के प्रति, अन्तःपुर के प्रति, नगर के प्रति, अपने प्रासादों के प्रति, नृपति धर्म के प्रति कुछ भी राग नहीं, उद्वण्ड राजाओं के प्रति द्वेष नहीं, संयम पालन के प्रति उनमें स्थिरता, गृहस्थाश्रम में ही धर्म साधना के संबंध में तथा हिरण्य आदि वस्तुओं की वृद्धि से संतोष प्राप्त होता है या नहीं, इस बात की परीक्षा कर ली। अब इससे आगे...

### 10. प्राप्त कामभोगों को छोड़कर अप्राप्त को पाने की इच्छा के सम्बन्ध में-

अच्छेरग-मब्भुदए, भोए चयसि पत्थिवा!!  
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि।।51।।

**भावार्थ-** हे पृथ्वीपते! यह आश्चर्य की बात है कि आप विद्यमान (प्राप्त) भोगों का परित्याग कर रहे हैं और अविद्यमान (अप्राप्त) कामभोगों की अभिलाषा कर रहे हैं। संकल्प-विकल्पों अर्थात् अप्राप्त कामभोगों को प्राप्त करने की अभिलाषा से ठगे जा रहे हो।

**देवेन्द्र द्वारा हेतु और उदाहरण-** अल्प विषयों की चाहना इस लोक में सब जीव करते हैं किंतु आप ममण सेठ तथा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की तरह अप्राप्त भोगों की अभिलाषा में फँसे हुए हैं। अप्राप्त की प्राप्ति होने से पुनः इससे भी अधिक अप्राप्त की प्राप्ति के संकल्पों की परम्परा बंद नहीं होती है। एक विवेकशील धर्मनिष्ठ का विद्यमान कामभोगों में सन्तुष्ट रहना उचित होता है। अतः हे राजर्षि आपकी प्रव्रज्या ग्रहण करने की इच्छा से अनुमान होता है कि आप में अप्राप्त भोगों को प्राप्त करने की अभिलाषा मौजूद है, यह अनुचित है। इस प्रकार इन्द्र की बात सुनकर नमिराजर्षि ने उनसे इस प्रकार कहा-

सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोवमा।  
कामे य पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं।।53।।

**भावार्थ-** शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श वाले सभी कामभोग शल्य रूप हैं जैसे शरीर के भीतर प्रविष्ट टूटे हुए बाण का अग्रभाग प्रतिक्षण पीड़ा देने वाला है। ये काम आदि विषतुल्य हैं जैसे विष जीवन का नाशक है, उसी तरह काम भी धर्मरूपी जीवन का विनाशक है। ये काम आशीविष सर्प के समान है जैसे सर्प के डसे जाने पर प्राणी मर जाता है, उसी तरह काम में फँसा हुआ जीव धर्म जीवन से मर जाता है। ऐसे कामभोगों को चाहने वाले एवं परिस्थितिवश उसका

सेवन न कर सकने वाले जीव भी दुर्गति प्राप्त करते हैं।

**अहे वयइ कोहेणं, माणेणं अहमा गई।  
माया गई-पडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं॥54॥**

**भावार्थ-** जीव क्रोध से अधो (नरक) गति में जाता है। मान से अधम (नीच) गति होती है। माया से सद्गति की प्राप्ति में रुकावट होता है और लोभ से इस लौकिक और पारलौकिक सम्बन्धी भय होता है।

**नमिराजर्षि के उत्तर का आशय-** सभी कामों के जनक राग-द्वेष हैं। राग एवं द्वेष से क्रोध, मान, माया, लोभ रूपी कषाय अवश्य उत्पन्न होंगे, जिनके कारण धन, वैभव, यौवन, उन्नति आदि इन्द्रिय तथा नोइन्द्रिय द्वारा विषयों की चाहना से जीव संसार अभिलाषी होते हैं, मोक्ष अभिलाषी नहीं। जीव दो प्रकार के होते हैं-

1. जिस व्यक्ति ने शब्द आदि विषयों की प्राप्ति कर ली हो (विद्यमान)
2. जिस व्यक्ति ने काम-विषयों की प्राप्ति नहीं की (अविद्यमान) किन्तु सिर्फ अभिलाषा की है।

दोनों ही प्रकार के जीव इस भव में दुःख एवं परभव में नरक आदि गति प्राप्त करते हैं। इससे **नमिराजर्षि का तात्पर्य यह है कि जब यह बात है तो फिर इन कर्मों के उपार्जन और उनके उपभोग करने में जीव किस दुर्गति को प्राप्त करता होगा?** अतः “मैं तो मोक्ष अभिलाषी हूँ। प्राप्त हो या अप्राप्त, मोक्ष अभिलाषी के लिए लेशमात्र भी काम अभिलाषा होना अनुचित होता है। इसलिए हे राजर्षि आपका कथन अनुचित है।

-क्रमशः ●●●

## प्रोत्साहन ही संघ का पोषण है

संस्कार सौरभ

-लता बोथरा, बल्लारी

प्रोत्साहन का सरल अर्थ है सहयोग कर प्रेरित करना। यह बात कहने में तो आसान लगती है, परंतु क्रियान्वित करने में थोड़ी कठिन लगती है, क्योंकि दूसरो को आगे बढ़ाने के लिए बढ़ावा देना हर किसी के बस की बात नहीं है। प्रोत्साहन सफलता की पहली सीढ़ी है। जैसे छोटा बच्चा बोलने, चलने, बैठने की कोशिश करता है और बार-बार प्रयास करता है, जिसमें परिवार के अन्य सदस्य उसको सहारा देकर मदद करते हैं। उसे प्रोत्साहन देते हुए तालियां बजाते हैं, उसके बराबर तुतलाते हुए उल्लसित होते हैं, जिससे वह हंसते हुए आगे बढ़ता है। परीक्षा परिणाम आने के बाद अच्छे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार आदि से सम्मानित किया जाता है, जिससे अन्यो को प्रेरणा मिलती है।

प्रोत्साहन संबंधी एक दृष्टांत स्मरण में आता है। अभयकुमार, जो श्रेणिक महाराज एवं नंदा महारानी के आत्मज थे; उन्होंने अनार्यदेश में निवास कर रहे अपने

मित्र आर्द्रकुमार को धार्मिक उपकरण भेजकर प्रोत्साहन देते हुए धर्म का मर्म बताया। श्रीकृष्ण वासुदेव ने भी धर्मदलाली (प्रोत्साहन) द्वारा अनेक भव्यात्माओं को चारित्र अंगीकार करने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार अन्य अनेक उदाहरण आगमों में वर्णित हैं।

साधुमार्गी संघ एक है और एक ही बना रहे तो सबको आगे आकर अपना योगदान देना होगा। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका, चारों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। ये चार तीर्थ मिलकर संघ को शिखर तक ले जाने में सहायक हैं। हम सभी धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाली आत्माओं को प्रोत्साहन के द्वारा सहयोग प्रदान करें। यदि बार-बार रटने पर भी हमें थोकड़ों, गाथाओं आदि का ज्ञान नहीं हो रहा है तो अन्यो को ज्ञान-ध्यान सीखने में अंतराय न डालें। हम अपना अनमोल समय संघ कार्यो में लगाएं। नाम के लिए नहीं अपितु निःस्वार्थ भाव से संघ सेवा में जुट जाएं तथा दूसरे जो संघ सेवा करते हैं, उनकी खुले दिल से प्रशंसा कर उन्हें प्रोत्साहित करें। ●●●

## समकित के 67 बोल

15-16 सितम्बर 2022 अंक से आगे...

-शकुन्तला लोढा, ब्यावर

### छठा बोल - प्रभावना आठ

जिस कार्य को करने से धर्म का प्रभाव बढ़े और उस प्रभाव को देखकर दूसरे लोग धर्म की ओर आकर्षित हों तथा शुद्ध देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न हो, वह प्रभावना कहलाती है। ऐसी प्रभावना करने वाला व्यक्ति प्रभावक कहलाता है।

**1. प्रावचनी-** जिस काल में जितने सूत्र उपलब्ध हों, उनको पढ़कर अन्य जीवों को उनका ज्ञान करावें, उनकी उन्नति करें। सम्यक्दृष्टि से शास्त्रों का ज्ञान उनका चिंतन-मनन अवश्य करना चाहिए और यथाशक्ति दूसरों को भी कराना चाहिए। ज्ञान में परिपक्व बना हुआ सम्यक्त्वी अपनी तथा अन्य की आत्मा को उन्मार्ग (गलत मार्ग) में गमन करने से रोक कर सन्मार्ग (सही मार्ग) में स्थापित करके धर्म का प्रभावक बनता है।

प्रतिबोध देने का मूल अधिकार जिनेश्वर भगवंतों, गणधरों, आचार्य भगवंतों, ज्ञानी भगवंतों को है, लेकिन सम्यक्दृष्टि, श्रावक, स्वाध्यायी, गृहस्थ भी जिनप्ररूपित धर्म का प्रचार कर सकते हैं, जिससे धर्म की उन्नति होगी, हम आस्थावान-ज्ञानवान बनेंगे और अन्य लोगों को जोड़कर उनके लिए प्रभावक बन सकेंगे।

श्री महावीर स्वामी ने मोक्ष पधारते समय कहा- “हे गौतम! पांचवें आरे में जिनेश्वर भगवंतों के दर्शन तो होंगे नहीं, किन्तु मुक्ति मार्ग के उपदेशक होंगे। उनसे मुक्ति मार्ग प्राप्त करने में भव्य जीवों को एक समय मात्र का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।”

तत्त्व ज्ञान

**2. धर्मकथी-** धर्मोपदेश के द्वारा जिनशासन की प्रभावना करें। एक सम्यक्त्वी विभिन्न प्रकार की परिषदों, सम्मेलनों में जहां जनसमूह उपस्थित हो वहां द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखकर समझ में आने योग्य भाषा में और प्रभावशाली शब्दों में जिनधर्म के महत्त्व को प्रकट करता है, जिससे श्रोताओं के हृदय में सच्चे जिनधर्म का महत्त्व अंकित हो जाता है। धर्मकथा का तात्पर्य केवल कहानी सुनाना नहीं है। धर्मकथा अर्थात् धर्म का कथन करना। कथन इस प्रकार करना कि सुनने वाले में मोक्ष की अभिलाषा जगे, संसार से उदासीनता आए, जिनशासन की प्रभावना बढ़े, वैराग्य भाव विकसित हों और धर्म की भावना बढ़े। इसके लिए स्वयं वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुपेक्षा से अपनी समझ को दृढ़ करे। शुद्ध ज्ञान को स्थिर करे। उसके बाद धर्मकथा सुनाने में चतुर होवे, जिससे सुनने वाले के अंतर्हृदय में वैराग्य के भाव बढ़े और कषाय व विकार के भाव हटे।

**3. वादी-** प्रमाण हेतु दृष्टांतपूर्वक अन्यमतियों से वाद करके जिनमत की स्थापना करे। कभी-कभी हम जिससे बात करते हैं वह जैन धर्म का अनुयायी न होकर अन्य धर्म का अनुयायी होता है। वह अपना वाद भी कर सकता है तो उसे प्रत्यक्ष या परोक्ष उदाहरण या दृष्टांत से प्रसंग आदि बताकर जिनशासन की, सत्य धर्म की बात समझाए, जिससे धर्म की प्रभावना बढ़े। वाद की प्रखर प्रतिभा द्वारा अन्यवादियों के कथन का खण्डन करते हुए स्वसिद्धांतों को तर्क व प्रमाणों के आधार से सिद्ध करने वाला वादी जैन धर्म के प्रभाव को बढ़ाता है, लेकिन इसके लिए प्रभावक को, चाहे वह अत्रती सम्यक्दृष्टि हो, अणुव्रती हो या महाव्रती हो, ज्ञानपिपासु होना चाहिए। तभी वह अवसर आने पर अन्यमतियों को ज्ञान के द्वारा सही मार्ग दिखाने में सहयोगी बन सकता है।

**कथा-** भरत क्षेत्र के भरूच नगर में जिनानंद सूरि का चातुर्मास था। वहां पर बौद्ध दर्शनी रहते थे। उन्होंने

राजा के सामने जिनानंद सूरी से वाद किया। राजा ने कहा- जो वाद में हारेगा उसे देश छोड़ना होगा। जैनमति हार गए। अतः उन्हें वह देश छोड़ना पड़ा। जैनमति वहां से चलकर वल्लभी नगर में आए। वहां बहुत चिंतित रहते थे। वहां दुर्लभ देवी नाम की बहन थी, जिनके तीन पुत्र थे। उस दुर्लभ देवी ने अपने तीनों पुत्रों के साथ जिनानंद सूरी के पास दीक्षा ग्रहण की। साध्वी ने गुरु और संघ को अपने गुणों से वश में कर लिया और पुस्तक भण्डार का अधिकार प्राप्त कर लिया। जिनानंद सूरी ने तीनों शिष्यों को सभी शास्त्र पढ़ाए, लेकिन 'नये चक्र' नाम का ग्रन्थ नहीं पढ़ाया, क्योंकि वह देवाधिष्ठ था अर्थात् जो श्रुत देवता की आराधना करता है उसी को वह ग्रन्थ पढ़ाया जाता है। इसलिए उन तीनों को नहीं पढ़ाया गया। गुरु जिनानंद सूरी ने तीनों शिष्यों में से मल्लवादी मुनि को योग्य समझकर 'नये चक्र' ग्रंथ को साध्वी के हाथ में दिया और बताया कि इसका भाग्य होगा तो स्वयं इसको पढ़ लेगा। गुरु तीनों शिष्यों को साध्वी के पास छोड़कर विहार कर गए। मल्लवादी ने सोचा कि गुरु ने यह ग्रंथ क्यों नहीं पढ़ाया। वह साध्वी से छिपाकर उस ग्रन्थ को पढ़ने लगा। उसने पहला अध्ययन पढ़ा, जो उसे समझ में आ गया और खुशी से आंखें बंद कर ली तो श्रुतदेवी उसके हाथ से पुस्तक लेकर अदृश्य हो गई। उसने आंखें खोली तो ग्रन्थ नहीं था। उसने यह बात साध्वी और श्रीसंघ को बताई और अभिग्रह किया कि जब तक वह ग्रन्थ नहीं मिलेगा, विगय ग्रहण नहीं करेंगे। मल्लवादी मुनि व श्रीसंघ ने श्रुत देवी की आराधना की। देवी प्रकट हुई और मुनि को कहने लगी कि मैं तुझ से संतुष्ट हूं। इतना कहकर वह ग्रन्थ मुनि को दे दिया और आशीर्वाद दिया कि जो भी तुझ से वाद करेगा उससे तू विजय प्राप्त करेगा। देवी अदृश्य हो गई। मुनि ने सोचा कि इस ग्रन्थ को पढ़ना मेरे लिए तभी सार्थक होगा जब मैं बौद्धमति को देश से नहीं निकाल दूं। ग्रन्थ का अध्ययन कर श्रीसंघ से आज्ञा मांगी और भरूच नगर में आकर राजा से मिला और बौद्धमति के साथ वाद करने के लिए कहा। राजा ने बौद्धानंद को

बुलाया और मुनि मल्लवादी के साथ वाद करने को कहा और वाद नहीं करने पर देश से बाहर चले जाने को कहा। 6 दिन तक दोनों का वाद चलता रहा। छठे दिन मल्लवादी ने 'पूर्व पक्ष' रखा, जिससे बौद्धानंद घबरा गया और जवाब नहीं दे सका। सभाजन उठकर चले गए। मल्लवादी हर्ष के साथ उपाश्रय में आ गया। उसके बाद राजा ने बौद्धों को देश निकाला दे दिया।

इस प्रकार अन्यमतियों से वाद करके मल्लवादी ने जिनशासन की प्रभावना की।

**4. नैमित्तिक-** भूत, भविष्य, वर्तमान को निमित्त ज्ञान द्वारा जानकर जिनशासन की उन्नति करे, जो व्यक्ति धीर-वीर-गंभीर है, ज्ञानी है, तत्त्वों का ज्ञाता है, जिसने निश्चय और व्यवहार से जिनवचनों को समझ लिया है, ऐसा व्यक्ति ही भूत, भविष्य, वर्तमान काल के निमित्त ज्ञान को जान सकेगा। वह व्यक्ति आकाशीय घटनाओं आदि को देखकर, धरती के वातावरण को देखकर ज्योतिष शास्त्र आदि के द्वारा तीन काल संबंधी बातों को जान लेता है और आने वाले रोग, दुष्काल तथा उपसर्गों से अपने को तथा अपने धर्मबंधुओं को बचाकर उस प्रतिकूल समय व प्रसंग के प्रभाव को कम कर सकता है। इसी प्रकार कालज्ञान में कुशल पंडित मृत्यु का समय निकट आया हुआ जानकर समाधिमरण द्वारा अपने तथा अन्य आत्माओं का कल्याण साध सकता है।

**5. तपस्वी-** कठिन तपस्या करने से भी धर्म की प्रभावना होती है, क्योंकि तप का आचरण करना हर किसी के लिए साधारण बात नहीं है। अन्य मतावलम्बियों की अपेक्षा जैन धर्म में तप करने का अधिक प्रचलन है। लम्बी-लम्बी दीर्घ तपश्चर्या करने वाले जैन साधकों की साधना से लोगों का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक है। सम्यक्त्वी को चाहिए कि वह अपने जीवन में तप को विशेष स्थान दे। तप की आराधना करने से जिनशासन की प्रभावना स्वतः ही हो जाती है। हमारे सामने जब दीर्घ तपस्याओं के विशिष्ट तप के प्रसंग उपस्थित होते हैं या हमें यह सूचना

## श्रमणोपासक

मिलती है कि अमुक श्रावक-श्राविका के तपश्चर्या चल रही है या प्रवचन में कोई दीर्घ तपश्चर्या के प्रत्याख्यान करते हैं तो हमारे मन में सहज रूप से भाव जगते हैं कि मैं भी ऐसी तपस्या करूं, मेरे में भी ऐसा सामर्थ्य जगे। अतः हमारे तप करने से दूसरे लोगों को प्रेरणा मिलती है, तप के प्रति रुचि जागृत होती है। यही प्रभावना है।

**6. विद्या प्रभावना-** सम्यक्त्वी अनेक प्रकार की विद्याओं का जानकार होवे। जब दीर्घ तपस्या आदि की आराधना की जाती है तब अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है और आत्मा के ज्ञानादि गुणों का क्षयोपशम बढ़ता है, जिससे अनेक विद्याएं स्वतः प्रकट हो जाती है। चौथे आरे में 14 पूर्वों का ज्ञान था तब अनेक विद्याओं का संयोग था। सम्यक्दृष्टि इन विद्याओं का प्रयोग मान-प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए नहीं अपितु धर्म की हानि होते देखकर इन विद्याओं का प्रयोग करते हैं और धर्म का उद्योत करते हैं। वर्तमान में विद्या द्वारा धर्म की प्रभावना अनेक प्रकार की भाषाओं और लिपियों का ज्ञान प्राप्त करके की जा सकती है। सर्वज्ञ भगवान की वाणी को अनेक भाषाओं और लिपियों में परिणत करके जनता के समक्ष उपस्थित करके उन भाषाओं के ज्ञाता लोगों को धर्मतत्त्व का ज्ञान कराकर धर्म की ओर उनका चित्त आकर्षित किया जा सकता है। फलस्वरूप धर्म की प्रभावना होती है।

**7. सिद्ध प्रभावना-** अंजन, पादलेप, तिलक आदि सिद्धियों को प्राप्त करने वाला सिद्ध कहा गया है। ऐसी चमत्कारिक सिद्धियों द्वारा धर्म की प्रभावना होती है। सम्यक्दृष्टि अपनी उदरपूर्ति या मान-प्रतिष्ठा के लिए सिद्धियों का प्रयोग नहीं करते, परन्तु जब कभी धर्म या तीर्थ पर संकट देखते हैं तब सिद्धियों का प्रयोग करते हैं और उसके द्वारा धर्म का उद्योग करते हैं तथा उनके प्रयोग का प्रायश्चित्त लेकर शुद्धिकरण करते हैं।

अन्यत्र व्रताचरण प्रभावना माना गया है। ममता को मारना बहुत कठिन है। ममत्व विजयी सम्यक्दृष्टि धर्म की प्रभावना के एक मात्र उद्देश्य से, न कि मान-सम्मान

की इच्छा से, महोत्सवपूर्वक बड़े जनसमूह के सामने शक्ति के अनुसार जोड़े सहित ब्रह्मचर्य व्रत को अंगीकार करे। रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग करे। सचित्त वनस्पति का त्याग करे। सचित्त पानी का त्याग करे। इस प्रकार अनेक प्रत्याख्यान युवावस्था में भी करके आसक्त जनों के हृदय में चमत्कार उत्पन्न करके धर्म की प्रभावना करे।

**कथा-** हस्तिनापुर में जैन धर्म का अनुयायी राजा महापद्म राज्य करते थे। उनका मंत्री नमुचि, जैन मुनियों का द्वेषी था। एक बार अपने विशाल परिवार के साथ सुव्रत आचार्य चातुर्मास करने के लिए हस्तिनापुर नगर में पधारे। इधर अपने वैर का बदला लेने के लिए नमुचि ने महापद्म राजा से अपना वरदान मांगा कि आप मुझे सात दिन का राजा बनाएं। दृढ़ प्रतिज्ञ महापद्म ने नमुचि की बात स्वीकार कर ली और उसे सात दिन के लिए राजा बना दिया।

नमुचि ने नगर के बाहर एक यज्ञ प्रारंभ किया। यज्ञ के अभिषेक प्रसंग पर सभी धर्म के आचार्य उपस्थित हुए, परन्तु जैन मुनि नहीं आए। द्वेषी नमुचि सुव्रताचार्य के पास आकर गुस्से में बोला- “यज्ञ के अभिषेक प्रसंग पर सभी धर्म के आचार्य आए, परंतु तुम नहीं आए। राज्य विरुद्ध चलने से तुम अपराधी हो। अतः 7 दिन के भीतर इस नगर को छोड़कर चले जाओ अन्यथा तुम्हें मार दिया जाएगा।” इतना कहकर नमुचि चला गया। आचार्य ने अपने परिवार को इकट्ठा किया और संघ-शासन पर आई हुई इस विपत्ति के निवारण के लिए विचार-विमर्श किया। उसी समय एक मुनि ने कहा- “विष्णुकुमार मुनि ने छह हजार वर्ष तक दीर्घ तप किया है। इस तप के प्रभाव से उन्हें अनेक प्रकार की लब्धियां उत्पन्न हुई हैं। वे महापद्म राजा के ज्येष्ठ भ्राता भी हैं। अतः उनके वचन से यह नमुचि अवश्य शांत हो सकता है। उन्हें यहां बुलाने के लिए किसी लब्धिधारी मुनि को मेरुपर्वत पर जाना चाहिए, क्योंकि वे अभी मेरुपर्वत पर ध्यान साधना कर रहे हैं।”

एक मुनि अपने विद्याबल से तत्काल आकाश मार्ग से उड़ते हुए मेरुपर्वत पर जा पहुंचे। विष्णुकुमार मुनि को वंदना की और आगमन का कारण बता दिया। तत्काल दोनों मुनि हस्तिनापुर आ गए। गुरुदेव के चरणों में गिरकर उन्होंने भावपूर्वक वंदना की।

विष्णुकुमार मुनि ने नमुचि राजा को समझाते हुए कहा- “जैन मुनि वर्षा ऋतु में अन्यत्र कहीं भी विहार नहीं करते हैं और वे भिक्षावृत्ति से अपना जीवन निर्वाह करते हैं।”

गुस्से में आकर नमुचि ने कहा- “बकवास मत करो, मैं तुम्हें यहाँ नहीं रहने दूंगा।” विष्णुकुमार महामुनि समता और धैर्य के साथ कहने लगे कि तुम्हारी सहमति हो तो वे नगर के बाहर रह जाएंगे। गुस्से में आकर नमुचि ने कहा- “मैं उनकी गंध भी सहन करने के लिए तैयार नहीं हूँ। जीवन प्रिय है तो नगर छोड़कर चले जाओ।”

अंत में मुनिवर ने कहा- “अच्छा, तो हमें रहने के लिए तीन कदम भूमि दे दो।” नमुचि ने कहा- “लो मैं तुम्हें तीन कदम भूमि देता हूँ, परन्तु तीन कदम से बाहर रहे तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।”

संघ और शासन पर आई हुई इस विपत्ति को देखकर, दुष्ट को दंडित करने के लिए विष्णुकुमार महामुनि ने अपनी लब्धि के बल से अपना शरीर बढ़ाना प्रारंभ किया। अपनी विशाल देह से पृथ्वी को प्रकंपित करने वाले विष्णुकुमार महामुनि ने लब्धि के बल से एक लाख योजन ऊंचा अपना शरीर बना लिया। उन्होंने अपना एक पैर जंबूद्वीप के पश्चिम समुद्र के किनारे पर और दूसरा पैर पूर्व समुद्र के किनारे पर रख दिया।

इस वृत्तांत को जानकर महापद्म राजा वहाँ पर आया और अपने अग्रज मुनिवर को भावपूर्वक वंदना करके बोला- “आप लोकोत्तर गुणों के स्वामी हो और मेरे हृदय मंदिर में विराजमान हो। यह दुष्ट पापी नमुचि मेरा सेवक है, जो हमेशा जिनशासन की आशातना, हीलना करता आया है। अतः आप मेरे इस अपराध को क्षमा करें और अपने कोप का त्याग करें। अनेक सुर-असुरों एवं चतुर्विध संघ ने विविध प्रकार की स्तुति की

और उनके कोप को शांत करने का प्रयत्न किया। संघ की प्रार्थना को स्वीकार कर विष्णुकुमार मुनि ने अपना विशाल रूप संकुचित कर लिया और मूल रूप में आ गए। दुष्ट मंत्री नमुचि को देश निकाले की सजा दी गई।

रत्नत्रयी की निर्मल आराधना, साधना के फलस्वरूप आत्मा में अनेक प्रकार की लब्धियां, सिद्धियां पैदा होती हैं। निजी स्वार्थ के लिए या मान-सम्मान व प्रतिष्ठा पाने के लिए उस लब्धि का प्रयोग किया जाए तो आत्मा के लिए अहितकर होता है। जो दृढ़ सम्यक्त्वी होते हैं वे इन लब्धियों का प्रयोग स्व-पर कल्याण के लिए करते हैं।

**8. कवित्व प्रभावना-** शास्त्र के अनुसार कविता रचकर धर्म की उन्नति करे। बत्तीस आगम श्रुतज्ञान हैं। हर व्यक्ति इतना श्रुतज्ञान पढ़ नहीं सकता। ज्ञान की, समय की अपनी सीमाएं हैं। किसी को भाषा नहीं आती, किसी के पास समय नहीं है। किसी को गूढ़ रहस्य समझ में नहीं आते। ऐसी स्थिति में शास्त्र में जो विस्तृत ज्ञान है, उस ज्ञान को ढालों, कविताओं, चौपाई आदि के माध्यम से सरल करके प्रस्तुत किया जाता है, जिससे जनसामान्य उसे बहुत सरलता से समझ लेता है। हमारे पूर्वाचार्यों ने अनेक ढालों, चौपाई, भजनों, कविताओं, दोहों आदि के माध्यम से शास्त्र ज्ञान प्रस्तुत कर दिया, जिससे जनसाधारण को शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त हो सके।

सम्यक्त्वी आत्मा को क्षयोपशम के प्रभाव से कवित्व शक्ति प्राप्त हो तो वह उस शक्ति का उपयोग वीतराग धर्म का उद्योत करने में करे। विषय-वासना बढ़ाने वाली या संसार मार्ग में फंसाने वाली कविताएं रचकर शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जिनेश्वर देव के, गुरुजनों के, धर्मात्माओं के, गुणीजनों के गुणानुवाद करने वाली, संसार से विरक्त करने वाली सरस शांत रसमयी कविताओं की रचना करे, यह कवित्व प्रभावना है।

-क्रमशः



## पंच परमेष्ठी की पहचान

सागर से भी गहरा जैन धर्म का तत्त्व ज्ञान है, जिसमें जितना उतरते जाएंगे उतनी ही तिरने की संभावना बढ़ती जाती है। जैन, धर्म, तत्त्व ज्ञान, जैन धर्म का मौलिक इतिहास तथा पंच-परमेष्ठी आदि के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी जन-जन के आत्मकल्याण हेतु देने का प्रयास किया जा रहा है। यह जानकारी आपके हृदय व जीवन को परिवर्तित कर आत्मकल्याण हेतु सहायक सिद्ध होगी। इसे अवश्य पढ़ें और श्रमणोपासक से जुड़े रहें। प्रतिमाह कुछ नए विषयों के साथ 'जैन तत्त्व निर्णय' धारावाहिक प्रश्नोत्तर के माध्यम से प्रस्तुत होगा, इसे पढ़ें और अपने जीवन में आत्मसात् करें।

**प्रश्न 1.** लोकालोक सम्पूर्णतया कौन जान सकते हैं व देख सकते हैं ?

उत्तर सर्वज्ञ-सर्वदर्शी।

**प्रश्न 2.** हम यहाँ बातचीत करते हैं, क्या सर्वज्ञ उसे जानते हैं।

उत्तर हाँ, वे सबकुछ जानते हैं।

**प्रश्न 3.** सर्वज्ञ कौन हैं ?

उत्तर श्री सिद्ध भगवान और श्री अरिहंत देव।

**प्रश्न 4.** सिद्ध भगवान कहाँ रहते हैं ?

उत्तर लोक के अग्रभाग पर (सिद्ध क्षेत्र में) सिद्ध भगवान रहते हैं।

**प्रश्न 5.** अरिहंत देव किसे कहते हैं ?

उत्तर अरिहंत शब्द 'अरिह' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है- योग्यता प्रधान। अरि अर्थात् कर्मशत्रु को, हंत अर्थात् नष्ट करने वाले को अरिहंत कहते हैं। जिनकी आत्मा में सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होने की योग्यता है, वे अरिहंत कहलाते हैं।

**प्रश्न 6.** कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर आत्मा के साथ बंधे हुए कार्मण वर्गणा के

सिद्ध

अरिहंत

आचार्य

उपाध्याय

मुनि (साधु)

पुद्गलों को कर्म कहते हैं।

**प्रश्न 7.** कर्म कितने प्रकार के हैं ?

उत्तर कर्म 8 प्रकार के हैं- ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अन्तराय।

**प्रश्न 8.** क्या कर्मों को आपने देखा है ?

उत्तर नहीं, हम उनको नहीं देख सकते हैं।

**प्रश्न 9.** आपकी आत्मा के साथ कितने कर्म लगे हुए हैं ?

उत्तर 8 कर्म।

**प्रश्न 10.** सिद्ध भगवान के कितने कर्म हैं ?

उत्तर 1 भी नहीं।

**प्रश्न 11.** अरिहंत देव के कितने कर्म हैं ?

उत्तर 4 कर्म।

**प्रश्न 12.** अरिहंत देव क्या खाते हैं ?

उत्तर वे साधु की तरह अचित्त आहार ग्रहण करते हैं।

**प्रश्न 13.** इस वक्त इस लोक में कितने तीर्थकर हैं ?

उत्तर 20 विहरमान तीर्थकर।

**प्रश्न 14.** वर्तमान में तीर्थकर किस लोक में हैं ?

उत्तर तिरछा लोक (मध्यलोक) में।

**प्रश्न 15.** वर्तमान में तीर्थकर तिरछा लोक के किस क्षेत्र में हैं ?

उत्तर महाविदेह क्षेत्र में।

**प्रश्न 16.** लोक में महाविदेह क्षेत्र कितने हैं ?

उत्तर 5 महाविदेह।

**प्रश्न 17.** अरिहंत देव अपनी आयु पूर्ण होने पर कहाँ जाते हैं ?

उत्तर मोक्ष में।

**प्रश्न 18.** इस भरतक्षेत्र में अंतिम तीर्थकर कौन हुए ?

उत्तर श्री महावीर स्वामी, जिनका दूसरा नाम श्री वर्धमान स्वामी है।

**प्रश्न 19.** श्री महावीर स्वामी अभी कहाँ हैं ?

उत्तर सिद्ध क्षेत्र में।

**प्रश्न 20.** नवकार मंत्र का उच्चारण कीजिए ?

उत्तर नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्जायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि पढमं हवइ मंगलं।

**प्रश्न 21.** नमो का अर्थ क्या है ?

उत्तर नमस्कार हो।

**प्रश्न 22.** अरिहंताणं का अर्थ क्या है ?

उत्तर अरिहंत देव को।

**प्रश्न 23.** सिद्धाणं का अर्थ क्या है ?

उत्तर सिद्ध भगवान को।

**प्रश्न 24.** अरिहंत देव व सिद्ध भगवान, इनमें बड़े कौन ?

उत्तर सिद्ध भगवान।

**प्रश्न 25.** नमस्कार मंत्र में अरिहंत देव को पहले नमस्कार क्यों किया जाता है ?

उत्तर क्योंकि धर्म का स्वरूप बताने वाले, मुक्ति का मार्ग बताने वाले, सिद्ध भगवान की पहचान कराने वाले अरिहंत देव ही हैं।

**प्रश्न 26.** अरिहंत कैसे होते हैं ?

उत्तर मुनि जैसे।

**प्रश्न 27.** सिद्ध भगवान का आकार कैसा होता है ?

उत्तर वे निरंजन हैं व अशरीरी होने से निराकार हैं।

**प्रश्न 28.** निरंजन किसे कहते हैं ?

उत्तर जिनको कर्मरूप अंजन (मैल) नहीं है।

**प्रश्न 29.** निराकार किसे कहते हैं ?

उत्तर जिनका आकार नहीं है, उन्हें निराकार कहते हैं।

**प्रश्न 30.** नमो आयरियाणं का अर्थ क्या है ?

उत्तर आचार्यजी को नमस्कार

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

-क्रमशः



### मन, वचन, काय कुंजी

मन-	बच्चे की तरह सरल
वचन-	युवा की तरह ओजस्वी
आचरण-	वृद्ध की तरह यतना व विवेकपूर्वक



## ‘दण्डक’ शब्द का आगमिक अर्थ

श्रीस्थानांगसूत्र, स्थान 1 की टीका में टीकाकार श्री अभयदेवसूरि दण्डक शब्द का अर्थ निरूपण करते हुए कहते हैं- ‘दण्ड को वाक्यपद्धतिः’ अर्थात् कहने के तरीके, कथन की रीति को दण्डक कहते हैं।

आगमानुसार नैरयिक, असुरकुमार आदि दस भवनपति, पृथ्वीकायिक आदि पांच स्थावर, बेइन्द्रिय आदि तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक - इन चौबीस जीवभेदों से जुड़ी वाक्यपद्धति, कथनरीति को ‘चतुर्विंशतिदण्डक’ कहा गया है। ध्यातव्य है कि ‘चतुर्विंशतिदण्डक’ का तात्पर्य चौबीस दण्डक यानी चौबीस तरह की वाक्यपद्धतियाँ नहीं हैं अपितु उपर्युक्त चौबीस प्रकार के जीवों को क्रमशः कहने वाली एक कथनशैली, एक वाक्यपद्धति, एक कथनरीति, एक सूत्रसमूह को ‘चतुर्विंशतिदण्डक’ कहा जाता है। आगमों में अनेक स्थानों पर आए ‘चउवीसादंडओ’ इत्यादि का यही अर्थ समझना चाहिए कि यहाँ किसी प्रासंगिक विषय पर चौबीस जीवभेदों का क्रमिक कथन किया गया है।

श्रीस्थानांगसूत्र के प्रथम स्थान के इस पाठ को देखें-

**एगा नेरइयाणं वग्गणा, एगा असुरकुमाराणं वग्गणा, चउवीसादंडओ जाव एगा वेमाणियाणं वग्गणा।**

अर्थात्- नैरयिकों की एक वर्गणा, असुरकुमारों की एक वर्गणा, चतुर्विंशतिदण्डक यावत् वैमानिकों की एक वर्गणा।

यहाँ टीकाकार ‘चउवीसादंडओ’ की व्याख्या करते हुए कहते हैं-

**चउवीसादंडउ त्ति चतुर्विंशतिपदप्रतिबद्धो**

**दण्डको वाक्यपद्धतिः चतुर्विंशतिदण्डकः।**

अर्थात्- चौबीस पदों से संबंधित वाक्यपद्धति - कथनशैली को ‘चतुर्विंशतिदण्डक’ कहते हैं।

आगमकार यहाँ ‘चउवीसादंडओ’ पद में ‘दण्डक’ शब्द का एकावचनान्त प्रयोग कर रहे हैं, जिससे भलीभांति समझा जा सकता है कि चौबीस जीवपदों के क्रमिक कथन को एक चतुर्विंशतिदण्डक कहते हैं। तात्पर्य यह है कि शास्त्रकार नैरयिकों के समुदाय को एक दण्डक नहीं कहते, न ही असुरकुमारों के समुदाय को दूसरा दण्डक कहते हैं।

इस प्रकार नैरयिकों से लेकर वैमानिकों तक के चौबीस समुदायों को चौबीस दण्डक नहीं कहते अपितु नैरयिकों से लेकर वैमानिकों तक के संपूर्ण क्रमिक कथन को एक दण्डक कहते हैं। चौबीस जीवपदों से संबंधित दण्डक होने से इसे एक चतुर्विंशतिदण्डक कहा जाता है।

यह भी ध्यातव्य है कि आगमों में अनेक वर्णनों में चतुर्विंशतिदण्डक को संक्षेप में मात्र ‘दण्डक’ शब्द से भी कह दिया गया है। वहाँ भी ‘दण्डक’ शब्द का अर्थ सामान्यतः चौबीस जीवभेदों का किसी विषय पर क्रमिक कथन ही है।

श्रीस्थानांगसूत्र के प्रथम स्थान की टीका में इसी विषय को स्पष्ट करने वाली एक गाथा भी उद्धृत की गई है, यथा-

**नेरइया असुरादी, पुढवाई बेइंदियादयो चव।**

**नर वंतर जोतिसिया, वेमाणी दंडओ एवं।।**

इस गाथा से भी स्पष्ट है कि चौबीसों जीवपदों के सामूहिक क्रमिक कथन को एक दण्डक कहा है।

एक आगमिक वर्णन के आधार पर हम ‘दण्डक’ के

अर्थ का विचार करें।

श्रीभगवतीसूत्र के श. 1, उ. 2 का एक पाठ इस प्रकार है-

**जीवे णं भंते! सयंकडं दुक्खं वेदेति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेति, अत्थेगइयं नो वेदेति। से केणट्टेणं भंते! एवं वुच्चइ - अत्थेगइयं वेदेति, अत्थेगइयं नो वेदेति? गोयमा! उदिण्णं वेदेति, अणुदिण्णं नो वेदेति, से तेणट्टेणं एवं वुच्चति - अत्थेगइयं वेदेति, अत्थेगइयं नो वेदेति। एवं जाव वेमाणिण्णं।**

**जीवा णं भंते! सयंकडं दुक्खं वेदेति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेति, अत्थेगइयं णो वेदेति। से केणट्टेणं? गोयमा! उदिण्णं वेदेति, नो अणुदिण्णं वेदेति, से तेणट्टेणं एवं जाव वेमाणिण्णं।**

**जीवे णं भंते! सयंकडं आउयं वेदेति? गोयमा! अत्थेगइयं वेदेति। जधा दुक्खेणं दो दंडगा तथा आउएण वि दो दंडगा एगत्त-पोहत्तिया, एगत्तेणं जाव वेमाणिण्णं, पुहत्तेण वि तहेव।**

उपर्युक्त आगमपाठ के आधार पर हम दण्डक शब्द के अर्थ को समझने का प्रयत्न करें।

यहाँ कर्मों को दो विभागों में बाँटकर प्रथम विभाग में सात कर्मों को 'दुःख' शब्द से कहा गया है तथा दूसरे विभाग में 'आयुर्कर्म' को रखा गया है।

गौतम स्वामी भगवान से पहला प्रश्न किसी एक जीव की अपेक्षा पूछते हैं कि "क्या एक जीव स्वकृत 'दुःख' का वेदन करता है?" इस प्रश्न का सम्यक् समाधान हो जाने पर गौतम स्वामी पूछते हैं कि "क्या एक नैरयिक स्वकृत 'दुःख' का वेदन करता है?"

इसका समाधान हो जाने पर पुनः गौतम स्वामी पूछते हैं कि "क्या एक असुरकुमार स्वकृत 'दुःख' का वेदन करता है?" इसी प्रकार उत्तरोत्तर समाधान प्राप्त करते हुए गौतम स्वामी स्वकृत 'दुःख' के वेदन के विषय में एक नागकुमार, एक सुपर्णकुमार, एक विद्युतकुमार, एक अग्निकुमार, एक द्वीपकुमार, एक उदधिकुमार, एक

दिशाकुमार, एक वायुकुमार, एक स्तनितकुमार, एक पृथ्वीकायिक, एक अप्कायिक, एक तेजस्कायिक, एक वायुकायिक, एक वनस्पतिकायिक, एक द्वीन्द्रिय, एक त्रीन्द्रिय, एक चतुरिन्द्रिय, एक तिर्यच पंचेन्द्रिय, एक मनुष्य, एक वाणव्यंतर, एक ज्योतिषी एवं एक वैमानिक के संबंध में प्रश्न करते हैं एवं समाधान प्राप्त करते हैं।

नैरयिक से लेकर वैमानिक तक के स्वकृत दुःख वेदन संबंधी इस क्रमबद्ध पृच्छा - समाधान को आगमकार एक 'दण्डक' कहते हैं। चूंकि यहाँ एक नैरयिक, एक असुरकुमार यावत् - एक वैमानिक की पृच्छाएँ हैं अतः यह एकत्वसंबंधी एक दण्डक हुआ।

इसके पश्चात् गौतम स्वामी बहुत जीवों संबंधी प्रश्न पूछते हैं, यथा- "भंते! क्या बहुत जीव स्वकृत दुःख का वेदन करते हैं?"

इसका समाधान प्राप्त हो जाने पर बहुत नैरयिक, बहुत असुरकुमार, बहुत नागकुमार, बहुत सुपर्णकुमार, बहुत विद्युतकुमार, बहुत अग्निकुमार, बहुत द्वीपकुमार, बहुत उदधिकुमार, बहुत दिशाकुमार, बहुत वायुकुमार, बहुत स्तनितकुमार, बहुत पृथ्वीकायिक, बहुत अप्कायिक, बहुत तेजस्कायिक, बहुत वायुकायिक, बहुत वनस्पतिकायिक, बहुत द्वीन्द्रिय, बहुत त्रीन्द्रिय, बहुत चतुरिन्द्रिय, बहुत तिर्यच पंचेन्द्रिय, बहुत मनुष्य, बहुत वाणव्यंतर, बहुत ज्योतिषी, बहुत वैमानिक के संबंध में प्रश्न पूछते हैं। यहाँ भी क्रमशः नैरयिक से लेकर वैमानिक तक का क्रमबद्ध प्रश्नोत्तर होने से यह एक दण्डक हुआ। चूंकि यहाँ बहुत नैरयिकों यावत् बहुत वैमानिकों संबंधी पृच्छाएँ हैं अतः यह बहुत्वसंबंधी एक दण्डक हुआ। अतः एकत्वसंबंधी एक दण्डक तथा बहुत्वसंबंधी एक दण्डक ये दो दण्डक 'दुःख' के वेदन संबंधी हुए। शास्त्रकार कहते हैं कि-

**जधा दुक्खेण दो दंडगा**

**तथा आउएण वि दो दंडगा एगत्त-पोहत्तिया।**

अर्थात्- जैसे 'दुःख' के संबंध से दो दण्डक कहे,

## श्रुमणिपासक

उसी प्रकार 'आयु' के संबंध में भी दो दण्डक कह देना। दो दण्डक का तात्पर्य यह है कि स्वकृत आयु के वेदन के विषय में भी एक नैरयिक से लेकर एक वैमानिक तक की पृच्छा करके एकत्वसंबंधी एक दण्डक कहना तथा बहुत नैरयिक से लेकर बहुत वैमानिक तक की पृच्छा करके बहुत्वसंबंधी एक दण्डक कहना। इस प्रकार दुःख के दो दण्डकों के समान ही आयु के भी दो दण्डक कहना।

उपर्युक्त आगमपाठ से दण्डक का अर्थ भलीभांति हृदयंगम होता है कि आगमकार चौबीस जीवभेदों विषयक क्रमिक कथन रूप सूत्र-समुदाय को एक दण्डक कहते हैं। अलग-अलग रूप से नैरयिकों का एक दण्डक, असुरकुमारों का एक दण्डक इत्यादि कहकर चौबीस जीवभेदों को चौबीस दण्डक नहीं कहा गया है। समझने की दृष्टि से एक पाठ पर विस्तार से समझाइश दी गई है। इसी प्रकार से आगमों में अन्यत्र आए पाठों में 'दण्डक' शब्द का उपर्युक्त अर्थ समझ लेना चाहिए। यहाँ ऐसे कुछ आगमपाठ उद्धृत किए जा रहे हैं, जिनमें दण्डक का तात्पर्य चौबीस जीवभेदों का क्रमिक वर्णन है, यथा-

**जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि दंडगा  
तहा उववन्नेणं उव्वट्टेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा।**

-श्रीभगवतीसूत्र, शतक 1, उद्देशक 7, सूत्र 5

**जहा पढमिल्लेणं अट्ट दंडगा तथा अट्टेण वि अट्ट  
दंडगा भाणितव्वा।... एते सव्वे वि सोलस दंडगा  
भाणियव्वा।**

-श्रीभगवतीसूत्र, शतक 1, उद्देशक 7, सूत्र 6

उपर्युक्त पाठों में चार दण्डक यानी चार प्रकार के जिज्ञासा-समाधानों पर चौबीस जीवपदों का क्रमिक कथन, आठ दण्डक यानी आठ विषयों में चौबीस जीवपदों का क्रमिक कथन इत्यादि समझ लेना चाहिए।

संक्षिप्त सार यह है कि दण्डक या चतुर्विंशतिदण्डक का तात्पर्य चौबीस प्रकार के जीव नहीं हैं अपितु चौबीस जीवभेदों का क्रमिक पंक्तिबद्ध कथन करने वाली एक कथनशैली है अर्थात् दण्डक चौबीस नहीं हैं किन्तु

दण्डक चौबीस जीवप्रकारों को क्रमशः व्यक्त करने वाली एक वाक्यपद्धति है।

1. प्रश्न - 'चउवीसादंडओ' का सीधा अर्थ 'चौबीस दण्डक' लगता है फिर टीकाकार इसका अर्थ 'चौबीस पदों' (जीवपदों, जीवभेदों) से 'जुड़ा दण्डक' क्यों कर रहे हैं?

1. उत्तर - 'चउवीसादंडओ' एक समासयुक्त पद है। समासयुक्त पद का अर्थ उसका विग्रह करने पर अर्थात् समास को सही रीति से खोलने पर प्रकट होता है। यहाँ मध्यमपदलोपी समास है, जिसमें वाक्य के मध्यम पदों का लोप करके समास बनता है। सामान्यतः 'चतुर्विंशतिपदप्रतिबद्धः दण्डकः' का समास बनेगा 'चतुर्विंशतिपदप्रतिबद्धदण्डकः'। किन्तु मध्य में रहे हुए 'पदप्रतिबद्ध' का लोप करने से 'चतुर्विंशतिदण्डकः' यह समासयुक्त पद हुआ। इस समासयुक्त पद का अर्थ करते हुए मध्यम पद पुनः उपस्थित हो जाते हैं। 'शाकपार्थिव' आदि शब्दों में संस्कृत व्याकरण में मध्यमपदलोपी समास होता है। 'शाकपार्थिव' एक समस्त (समासयुक्त) पद है, जिसका विग्रह करने पर 'शाकप्रियः पार्थिवः' (शाकप्रिय राजा) एक वाक्य बनता है। साधारणतया इसका समास होता 'शाकप्रियपार्थिवः' किन्तु मध्यवर्ती 'प्रिय' का लोप हो जाने से शब्द बना शाक पार्थिवः। इसी प्रकार यहाँ भी 'चतुर्विंशतिपदप्रतिबद्धदण्डकः' में मध्यमपदस्वरूप 'पदप्रतिबद्ध' का लोप होने से 'चतुर्विंशतिदण्डकः (चउवीसादंडओ)' शब्द बना।

2. प्रश्न - 'चउवीसदंडओ' शब्द उचित लगता है। फिर यहाँ स में आ की मात्रा लगाकर 'चउवीसादंडओ' क्यों कहा गया है?

2. उत्तर - संस्कृत के 'चतुर्विंशति' का रूप प्राकृत में 'चउवीसा' भी बनता है। श्रीसिद्धहेमशब्दानुशासनम् के अष्टम अध्याय के प्रथम पाद में आगत सूत्रों 'विंशत्यादेर्लुक्' 'ईर्जिह्वा-सिंह-त्रिंशद्विंशतौ

**त्या'** आदि से 'चउवीसा' रूप भी बनता है। अतः 'चउवीसादंडओ' पाठ व्याकरणसंगत ही है।

3. प्रश्न - 'दण्डक' शब्द का सामान्य अर्थ क्या है? क्या दण्ड देने से भी इसके अर्थ का संबंध है?

3. उत्तर - 'दण्डक' शब्द के अनेक अर्थ हैं किन्तु दण्ड देने से जुड़ा कोई अर्थ कोश में नहीं है। दण्डक शब्द का एक अर्थ पंक्ति भी है। यह अर्थ आगमिक दण्डक शब्द में विशेषतः संगत होता है। यथा - चौबीस जीवपदों की एक पंक्ति।

4. प्रश्न - कहीं कहीं 'दण्डक' शब्द में चौबीस जीवभेदों के साथ जीव को भी ग्रहण कर लिया है। वहाँ उपर्युक्त परिभाषा कैसे घटित होगी?

4. उत्तर - हां, यह कथन यथार्थ है। उन स्थलों में उपलक्षण से चौबीस जीवभेदों के पहले जीव का कथन भी 'दण्डक' के शब्दार्थ में समाविष्ट कर लिया गया है।

5. प्रश्न - क्या 'दण्डक' के अर्थ को किसी व्यावहारिक उदाहरण से समझाया जा सकता है?

5. उत्तर - 'दण्डक' के अर्थ को एक व्यावहारिक

उदाहरण से इस प्रकार समझने का प्रयत्न किया जा सकता है। यथा-

एक प्रश्नकर्ता ने किसी जानकार से पूछा-

**प्रश्नकर्ता** - राम कौन-सी कक्षा में पढ़ता है?

**जानकार व्यक्ति** - आठवीं में।

**प्रश्नकर्ता** - लक्ष्मण कौन-सी कक्षा में पढ़ता है?

**जानकार व्यक्ति** - दसवीं में।

इस तरह चौबीस बालकों का नाम लेकर सबके बारे में समान प्रश्न पूछा गया एवं जानकार व्यक्ति द्वारा सबका उत्तर दिया गया। इस प्रकार चौबीस बालकों के विषय में समान प्रश्न पूछने पर उनके उत्तरों के पंक्तिबद्ध सामूहिक वर्णन को दण्डक कहते हैं। जैसे यहाँ राम से लेकर चौबीस बालकों के विषय में क्रमशः प्रश्न पूछे गए एवं उत्तर प्राप्त किए गए। इसी प्रकार नैरयिक से लेकर वैमानिकों के विषय में समान प्रश्न पूछने एवं उनके उत्तर प्राप्त करने संबंधी पंक्तिबद्ध सामूहिक वर्णन को दण्डक समझा जा सकता है।

-जैन सिद्धांत मंजूषा से साभार



## रचनाएँ आमंत्रित

भगवान महावीर के अहिंसा सन्देश को जन-जन के हृदय पटल पर जागृत करने एवं समाजोत्थान के साथ-साथ समाज कल्याण को समर्पित आपकी अपनी श्रमणोपासक पत्रिका का अंक आपके करकमलों में है। आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। हम आतुर हैं आपके सुझावों को जानने के लिए। कृपया श्रमणोपासक के सम्बन्ध में आप अपने सुझाव हमें निःसंकोच भिजवाएँ ताकि इसे और अधिक जनोपयोगी व रुचिकर बनाया जा सके। आपके सुझाव हमारा मार्गदर्शन करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी प्रकार आगामी **15-16 नवम्बर तथा दिसम्बर 2022** के धार्मिक अंक **'समय की महत्ता, श्रावकाचार, विहार सेवा सबसे बड़ी जिम्मेदारी'** विषय पर आधारित रहेंगे। रचनाओं की शब्द सीमा 500-1000 शब्द रहेगी। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी **M.I.D.** (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि मो. **9314055390** एवं ईमेल : **news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

-श्रमणोपासक टीम

## अनूठी साधिका : महासती पुष्पचूला

15-16 सितम्बर 2022 अंक से आगे...

भागीरथी का तटवर्ती पुण्यभद्र नगर हुआ करता था। वहां शासन नायक थे पुष्पकेतु। सर्वगुण सम्पन्न महारानी थी पुष्पवती। उन राज-दम्पति से पुत्र रूप में जन्म लिया पुष्पचूल ने, जिसे यथानुरूप नाम दिया गया। पुष्पकेतु नरेन्द्र के एक कन्या थी, जो पुष्पचूला के नाम से प्रसिद्ध हुई। भाई भगिनी के स्निग्ध सौरभ-सुषमा की यह एक कहानी है। दोनों भ्रातृ-भगिनी में गहरी व प्रबल स्निग्ध धारा प्रवाहित थी। परस्पर सहचर्य उदात्तता का परिचायक था। सारस युगल की भांति संग-संग रहते थे। आयु वृद्धि भी इस प्रबलता में सहयोगी बनी, बाधक कदापि नहीं। भोजन, क्रीड़ा, वन-उपवन व अन्य कार्यों में अनन्यता से रहते थे। उनका अपूर्व व मधुर स्नेह जलप्रपात-सा प्रवाहशील था, जिसमें क्रीड़ा करते हुए अत्यधिक आनन्दानुभूति होती थी।

इस अगाध स्निग्धता की सर्वत्र चर्चा-परिचर्चा थी। सभी की रसना इस अपार आत्मीय व्यवहृति से मंत्रमुग्ध हो गुणानुवाद करती थी। माता-पिता उनके इस साहचर्य से प्रसन्नता की जाहनवी में प्रवाहित थे।

जब वे आयु का अतिक्रमण कर गए तब भी इनके विकास मार्ग में किञ्चित्मात्र प्रभाव नहीं पड़ने दिया। संधिकाल के पार होने पर अंग-प्रत्यंग का विकास अवरोधक तत्त्व के रूप में नहीं रहा अपितु प्रवर्द्धमानता को प्राप्त हुआ। दोनों भ्रातृ-भगिनी के मानस जागतिक विषमता के अभव्य का अपवाद था। न मुग्धा पुष्पचूला के नयनों में सलज्जा थी, न पुष्पचूल में कोई प्रगल्भता। ये दोनों यौवनावस्था से अपरिचित थे। रंगीन तरानों के फसानों का जिक्र भी इनके दिलों में नहीं आया।

राजा-रानी ने इन दोनों की व्यावहारिकता से

अत्यन्त चिन्तित हो परस्पर इनके पार्थक्य के लिए प्रयत्न किए। अगर परिणय सूत्र में बांधे तो कैसे क्या रह सकते हैं? लोक व्यवहार एवं सामाजिक कारण हैं। कई वैकल्पिक कारणों के बावजूद परिणाम शून्य रहा। उन्होंने सोचा कि भगवान ऋषभदेव के समय यह प्रथा प्रारंभ थी। नए परिवेश में इसे अमलीजामा पहनाया तो क्या आपत्ति है? कई बिन्दुओं पर मंथन करके राजा ने नगर के वरिष्ठ व्यक्तियों को आमंत्रित किया। दोनों भ्रातृ-भगिनी की अभिन्नता के साथ चर्चाएं हुई। आप भावी शासक को सुरक्षित चाहते हो तो इस कार्य में अपनी सहभागिता प्रदान करके उपकृत करें। काफी मनोमंथन के दौरान यही स्वीकृति ली गई कि इन्हें इसी रूप में दाम्पत्य सूत्र में आबद्ध कर दिया जाए।

दोनों को बुलाकर उनसे परामर्श लिया गया। पिताजी ने उनके सघन स्नेहसिक्तता के भाव प्रदर्शित किए, जिससे दोनों में प्रसन्नता की लहर उठने लगी। 'मौनं स्वीकृति लक्षणम्' के अनुरूप दाम्पत्य बंधन से अनुप्राणित कर दिया गया।

आश्चर्य! इस बंधन में भी वे दोनों पारस्परिकता से कोसों दूर रहे। वे नाम मात्र से अनुरंगित रहे, किन्तु दोनों में विकारात्मक तत्त्व प्रविष्ट नहीं हुआ। उन्होंने अपनी बालसुलभ चेष्टाएं यथावत् रखी। दोनों विषैले कीट के विषैले परिणामों से मुक्त रहे। वे दोनों अपने आलोक में भ्रमण करते रहे। इस आदर्श दाम्पत्य का चरित्र चित्र युग-युगान्तर गाता रहेगा। अन्निका मुनि का पदार्पण, धर्मदेशना, वैराग्य बीज का अंकुरण एवं दीक्षा की याचना से पुष्पचूल पर गहरा आघात पड़ा। प्रबल भावनाओं के आगे नतमस्तक सहर्ष दीक्षा दिलाई।

-क्रमशः



## धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

आप सभी के समक्ष एक नया धारावाहिक प्रारंभ होने जा रहा है, जिनके नाम से कई व्यक्ति परिचित भी होंगे। उनका नाम है- “धर्ममूर्ति आनंदकुमारी”। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती रंगूजी म.सा. की पट्टधर महासती आनंदकँवरजी का जीवन चरित्र प्रतिमाह आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत होगा। इन महासती के जीवन को पढ़कर आप जानेंगे कि कैसे उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी समभाव को ज्वलंत रखा और चारित्र को डिगने नहीं दिया। निश्चय ही धर्ममूर्ति आनंदकुमारी का चारित्र पढ़कर आपके जीवन में संयम और चारित्र का विकास होगा।

**स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्  
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ?**

पैदा होना उसी का सार्थक है जिसके पैदा होने पर उसका वंश उन्नत हो, संसार में उसका वंश विश्रुत हो। नहीं तो इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं जन्म लेता और कौन नहीं मरता अर्थात् सभी जन्म लेते हैं और मरते हैं।

क्या ऐसे व्यक्ति कहीं चमक सकते हैं, जो अपने ही क्षुद्र स्वार्थ के घेरे में बंद हों, जो भौतिक जगत् के ही प्रतिनिधि हों? वे तो अंधकार में से ही आते हैं और अंधकार में ही चले जाते हैं। ऐसे लोग अंधकार के कारागार को क्षणभर के लिए भी नहीं तोड़ पाते।

एक वे महान आत्माएं होती हैं, जो चंद्रमा के समान अज्ञान की अंधेरी काली निशा को चीरकर जन्म के समय भी संसार में शीतलता और शांति फैलाती हैं और बाद में भी ज्ञान का प्रकाश फैलाती रहती हैं। वे स्वयं अज्ञान-तिमिर को ध्वंस करके आध्यात्मिक आलोक से जगमगाती हैं और विश्व की सोई हुई मानवता को जगाने का महान उत्तरदायित्व पूर्ण करती हैं। उनके दर्शन पाकर मानव-जगत् की जड़ता सहसा पलायनमान हो जाती है। समग्र जनता चेतना की एक नई अंगड़ाई लेने लगती है।

ऐसी आत्माएं संत के रूप में भी आती हैं और सती के रूप में भी। बाह्य शरीर का कोई महत्त्व नहीं, उनके आन्तरिक गुणों का ही महत्त्व है। महाकवि भवभूति ने

कितने सुंदर शब्दों में कहा है-

**“गुणाः पूजास्थानं गुणिषु, न च लिंगं न च वयः”**

गुणियों में रहे हुए गुण ही पूजा के पात्र होते हैं। उनके बाह्य चिह्न- स्त्रीत्व-पुरुषत्व अथवा उग्र का कोई महत्त्व नहीं।

ये वह महासती हैं, जिन्होंने जन्म लेकर अपने समाज, देश, राष्ट्र तथा धर्म की उन्नति के लिए अपनी आत्मा को कष्टों की शय्या पर सुलाया और जनसमुदाय के लिए एक आदर्श उपस्थित किया है। उनके पवित्र चरण-चिह्नों पर चलकर प्रत्येक जन अपनी मंजिल प्राप्त कर सकता है। वे संसार से उदासीन, निःस्पृह और चरित्रशीला महासाध्वी हैं। उन्होंने संसार के भोग-विलासों को उठती हुई तरुणाई में ठोकर मारी। उन्होंने जागृत होकर त्याग-वैराग्य की कठोर राह पकड़ ली। उनके संयम के मार्ग में कितने ही विघ्न आए, रोड़े अटके, उन्हें विचलित करने का प्रयत्न भी किया गया, पर सब निष्फल। उन्होंने कष्टों और विघ्नों को हंसते-हंसते सहन किया।

उनका साध्वी-जीवन स्वच्छ और उज्वल रहा है। वह युगों-युगों तक आने वाले साधकों और साधिकाओं के लिए मील के पत्थर की तरह मार्गदर्शक रहेगा। ऐसी आत्माएं ही विश्व की अमूल्य सम्पत्ति होती हैं। ऐसी सम्पत्ति जिस किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को

## श्रमणीपासक

मिल जाती है, वह कितना भाग्यशाली होता है! सचमुच जैन समाज ऐसी महासती, महानिधि को पाकर धन्य-धन्य हो गया है।

### जैन धर्म में महिलाओं का स्थान

जैन धर्म में महिलाओं को भी वही स्थान प्राप्त है, जो पुरुषों को है। अंतिम तीर्थंकर महाप्रभु महावीर ने, जिनका शासन आज चल रहा है; साधना के लिए दोनों को समान अवसर और अधिकार दिए थे। इतिहास के पृष्ठों को जब हम उलटते हैं तो पता लगता है कि आज तक महिलाओं का नाम पुरुषों से कई अवसरों पर आगे ही रहा है। महापुरुषों की वाणी को जीवन में सबसे अधिक रूप से उतारने के लिए ये महिलाएं ही आगे आईं। इन्होंने अपने जीवन को भगवान की अमूल्य वाणी के सहारे सत्कर्म में डालने का प्रयत्न किया। युगादि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पुत्रियाँ- ब्राह्मी और सुन्दरी ने चरित्र का उज्ज्वल मार्ग अपनाया। वे शिक्षा में, संयम में पुरुषों से एक कदम भी पीछे नहीं थी। जब हम उस प्रातः स्मरणीय महासती राजीमती का जीवन आगम के पन्नों में पढ़ते हैं तो हमारा हृदय महिला समाज के प्रति श्रद्धा से परिपूर्ण हो उठता है। उसने संयम की कड़कड़ाती धूप से तप्त मार्ग पर चलते हुए रथनेमि को, जिसके मन में साधु बन जाने पर भी वासना की चिनगारियां दबी पड़ी थी और जो उस मार्ग से हट जाने को तैयार हो रहा था, उसे मार्गारूढ किया। इतना ही नहीं, उस वीराङ्गना ने उस पथभ्रष्ट साधु की वासना की चिनगारियां ऐसे उपदेश-जल द्वारा बुझाई कि वे पुनः भभक न उठे। यही तो उस महासती की महानता थी। उसके जीवन में संयम का तेज चमक रहा था कि उठती हुई तरुणाई में जब सारा संसार भोगों की अंधेरी गलियों में ठोकरें खाता फिरता है अथवा वासना की गुदड़ी ओढ़ कर नींद के खुराटे लेने लगता है, उसने सबको लात मार दी और चल पड़ी अपने (लोकोत्तर) प्रियतम का अनुसरण करते, साधना की तप्त राजवीथी पर। वह पुरुषों से एक इंच भी पीछे नहीं थी।

उस महासती चन्दनबाला के जीवन पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो मालूम होता है कि वह एक महाशक्ति थी। उसने जनता के सामने महिला-जीवन का उच्च आदर्श रखा था। उस समय राजाओं में धर्म-भावना दबी पड़ी थी और महिलाओं को चन्द्र चाँदी के टुकड़े फेंक कर खरीदने की एक निन्द्य प्रथा चल रही थी। यह बात उस महाशक्ति को सह्य न हो सकी। उसने अपनी सारी शक्ति उस निकृष्ट प्रथा को सुधारने और महिला समाज का कल्याण करने में लगा दी। उसने उन सत्ता-मदान्ध राजाओं को भी चुनौती दी कि एक राजकन्या भी अभूतपूर्व कार्य करके दिखा सकती है। यही कारण है कि महाप्रभु महावीर ने बालब्रह्मचारिणी राजकुमारी चन्दनबाला को साध्वियों में सबसे अग्र स्थान दिया।

महिला समाज में जागृति का प्रधान कारण यही है कि भगवान महावीर ने उस समय के एक विपरीत नारे का पुरजोर विरोध किया था। वह नारा वैदिक धर्म की उस संकीर्ण संस्कृति से उठ रहा था। वह था- 'स्त्रियों को शास्त्र पढ़ने का अधिकार नहीं है, वे पुरुषों की अपेक्षा नीची हैं।' परन्तु भगवान महावीर ने चतुर्विध संघ में महिलाओं को भी समान स्थान दिया और कहा- 'वे भी पुरुषों की भांति ही अपना कल्याण कर सकती हैं।' उनकी धर्मप्रियता और धर्म में दृढ़ता का सबसे प्रमाण यह है कि भगवान महावीर के चतुर्विध संघ- साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका में सबसे अधिक संख्या महिला साधिकाओं की थी। 2500 वर्ष से जब हम उस पाठ को दुहराते हैं तो हमें पता लगता है कि भगवान महावीर के शिष्य साधु तो 14000 ही थे, जबकि साध्वियाँ-आर्याएँ 36000 थीं। महाप्रभु महावीर ने उन महिलाओं को भी ऊँचा उठाया, जो समाज की दृष्टि से नीचे गिरी हुई थीं।

हम देखते हैं कि वे राजरानियां, जिनका जीवन बड़े-बड़े राजमहलों में गुजरा था, जिनके एक इशारे पर दास-दासियाँ नाचने को तैयार थे, वे भगवान महावीर के पवित्र धर्म को भारत के कोने-कोने में फैलाने के लिए कटिबद्ध हो गईं। वे कौन थीं? वे थी काली, महाकाली,

## श्रमणोपासक

कृष्णा, महाकृष्णा आदि राजवैभव में पली हुई रानियां! वे महारानियां, जिनका जीवन सुख पालने में ही झूला हुआ था, जिन्होंने कभी सर्दी-गर्मी का अनुभव नहीं किया था, लेकिन जब निकली तो संसार की विषय-वासना की बेड़ियां तोड़कर ऐसी निकली कि उन्हें दुःख क्या होता है, इसका पता भी न चला। वे वीरांगनाएं नंगे पैर बड़े-बड़े गांवों, नगरों में भिक्षापात्र लेकर जनता के सामने आती हैं। जिनका हाथ दान देने को तैयार रहता था, आज वे ही कड़कड़ाती हुई धूप और पौष के महीने की कड़ी ठण्ड की परवाह न करके भिक्षा के लिए फिरती हैं। उन्होंने अपने अन्तिम जीवन को तपस्या की कसौटी पर कसकर शुद्ध स्वर्णमय बना दिया था।

जैन महिलाएँ तो ऐसी हो चुकी हैं, जिन्होंने अपने धर्म पर दृढ़ रहने के लिए बड़ी-बड़ी कठिनाइयां सहन की हैं। उनके पति दूसरे धर्मों की मान्यता रखते थे, फिर भी वे अपने पवित्र जैन धर्म पर अविचल रहीं। वे भगवान महावीर के मार्ग पर चलती हैं तो संसार को चुनौती देकर चलती हैं। भगवान महावीर और राजा श्रेणिक का इतिहास जैनागमों में बराबर चला आता है। पर उस सम्राट को भगवान महावीर के चरणों तक पहुंचाने में किसका हाथ था? वह कौन थी, जिसने मगध सम्राट श्रेणिक का पहले-पहल हृदय पलटा था? वह थी रानी चेलना। वह जैनत्व की सच्ची पुजारिन थी। उसकी रग-रग जैनधर्म से ओतप्रोत थी, राजा श्रेणिक को भी उसने अपने पिता के शुद्ध धर्म का मार्ग बतलाया। श्रेणिक पहले दूसरे धर्म की ओर झुका हुआ था, पर रानी चेलना की सुन्दर विचारधाराओं को सुनकर वह जैनधर्म के मार्ग पर आ गया था और बाद में अनाथीमुनि से विशेष बोध पाकर भगवान महावीर का भक्त बन गया था।

जैनधर्म में ऊँची-ऊँची विचारक महिलाएँ भी आईं, जो भगवान महावीर के धर्म को स्वीकार करके चली हैं। भगवान महावीर के पास आकर जहां गौतम जैसे बड़े-बड़े साधक प्रश्न पूछते हैं, वहाँ महान नारी जयन्ती श्राविका के प्रश्न भी चलते हैं। हमें देखकर

आश्चर्य होता है कि उस महान नारी ने कैसे-कैसे जीवनस्पर्शी प्रश्न किये हैं? वह पूछती हैं- 'भगवन्! मनुष्य का दुर्बल रहना अच्छा या बलवान?' भगवान फरमाते हैं- 'एक दृष्टि से दुर्बल रहना अच्छा, एक दृष्टि से बलवान रहना ठीक है।' उसका प्रश्न बन्द नहीं हुआ। वह पुनः तर्क की पगडंडी पर आकर बोलती हैं- 'से केणट्रेणं भंते!' अर्थात् 'भगवन्! वह कैसे?'

भगवान- 'जो आदमी पापी है, दुराचारी है, उसका दुर्बल रहना अच्छा है, पर जो संयमी, सदाचारी पुरुष है, उसका सबल रहना ठीक है।'

उसने दूसरा प्रश्न भी किया- 'भगवन्! मनुष्य का सोते रहना अच्छा है या जागते रहना?' भगवान् ने इस प्रश्न का भी वही उत्तर दिया।

आप सुनकर हैरान होंगे कि एक महलों में रहने वाली नारी के ये जीवन के छोटे, किन्तु मार्मिक प्रश्न हो सकते हैं? इससे हमें पता लगता है कि उस समय की महिलाओं का मानस कितना जागृत था, उनकी विचारशक्ति कितनी विकसित थी!

इस तरह हम देखते हैं कि त्याग की दृष्टि से, तपस्या की दृष्टि से, विचारों की दृष्टि से अबला कहलाने वाली उन प्रबला महाशक्तियों ने बड़े-बड़े काम कर दिखाए हैं। वे धर्मयुद्ध के मैदानों में भी डटकर खड़ी रही हैं। पुरुषों की अपेक्षा जैन समाज की उन महिलाओं में हमें धर्म की दृढ़ता किसी कदर भी कम नजर नहीं आती।

जैन समाज में ऐसी-ऐसी महिलाएँ हुई हैं, जो अपने आदर्श पर, अपनी कृत प्रतिज्ञाओं पर डटी रही हैं। उन्हें डिगाने का साहस बड़े-बड़े राजाओं और सम्राटों तक को नहीं हुआ।

महासती रंगूजी, जिनके नाम पर वर्तमान साध्वी-सम्प्रदाय प्रचलित है, एक ऐसी ही साहसी और दृढ़धर्मा सती थी। उनको विषय-वासनाओं की ओर प्रेरित करने और शील से भ्रष्ट करने के लिए उनकी ससुराल



‘धम्मोत्तर’ ग्राम के रूप-लोलुप ठाकुर ने तरह-तरह के उपाय किये और बलात् पकड़ कर मंगाने का षड्यन्त्र भी रच दिया, परन्तु उस वीरता की प्रतिमूर्ति सती के रोम-रोम पर शील का रंग छाया हुआ था। वह हटे तो कैसे हटे? शील के प्रभाव से महासतीजी का बाल भी बांका न हुआ। कामवासना के रोग से ग्रस्त ठाकुर मन मसोस कर रह गया, उसकी एक भी न चली। आखिर सत्य की विजय हुई। महासतीजी सानन्द अपने पीहर (मायके) नीमच पहुंच गई और थोड़े ही दिनों के बाद त्याग और वैराग्य के उस पुनीत पथ को उन्होंने अंगीकार कर महासती बन गई तथा अपने पवित्र गुणों से प्रवर्तिनी-पद को अलंकृत करने लगी।

आज उन्हीं की पट्टधर वर्तमान महासती श्री आनन्दकुमारीजी हैं। इन्हीं के जीवन-चरित्र की पवित्र

गाथाएँ लिखने के लिए यह लेखनी तत्पर हुई है। आप जैन समाज की एक महाशक्ति तथा त्याग और वैराग्य की साक्षात् मूर्ति हैं। आपके मुख पर सर्वदा प्रसन्नता की लहरें दौड़ती रहती हैं, जिससे आगन्तुक व्यक्ति अशान्त हो तो आपके प्रसन्न वदन को निहार कर शान्ति प्राप्त कर लेता है।

जैन धर्म में ऐसी कई उच्च आत्माओं ने जन्म लेकर नारी समाज को, जो आज के युग में अन्धकार में चक्कर काट रहा है, अमूल्य प्रेरणाएँ देकर सत्पथ पर लाने का प्रयत्न किया है। पुरुषवर्ग ऐसे महान् रमणीरत्नाओं को भुला नहीं सकता। भगवान महावीर, राम, कृष्ण और बुद्ध को जन्म देने वाली ये ही जगत्जननियाँ थीं। इनका पुरुष समाज पर महान् उपकार है।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः ●●●

## DANGERS OF MENTAL POLLUTION

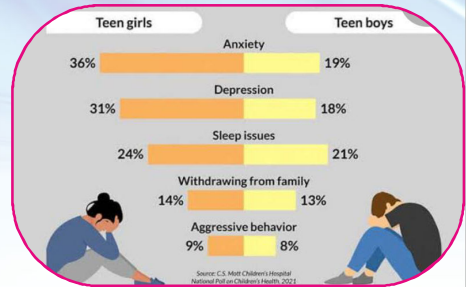
Mental pollution has reached to all time high  
All sections of the society are affected by it,  
Time has come to take stock off it in earnest  
Lest it is too late!

Is it the development of technology to be blamed?  
Or is it the society or our education system  
The problem has always been there  
but now we feel it more!

Self discipline, Self control, Self reliant, Self confidence  
Are the time tested weapons against this pollution  
Let us follow these and also pass on to others  
Lest it is too late!

Code of conduct taught by the learned souls  
Are there for us to follow  
The ethics and value systems left by our elders  
Shall only come to our rescue  
And help us swim through the polluted seas and rivers!

As this enemy is an eternal one  
With renewed energy and gusto  
Let us all join hands, irrespective of caste, creed and religion  
With the grace of god, this enemy shall also be defeated!



## बालमन में उपजे ज्ञान

-मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

(पिछले धार्मिक अंक में आप सभी ने पढ़ा कि साधु-साध्वीजी के दर्शनार्थ गए बच्चे कैसे उनकी दिनचर्या, उनका संयमित जीवन देखकर हैरान थे। अनकहे सवाल के संतुष्ट उत्तर उन्हें स्थानक में मिल चुके थे। शायद उन्हें धर्म का स्वरूप समझ आ चुका था।)

प्यारे बच्चे आंखों में दिव्यता की चमक लिए अपने-अपने घरों को चल दिए। अब आगे पढ़े। विद्यालय में...

**नीलिमा-** सौरभ! हम तुम्हारे घर कब आ सकते हैं? उस दिन स्थानक जाने के बाद हमें बहुत अच्छा लगा। हम ये सब और ज्यादा जानना चाहते हैं।

**सौरभ-** अरे फ्रेंड्स, वो तुम्हारा भी घर है और मां तो खुश हो जाएगी। उन्हें बहुत पसंद है बच्चों को धर्म के संस्कार के विषय में बताना।

**पंकज-** क्या हम आज शाम को आ सकते हैं? सभी लोग अपना होमवर्क कम्पलीट करके फिर ही आएंगे।

**सौरभ-** एक ही शर्त पर आने दूंगा। (सभी दोस्त आश्चर्यचकित) प्रतिक्रमण के समय से लेट मत आना। हम सभी प्रतिक्रमण करके ही मां के पास बैठेंगे।

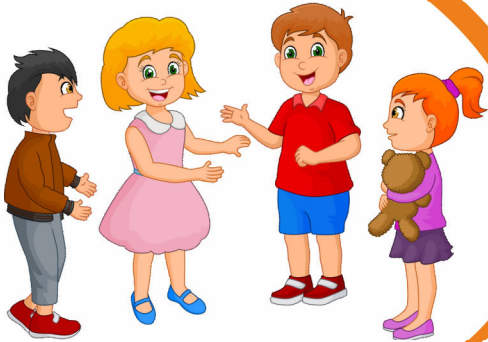
(सभी दोस्त हंसते हुए अपनी-अपनी कक्षाओं में चले जाते हैं। शाम को प्रतिक्रमण के समय वे सब सौरभ के घर प्रतिक्रमण एवं सामायिक के सभी उपकरणों के साथ आ जाते हैं।)

**सौरभ की माताजी-** जय जिनेन्द्र बच्चो! अगर मेरे द्वारा बताए गए ज्ञान से या अन्य जानकारी से किसी का दिल दुःखा हो तो 'क्षमायाचना'।

**नितिन-** आंटी! मैं जब से स्थानक से आया हूँ तब से एक प्रश्न मेरे दिमाग से हट ही नहीं रहा। वह यह कि साधु-संत बिना सुख-सुविधा के क्यों रहते हैं? ये तो हमको समझ आ गया कि अहिंसा के पालन हेतु वे ऐसा करते हैं, परन्तु वे अपने परिवार से अलग क्यों होते हैं? साथ में रहकर भी तो सभी नियमों का पालन किया जा सकता है।

**सौरभ की माताजी (सोचते हुए कि जिज्ञासा शांत करना अतिआवश्यक**

**है।)-** सुनो बच्चों! एक बात का जवाब दो। तुम सबके पास किताबें एवं कॉपियां हैं, बैग है और सभी ट्यूशन भी जाते हो। (सभी ने हां में हां मिलाई) तो फिर घर में क्यों नहीं पढ़ते, स्कूल की क्या जरूरत है? हर एक गतिविधि के लिए वातावरण का विकास अत्यंत आवश्यक है। जिस तरह पढ़ाई स्कूल में ही हो सकती है, ईलाज अस्पताल में हो सकता है, उसी तरह दीक्षा लेने वाले भाई-बहनों को स्थानक में रहकर ही संयमित जीवन की आराधना



करनी होती है।

**नितिन-** हम तो बच्चे हैं, शरारती हैं, परंतु दीक्षा ग्रहण करने वाले तो समझदार होते हैं ना।

**सौरभ की माताजी-** बिल्कुल। समझदार, ज्ञानी, सेवाभावी, सरल होते हैं और बच्चे यानी 9 वर्ष व उससे अधिक आयु के बच्चे भी दीक्षा ले सकते हैं। परंतु जैसे आप लोगों को स्कूल के प्रिंसीपल सर द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करना होता है, उसी तरह 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर द्वारा साधु-साध्वियों की चर्चा हेतु जो नियम बनाए गए हैं उनका पालन सभी को करना जरूरी है। इसलिए म.सा. को स्थानक में ही रहना पड़ता है।

**नीलिमा-** भगवान महावीर कहां हैं?

**पंकज-** उन्होंने ये सब कहां लिखा?

**नितिन-** कोई ये नियम तोड़ता है तो क्या उन्हें भी स्कूल के बच्चों की तरह पनिशमेंट (सजा) मिलती है? सौरभ हंसने लगा।

**सौरभ की माताजी-** धीरे-धीरे मैं तुम्हें सब समझाऊंगी। तुम लोग रोज शाम को आ जाया करो।

**सौरभ-** मां! इन्हें भी महत्तम महोत्सव की संस्कार एक्टिविटी में ले लो ना, आप तो संस्कार टीम में भी हो।

**सौरभ की माताजी-** बहुत अच्छा याद दिलाया।

**पंकज-** ये 'महत्तम महोत्सव' क्या है?

**सौरभ की माताजी-** हमारा जो संघ (ग्रुप) है उसका नाम है- 'श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ', वर्तमान में जिसके नायक परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. हैं। आपश्रीजी के सशक्त हाथों में संघ की बागडोर है। उनकी दीक्षा को 50 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। उसी उपलक्ष्य में 'आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा-महोत्सव - महत्तम महोत्सव' मनाया जा रहा है, जिसके 9 प्रकल्पों में से एक प्रकल्प है 'संस्कार'।

पंकज, नीलिमा, नितिन के प्रश्नों की झड़ी शुरू होने ही वाली थी कि सौरभ की माताजी ने सभी को 'संस्कार' के फॉर्म देते हुए कहा कि अब सारे जवाब कल मिलेंगे। अभी समय हो चुका है इसलिए आप सब घर जाएं।

**सौरभ-** बाय दोस्तो!

**सौरभ की माताजी-** सभी बच्चे कल से सुबह उठते ही अपने से बड़ों को प्रणाम करेंगे और छोटे हो या बड़े किसी के साथ अपशब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे।

सभी ने एक स्वर में- जी आंटी! जय जिनेन्द्र!

(कई अधूरे सवाल के जवाब के इंतजार में सभी बच्चे चले गए। सौरभ की माताजी की आंखों में बच्चों की जिज्ञासा देखकर एक अलग ही चमक थी।)

-क्रमशः





जय जिनेन्द्र बच्चो !

आप सभी **Good Box** में आई बातों को पढ़कर **Good** बन रहे हैं ना ? क्योंकि **Good** बनकर ही आप **God** बन सकते हैं। **God** बनने के लिए आप सभी को उस रास्ते पर चलना जरूरी है जिस रास्ते पर हमारे आचार्य व

साधु-साध्वी चल रहे हैं। इसलिए आप सभी प्रतिदिन स्थानक जाएं और अपने माता-पिता से धर्म के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानें। आपने पिछले अंक में साधु-साध्वीजी के 22 परीषह के बारे में जाना। उन्हें परीषह तो सहन करने ही पड़ते हैं साथ ही अपने संयमी जीवन में कहां-कहां सावधानियां रखनी पड़ती है, आईए जानें...

एक साधु को संयमी जीवन के निर्वाह के लिए कौन-सी सावधानियां रखनी चाहिए ?

संयम के सत्रह प्रकार हैं, जिनका साधु को पालन करना चाहिए-

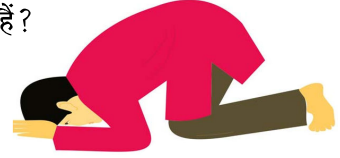
1. पृथ्वीकाय संयम- पृथ्वी ही जिनका शरीर है, ऐसे जीवों की विराधना नहीं करना।
2. अप्काय संयम- पानी ही जिन जीवों का शरीर है, उनकी विराधना नहीं करना।
3. अग्निकाय संयम- अग्नि ही जिन जीवों का शरीर है, उनकी विराधना नहीं करना।
4. वायुकाय संयम- वायु ही जिन जीवों का शरीर है, उनकी विराधना नहीं करना।
5. वनस्पतिकाय संयम- वनस्पति के जीवों की विराधना नहीं करना।
6. वेइन्द्रिय संयम- दो इन्द्रिय वाले जीवों की विराधना नहीं करना।
7. तेइन्द्रिय संयम- तीन इन्द्रिय वाले जीवों की विराधना नहीं करना।
8. चउरिन्द्रिय संयम- चार इन्द्रियों वाले जीवों की विराधना नहीं करना।
9. पंचेन्द्रिय संयम- पांच इन्द्रियों वाले जीवों की विराधना नहीं करना।
10. उपकरण संयम- जड़ वस्तुओं को सावधानी से उठाना, रखना और उपयोग करना।
11. प्रेक्षा संयम- प्रत्येक वस्तु को उपयोग करने से पूर्व अच्छे से देखना।
12. उपेक्षा संयम- राग-द्वेष के भाव न रखना।
13. प्रमार्जना संयम- सोने, उठने, बैठने या चलने से पहले रजोहरण या पूंजणी के द्वारा स्थान का प्रमार्जन करना।
14. अपडिहारिय संयम- अवांछनीय वस्तुओं को यतनापूर्वक रखना।
15. मन संयम- मन में बुरे विचारों को नहीं आने देना।
16. वचन संयम- बुरे व कठोर वचनों का प्रयोग नहीं करना।
17. काया संयम- गलत और बुरे कार्य नहीं करना।

## It's time to get some knowledge

1. मुंहपत्ति में कितनी तह होती हैं	8	2. नवकार मंत्र में कितने अक्षर हैं	68
3. माला में कितने मोती होते हैं	108	4. ज्ञान कितने हैं	5
5. तीर्थकर कितने होते हैं	24	6. सतियां कितनी हैं	16
7. सामायिक के दोष कितने हैं	32	8. कर्मादान कितने हैं	15

⇒ वंदना करते वक्त हमारे कितने अंग झुकते हैं और कौन-से शब्द में झुकते हैं?

**5 अंग** - 1 मस्तक, 2 हाथ (जुड़े हुए), 2 पैर। नमंसाभि और मत्थरण वंदामि शब्द बोलते समय।



⇒ **अरिहंत** - 12 गुण, **सिद्ध** - 8 गुण, **आचार्य** - 36 गुण, **उपाध्याय** - 25 गुण, **साधु** - 27 गुण, ऐसे करके पाँच पदों में 108 गुण होते हैं। माला का हर मोती इन गुणों को दर्शाता है। इस अपेक्षा से माला में 108 मोती होते हैं।

## GREATNESS OF RENUNCIATION

Importance of renunciation cannot be undermined; it leads to salvation and enlightenment. For renunciation, relinquishment of the results of karma is the stepping stone. It is giving up of desires, anger, attachments, hatred, hostility etc. These could be achieved by following the path of learned souls and certain codes of conduct. It is easier said than done, as giving up of material attachments is not that simple, it requires constant training of our inner self, understanding the true meaning as to why we are born, how to liberate our soul from the constant rebirths etc. All religions abhor the inclination of human beings towards materialistic world but still we see majority of the people leaning towards it including many who claim to be liberated from all desires. Attachments of any kind be it mental or physical, scars the soul; thereby, making it difficult to realize it's true worth and complete the journey unhindered.

To attain spiritualism, one has to follow a set of ethical codes; in this direction in Jainism there are samyagdarshana-right faith, samyagjnana-right knowledge and samyakcharitra-right conduct. These three are interconnected and coexist. Samyak Charitra implies that one has to get away from wrongdoings and involve oneself in doing good work. One has to conduct by truthfulness, non violence, tapa, impeccable character, renunciation and to leave anger, desires, jealousy, kama etc. Samyak Charitra has 13 parts viz. five mahavrata, five samitis and three guptis. The five mahavrata broadly cover non violence, truthfulness, bramhacharya, aparigraha-non acquisition and achorya-not stealing. The five samitis are Irya samiti-to avoid stamping on living beings by walking carefully; Bhasha samiti- regulation of speaking (to speak truth, sweetly, avoiding gossip, laughing aloud, self praise etc.); Esnna samiti-regulation of begging, Adana Nikshepana samiti-regulation of taking; Utsarga samiti-regulation of disposal. The three guptis are the Mana Gupti-regulation of mind, Vachana Gupti- regulation of speech, Kaya Gupti-regulation of bodily activity.

Similarly all religions have their own set of rules of conduct for attaining enlightenment, however the basis of the rules of conduct of all religions are more or less the same. Renunciation by someone guides others also to follow the path of good conduct thereby purifying the society at large.

## भगवान महावीर निर्वाण दिवस की शुभकामनाएं

हम सभी परमपिता परमेश्वर प्रभु महावीर के अनुयायी हैं। उनके बताए मार्ग पर चलना जीवन कल्याण हेतु परम आवश्यक है। अतः आइए! हम सभी संकल्पित हों कि प्रभु महावीर के संदेश 'जीओ और जीने दो' अर्थात् अहिंसा के मूल सिद्धांत को ग्राम, नगर, राष्ट्र और विश्व तक पहुंचाएं। अहिंसा ही विश्व शांति का एक मात्र उपाय है।

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि

मोक्षमार्गः

ज्ञानावरणीय कर्म

आयुष्य कर्म

दर्शनावरणीय कर्म

नाम कर्म

वेदनीय कर्म

गोत्र कर्म

मोहनीय कर्म

अन्तराय कर्म

मैं मोहनीय कर्म पर विजय प्राप्त करूं

निर्वाण दिवस पर करणीय महत्त्वपूर्ण कृत्य

1. कार्तिक माह में वीर स्तुति पुच्छिसु णं अधिक से अधिक पढ़ें। (अस्वाध्याय काल का ध्यान रखें)
2. निर्वाण दिवस पर पोरसी, आयंबिल, एकासना, उपवास आदि की आराधना अवश्य करें।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति



## ‘वीर स्तुति’ में भगवान महावीर के 60 विशेषण

– डॉ. दिलीप धींग, बम्बोरा

द्वितीय अंग आगम ‘सूयगडो’ या सूत्रकृतांग सूत्र के छठे अध्ययन में पंचम गणधर और प्रथम आचार्य सुधर्मा स्वामी द्वारा चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की भावप्रवण स्तुति की गई है, जो कि पुच्छिसु णं यानी वीर स्तुति के नाम से विख्यात है। अर्धमागधी प्राकृत भाषा में रचित दो-दो पंक्तियों की 29 गाथाओं की इस स्तुति में श्रमण भगवान महावीर को विभिन्न सन्दर्भों में विभिन्न विशेषणों और उपमाओं से अलंकृत किया गया है। पहली और अंतिम गाथा के अतिरिक्त सभी गाथाओं में भगवान महावीर की एक या एकाधिक उपमाओं या विशेषताओं को काव्य में गूँथा गया है। कहीं एक ही गाथा में अनेक विशेषताएँ हैं तो कुछ विशेषताएँ एक से अधिक गाथाओं में भी अंकित हुई हैं। कुछ विशेषताओं को भिन्न विशेषार्थ और भावार्थ के साथ विभिन्न गाथाओं में अलग-अलग शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। जगत् में जो वस्तुएँ, सिद्धान्त, समूह आदि श्रेष्ठ होते या माने जाते हैं, उनकी उपमा व तुलना के साथ भगवान महावीर और उनके साधनामय जीवन को सुन्दर तरीके से सर्वश्रेष्ठ बताते हुए स्तुति की गई है। इस स्तुति में आए ऐसे ही नामों, विशेषणों, विशेषताओं और उपमाओं का यहाँ सन्दर्भ परिचय दिया जा रहा है—

**1. ज्ञातपुत्र (नातयुत, णायपुत्ते) :** जैन आगमों के अलावा भगवान महावीर के ‘ज्ञातपुत्र’ नाम का उल्लेख बौद्ध ग्रंथों में भी मिलता है। ‘नाय’ (ज्ञात) एक कुल था। ज्ञातकुल के आधार पर भगवान का एक नाम ज्ञातपुत्र भी है। (गाथा क्रमांक 2, 21, 23 एवं 24)

**2. खेदज्ञ (खेयण्णए) :** संसार और संसार के प्राणियों के दुःखों को जानने वाले। (गाथा क्रमांक 3)

**3. क्षेत्रज्ञ (खेयण्णए) :** लोकालोक के सम्पूर्ण क्षेत्र के ज्ञाता। लोकालोक स्वरूप के ज्ञाता।

आत्मा को ‘क्षेत्र’ भी कहा गया है, इस अर्थ में आत्म-स्वरूप के ज्ञाता। (गाथा क्रमांक 3)

**4. कुशल (कुसले) :** आत्मविद्या की उपासना करने और करवाने में अत्यन्त निपुण। (गाथा क्रमांक 3)

**5. आशुप्रज्ञ (आसुपण्णे) :** प्रत्युत्पन्नमति। त्वरित और तीव्र प्रज्ञा वाले। सदैव और सर्वत्र उपयोगवान, जागृत, सजग। (गाथा क्रमांक 3, 7 और 25)

**6. महर्षि (महेसी) :** समस्त ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ, महानतम ऋषिवर, परम महर्षि। (गाथा क्रमांक 3, 17 और 26)

**7. अनन्तज्ञानी (अणंतणाणी) :** सर्वज्ञ। परम आत्मबोध से अनन्त को जानने वाले। जिनके ज्ञान का कोई अन्त और ओर-छोर नहीं है। (गाथा क्रमांक 3)

**8. अनन्तदर्शी (अणंतदंसी) :** आत्मचक्षु से, अनेकान्त से अनन्त को देखने वाले। जिनका दर्शन अनन्त का दर्शन है। (गाथा क्रमांक 3)

**9. यशस्वी (जसंसि) :** विपुल और विमल यश के धनी। महायशस्वी। (गाथा क्रमांक 3)

**10. लोकनाथ (चक्खुपहे ठियस्स) :** भगवान महावीर जगत् के, जन-जन के नयन-पथ में स्थित (चक्खुपहे ठियस्स) अर्थात् सबकी आँखों के तारे, लोकप्रिय, लोकनाथ और लोक-श्रद्धा के अनन्य केन्द्र थे। (गाथा क्रमांक 3)

**11. प्रज्ञावान (पण्णे) :** उत्कृष्ट प्रज्ञा के धनी। यहाँ केवलज्ञानी के अर्थ में भी ‘प्रज्ञावान’ कहा गया है। (गाथा क्रमांक 4)

**12. सर्वदर्शी (सव्वदंसी) :** सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को सुस्पष्ट देखने वाले। (गाथा क्रमांक 5)

**13. अभिभूत ज्ञानी (अभिभूयणाणी) :** चार ज्ञान को पराजित करके केवलज्ञानी बनने वाले। समस्त अज्ञान और मिथ्या ज्ञान को पराजित करने वाले। (गाथा क्रमांक 5)

**14. निरामगंधे :** निर्दोष चारित्र के अनुपालक, धारक। (गाथा क्रमांक 5)

**15. धृतिमान (धिइमं) :** असीम अनुपम धैर्य को धारण करने वाले। (गाथा क्रमांक 5)

**16. स्थितात्मा (ठियप्पा) :** अपने आत्मा में, आत्मस्वरूप में स्थित (लीन)। (गाथा क्रमांक 5)

**17. सर्वोत्तम विद्वान् (अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं) :** समस्त जगत् में सकल पदार्थों के ज्ञाता। समस्त विद्याओं के स्वामी, पारगामी। आत्मविद्या के महामनीषी। (गाथा क्रमांक 5)

**18. निर्गथ (गंथा अतीते) :** बाह्य-आभ्यंतर समस्त ग्रंथियों (परिग्रहों) से मुक्त और सर्वथा अपरिग्रही। ग्रंथ (पुस्तक) की सीमाओं से परे। जिनकी कालजयी जीवन-साधना और अनंत उपकारों को ग्रंथों में गूँथना या लिपिबद्ध करना असंभव हो। (गाथा क्रमांक 5)

**19. अभय (अभए) :** सात भयों यानी सभी प्रकार के भयों से रहित। सबको भयमुक्त करने वाले, अभय के साधक और उद्बोधक। (गाथा क्रमांक 5)

**20. अनायु (अणाऊ) :** चारों गतियों के आयुष्यबंध से रहित। आयु पर विजय पाने वाले। भवबंधन से मुक्त। सिद्धगति को प्राप्त। (गाथा क्रमांक 5 व 29)

**21. भूतिप्रज्ञ (भूइपण्णे) :** अतिशय प्रवृद्ध प्रज्ञा-सम्पन्न। सर्वमंगलमयी प्रज्ञा-सम्पन्न। विश्वरक्षामयी प्रज्ञा से सम्पन्न। संसार में जीवरक्षा की विमल बुद्धि वाले। प्रभूत ज्ञानी। (गाथा क्रमांक 6, 15 और 18)

**22. अनियताचारी (अणिएयचारी) :** अप्रतिबद्ध विहारी। परम स्वतंत्र। (गाथा क्रमांक 6)

**23. ओघतरं (ओहंतरे) :** संसार सागर को पार करने और कराने वाले। (गाथा क्रमांक 6)

**24. धीर (धीरे) :** पाँचवीं गाथा में प्रभु को

धृतिमान का विशेषण दिया गया। यहाँ उसके ही पर्यायवाची रूप में उन्हें अखूट धैर्यवान कहा गया। (गाथा क्रमांक 6)

**25. अनन्त-वक्षु (अणंतवक्खू) :** अनन्त ज्ञानवान। केवलज्ञान रूपी नेत्रों से अनन्त ज्ञेय पदार्थों को देखने-जानने वाले। एक को भी अनन्त दृष्टियों से जानने और देखने वाले। तीसरी गाथा में 'अनन्तदर्शी' शब्द भी इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। (गाथा क्रमांक 6 एवं 25)

**26. तेजस्वी सूर्य (अणुत्तरं तप्पइ सूरिए) :** अपनी अनुत्तर तप-साधना से सूर्य की तरह तपने वाले। जगमगाते ज्ञानसूर्य। सर्वाधिक देदीप्यमान। (गाथा क्रमांक 6)

**27. ज्ञान-प्रकाशक (तमं पगासे) :** भगवान सूर्य की भाँति अंधकार को प्रकाश में बदल देते थे। अज्ञान विनाशक। अज्ञान अंधकार को नष्ट करने वाले और सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले। (गाथा क्रमांक 6)

**28. काश्यप (कासव) :** काश्यप गोत्रीय होने ने भगवान को 'काश्यप' भी कहा गया है। (गाथा क्रमांक 6)

**29. नेता (णेया) :** जैसे हजारों देवताओं में इन्द्र महाप्रभावशाली एवं विशिष्ट नायक हैं, उसी प्रकार भगवान महावीर उत्तम धर्म-शासन को आगे ले जाने वाले, मोक्षमार्ग का नेतृत्व करने वाले महाप्रभावशाली सर्वोत्तम नेता हैं, अनुपम मार्गदर्शक हैं। (गाथा क्रमांक 7)

**30. मुनि और मुनिश्रेष्ठ :** मौन रहने वाले, मनन करने वाले महाश्रमण। जैसे लम्बे पर्वतों में निषध पर्वत श्रेष्ठ है तथा वलयाकार पर्वतों में रूचक पर्वत श्रेष्ठ है, वैसे ही सभी प्रकार के मुनियों में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं। (गाथा क्रमांक 7, 15 व 19)।

**31. अक्षय सागर (अक्खय सागरे) :** ज्ञान और प्रज्ञा के अखूट सागर। (गाथा क्रमांक 8)

**32. महासागर (महोदही) :** जिसका पार न पाया जा सके ऐसे स्वयंभूरमण समुद्र की तरह भगवान महावीर की निर्मल प्रज्ञा के महासागर हैं। (गाथा क्रमांक 8)

**33. इन्द्र के समान दीप्तिमान (देवाहिवई जुइमं) :** देवेन्द्र शक्रेन्द्र के समान



द्युतिमान और तेजस्वी। (गाथा 8)

**34. महाशक्तिमान (पडिपुण्ण-वीरिए) :** परिपूर्ण सामर्थ्य और अनन्त आत्मशक्ति से युक्त। (गाथा क्रमांक 9)

**35. सर्व आनन्ददायक (सुरालए मुदागरे) :** देवताओं के लिए सुरालय (देवालय) आमोद-प्रमोद से युक्त होता है, वैसे ही भगवान महावीर, उनका दर्शन और उनके दर्शन सबके लिए आनन्दप्रदायक एवं प्रमोदजनक हैं। (गाथा क्रमांक 9)

**36. अनेक गुणों से युक्त (अणेगगुणोववेए) :** अनेक, असंख्य और अनंत सद्गुणों और विशेषाओं से युक्त। (गाथा क्रमांक 9)

**37. सुमेरु पर्वत के समान :** जिस प्रकार सुदर्शन (सुमेरु) पर्वत समस्त पर्वतों में श्रेष्ठ सर्वोच्च, सर्वोत्तम, विराट्, रमणीय तथा गहन हैं, उसी प्रकार भगवान महावीर अनेक दुर्लभ विशेषताओं, विशेषणों, नामों और अतिशयों से युक्त हैं। (गाथा क्रमांक 9-14)

**38. उत्तम धर्म के प्रतिपादक (अणुतरं धम्ममुईरइता) :** अहिंसा-प्रधान अनुत्तर, सर्वोत्तम श्रुत-धर्म और चारित्र-धर्म के प्रतिपादक और उपदेशक। (गाथा क्रमांक 16)

**39. अनुपम ध्यान-साधक (अणुतरं झाणवरं झियाइं) :** भगवान महावीर का ध्यान अत्यन्त शुभ, उज्वल, शंख की तरह धवल और चन्द्रमा की तरह निर्मल था। (गाथा क्रमांक 16)

**40. उत्कृष्ट व अग्रणी (अनुतरग्गं) :** ज्ञान, दर्शन और चारित्र के उत्कृष्ट एवं अग्रणी आराधक। (गाथा क्रमांक 17)

**41. ज्ञान और शील में सर्वोत्तम (णाणेण सीलेण य भूइपण्णे) :** जैसे वृक्षों में शाल्मली, वनों में नन्दनवन, ध्वनियों व शब्दों में मेघगर्जन, तारों में चन्द्रमा और सुगंध में चन्दन की सुगंध श्रेष्ठ है, वैसे ही ज्ञान और शील में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं। (गाथा क्रमांक 18-19)

**42. अप्रतिज्ञ (अपडिण्ण) :** इहलोक और परलोक के सुखों की प्रतिज्ञा (निदान) से रहित, पूर्णतः निष्काम, निराकांक्षी। (गाथा क्रमांक 19)

**43. तपस्वियों में सर्वश्रेष्ठ (तवोवहाणे) :** जैसे समुद्र में स्वयंभूरमण समुद्र, नागकुमार देवों में धरणेन्द्र, रसों में इक्षुरस श्रेष्ठ हैं, वैसे ही तप, उपधान और तपस्वी मुनियों में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं, सर्वविजेता हैं। (गाथा क्रमांक 20)

**44. निर्वाणवादियों में सर्वश्रेष्ठ (णिव्वाणवादीणिह) :** जैसे हाथियों में ऐरावत, वन्य पशुओं में सिंह, जलों में गंगा-जल तथा पक्षियों में वेणुदेव गरुड़ मुख्य हैं, वैसे ही निर्वाणवादियों तथा मोक्षमार्ग के प्रणेताओं में भगवान महावीर सर्वश्रेष्ठ और सर्वप्रधान हैं। (गाथा क्रमांक 21)

**45. ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ (इसीणसेट्ठे) :** जैसे योद्धाओं में विश्वसेन चक्रवर्ती, पुष्पों में अरविन्द (कमल), क्षत्रियों में चक्रवर्ती श्रेष्ठ हैं, वैसे ही ऋषियों में वर्धमान महावीर सर्वश्रेष्ठ हैं। (गाथा 22)

**46. लोकोत्तम श्रमण (लोगुत्तमे समणे) :** जैसे दानों में अभयदान, सत्य में निरवद्य वचन, तपों में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ हैं, वैसे ही ज्ञातपुत्र भगवान महावीर स्वामी लोक में सर्वोत्तम श्रमण हैं। (गाथा क्र. 23)

**47. अद्वितीय ज्ञानी (परमत्थिणाणी) :** जैसे आयुष्य की दृष्टि से अनुत्तर विमानवासी देव श्रेष्ठ हैं, सुधर्मासभा समस्त सभाओं में श्रेष्ठ है तथा सब धर्मों में निर्वाण (मोक्ष) श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार ज्ञातपुत्र भगवान महावीर से बढ़कर कोई ज्ञानी नहीं है; अर्थात् वे अद्वितीय ज्ञानी हैं। (गाथा क्रमांक 24)

**48. पृथ्वीसम आधारभूत (पुढोवमे) :** भगवान महावीर पृथ्वी की तरह महान् सहिष्णु और सभी प्राणियों के लिए आधारभूत हैं। (गाथा क्रमांक 25)

**49. समुद्रसम गंभीर :** महासागर की तरह गंभीर रहते हुए भगवान महावीर ने संसार समुद्र पार किया। (गाथा क्रमांक 25)

**50. परम अनासक्त (विगत गेही) :** सभी प्रकार की गृद्धियों (आसक्तियों) से रहित। (गाथा क्रमांक 25)

**51. पूर्णतः असंग (ण सण्णिहिं कुव्वड) :** भौतिक पदार्थों एवं भावात्मक विकारों की सन्निधि (निकटता) नहीं करने वाले। परम असंग्रही। असंग्रह के उत्कृष्ट प्रतिमान। (गाथा क्रमांक 25)

**52. अभयंकर (अभयंकरे) :** अभय के साधक तथा दूसरों को अभय प्रदान करने वाले। (गाथा क्रमांक 25)

**53. वीर (वीर) :** स्वयं से, अष्टकर्मों से युद्ध करने वाले वीर, अतिवीर और महावीर। (गाथा क्रमांक 25)

**54. अर्हन्त (अरहा) :** कषायों और दोषों से सर्वथा मुक्त सर्वपूज्य, विश्ववन्द्य तीर्थंकर। जिन्होंने न तो स्वयं पाप किया और न ही किसी से करवाया। सर्वथा निष्पाप। (गाथा क्रमांक 26)

**55. सर्वपापों के निवारक (ण कुव्वड पाव ण कारवेड) :** भगवान महावीर ने सभी प्रकार के पापों और पापस्थानों का सर्वथा त्याग कर दिया। उन्होंने न तो स्वयं पाप किया, न ही किसी से करवाया और न ही पाप करने का अनुमोदन किया। वे सर्वथा पापमुक्त एवं नितान्त निष्पाप थे। (गाथा क्रमांक 26 व 28)

**56. समस्त वादों के ज्ञाता (सव्ववायं इड वेयइत्ता) :** भगवान महावीर क्रियावाद, अक्रियावाद, विनयवाद, ज्ञानवाद आदि समस्त वादों और मतों के मर्मज्ञ थे। वे उन वादों और मतों के प्रत्येक पक्ष को भी सम्यक् रूप से जानते थे। (गाथा क्रमांक 27)

**57. संयम में सुस्थित (उवट्टिए संजम दीहयं) :** भगवान महावीर ज्ञान और सजगता के साथ जीवनपर्यंत संयम में उद्यत और स्थित रहे। (गाथा क्रमांक 27)

**58. इहलोक व परलोक के ज्ञाता (लोगं विदिता) :** भगवान महावीर इहलोक,

परलोक, उभयलोक एवं इन लोकों के चातुर्गतिक संसार के अशाश्वत सुख-दुःख को भलीभाँति जानते थे। वे लोकोत्तर पथ के अलौकिक पथिक थे। (गाथा क्रमांक 28)

**59. पंचव्रतों के प्रतिपादक (से वारिया इत्थी...):** भगवान महावीर ने चातुर्याम व्रत व्यवस्था में ब्रह्मचर्य को स्वतंत्र स्थान दिया- (से वारिया इत्थी... )। (गाथा क्रमांक 28)

**60. रात्रिभोजन त्याग के प्रतिष्ठापक :** भगवान महावीर ने रात्रिभोजन निषेध को श्रमण जीवन में छठे महाव्रत के रूप में प्रतिष्ठित किया। (गाथा क्रमांक 28)

वीरस्तुति एक उत्तम भक्तिकाव्य है। इस प्राचीन स्तुति में आत्मविद्या, धर्म, दर्शन, सिद्धांत और परम्परा का ज्ञान भी गुंफित है। भगवान महावीर की विशेषताओं, विशेषणों, उपमाओं, उपकारों और अवदानों के साथ ही इसमें अनेक मनोहर साहित्यिक छटाओं, सैद्धांतिक व दार्शनिक मान्यताओं एवं नैसर्गिक परिवेश का सुरुचिपूर्ण समावेश हुआ है। इसमें भगवान महावीर व्यक्तिवाचक होते हुए भी उनका गुणवाचक स्वरूप उजागर हुआ है। इस मंगलकारी काव्य को लय, भाव और श्रद्धा-भक्ति के साथ गाकर-गुनगुनाकर, सुनकर-सुनाकर भक्तियोग और भावनायोग की साधना की जा सकती है।

सूत्रकृतांग सूत्र (1/15/5) में कहा गया है-

**भावणाजोगसुद्धप्पा, जले णावा व आहिया।  
नावा व तीरसंपत्ता, सव्वदुक्खा तिउट्टति।।**

भावना योग से शुद्ध आत्मा की स्थिति जल में नौका के समान है। नाव जैसे ही किनारे पहुँचती है, वह आत्मा समस्त दुःखों से मुक्त हो जाता है। वस्तुतः समस्त ज्ञान, दर्शन और चारित्र का सार यही है कि आत्मा दुःखों से मुक्त बने। भावशुद्धि और दुःखमुक्ति का एक पुनीत माध्यम है- वीर स्तुति यानी भगवान महावीर की स्तुति।

**नोट-** गर्भवती महिलाएं यह स्तुति अवश्य पढ़ें। स्वाध्याय काल में पुच्छिसु णं की स्तुति धर्माराधना की दृष्टि से उत्तम है।

लेखक महोदय ने अपनी दृष्टि से 60 विशेषणों को उल्लेखित किया है। उपरोक्त लेख में जिनवाणी के विरुद्ध कुछ भी लिखा हो तो मिच्छामि दुक्कडम्।

## धर्म का अधिशोषण या अवशोषण?

-मुस्कान जैन, गीदम

रसायनशास्त्र की दुनिया में दो शब्द अक्सर सुनने को मिलते हैं- **1. अधिशोषण, 2. अवशोषण।** अधिशोषण के अंतर्गत आरोपित कण पदार्थ की सतह पर ही रहते हैं (जैसे- फेस मास्क, दीवार में पेंट); वहीं अवशोषण में आरोपित कण पदार्थ द्वारा सौंख लिए जाते हैं (जैसे- स्पंज में पानी, रसगुल्ले में चाशनी)।

अन्य दृष्टि से देखें तो बनी हुई रोटी के ऊपर नमक लगाना अधिशोषण है और आटे में पहले ही नमक डालकर रोटी बनाना अवशोषण है। जिसमें दूसरी वाली रोटी ज्यादा स्वादिष्ट लगेगी।

अब प्रश्न यह उठता है कि हम धर्म का, धर्म के सिद्धांतों का अवशोषण कर रहे हैं या अधिशोषण? आत्मा रूपी पदार्थ धर्म रूपी कण को आत्मसात् कर रही है या सिर्फ बाहरी सतह तक सीमित रख रही है? इसका जवाब हमें निम्नलिखित प्रश्न दे सकते हैं-

(1) 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' अर्थात् क्षमायाचना को हम सिर्फ अपनी वाणी और व्हाट्सएप तक सीमित रखते हैं या इसे आत्मसात् भी करते हैं?

(2) सामायिक में समभाव की प्राप्ति करते हैं या प्रतिदिन कई सामायिक करके अपने मन को तसल्ली देते हैं?

(3) गुरु भगवंतों के प्रवचन सिर्फ डायरी या स्टेटस तक सीमित रखते हैं या असल जीवन में भी उसे उतारते हैं?

(4) प्रतिदिन हमारा लक्ष्य सिर्फ प्रतिक्रमण करना होता है या दिनभर में किए गए पाप को धोना?

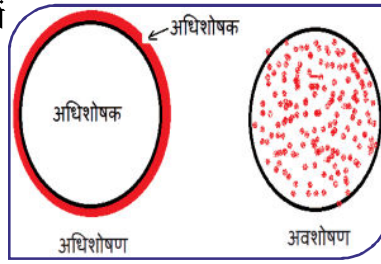
विचार-मंथन करने पर जवाब में बस मुस्कराहट ही शेष रहती है, जो इन प्रश्नों पर गंभीरता से चिंतन न करने अर्थात् अधिशोषित करने का परिणाम है। हम उस धर्म के अनुयायी हैं, जिसमें चण्डकौशिक जैसे हत्यारे को भी मोक्ष प्राप्ति हुई एवं राजा श्रेणिक जैसा महान राजा भी

पूणिया श्रावक की सामायिक का मोल नहीं दे पाया।

अतः आवश्यकता है धर्म के अर्थ को न सिर्फ समझने की, बल्कि आत्मसात् करने की एवं धार्मिक सिद्धांतों को अवशोषित करने की,

क्योंकि इनका नकारात्मक परिणाम यह हो रहा है कि भावी पीढ़ी अन्य क्षेत्रों की भांति ही अधिशोषण करने की क्षमता में भी हमसे दो कदम आगे है और पर्युषण जैसा पर्व भी उनको सिर्फ जमीकंद त्याग करना और उपवास करना तक सीमित रखता है।

अतः आवश्यकता है कि इस शीर्षक (धर्म का अधिशोषण या अवशोषण) को, इस विचार को गुरु-भगवंतों के विचार को, धार्मिक सिद्धांत को अवशोषित करने की, न कि अधिशोषित करने की। ताकि हमारा मन (आत्मा) 'माला फेरत जुग भया' से 'जड़मति होत सुजान' का सफर तय कर पाए और हम सच्चे अर्थों में जैन बन पाएं।



## इंस्टेंट ज्ञान, बढ़ता अज्ञान

—सजग, नीमच

किसी शब्द का अर्थ जानना हो, किसी तथ्य अथवा सूचना के बारे में जानना हो, बच्चों के मैथ्स साइंस के फॉर्मूले जानने हो या फिर किसी व्यंजन की विधि जाननी हो तो एक इंस्टेंट समाधान है 'इंटरनेट'।

सूचना क्रांति के वर्तमान दौर में इंटरनेट मानव के दैनिक जीवन का अनिवार्य भाग बन गया है। इसकी भागीदारी का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों के लिए इंटरनेट के बिना जीवन की कल्पना करना भी असम्भव हो गया है। इंटरनेट भोजन पानी की तरह अनिवार्य आवश्यकता बनता जा रहा है। कुछ लोगों के लिए तो यह भोजन से भी अधिक महत्वपूर्ण बन गया है। वे लोग भोजन तो छोड़ सकते हैं, लेकिन इंटरनेट छोड़ पाना उनके लिए अत्यंत कठिन कार्य है।

वर्तमान में लोगों ने अपने मस्तिष्क का सामान्य कार्य भी इंटरनेट को सौंप दिया है। वे अब छोटी-छोटी जानकारियों के लिए भी इंटरनेट पर निर्भर हो गए हैं।

इंटरनेट ने सूचना की प्राप्ति को अत्यंत सरल बना दिया है, किन्तु अधिकांश लोगों द्वारा सुविधा के स्थान पर इसे अनिवार्य आवश्यकता मान लिया गया है। इंटरनेट पर अत्यधिक मात्रा में सूचनाएं उपलब्ध रहती हैं, जिसके चलते अनेक बार भ्रम की स्थिति बन जाती है तथा सही सूचना के बारे में निर्णय करना कठिन हो जाता है। इस कारण कई बार गलत सूचना से लोग स्वयं की हानि कर लेते हैं।

वर्तमान समय में अतिशीघ्रता के कारण लोग कोई भी सूचना या जानकारी तीव्रता से प्राप्त करना चाहते हैं, जिसके लिए वे इंटरनेट तथा गूगल का सहारा लेते हैं। सहयोग तक ठीक है, लेकिन वर्तमान समय में यह

बैसाखी बनता जा रहा है। व्यक्ति सामान्य जानकारी के लिए भी गूगल पर निर्भर होता जा रहा है।

इंटरनेट ने सभी आयु वर्गों अर्थात् बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को प्रभावित किया है। बच्चों द्वारा जिज्ञासा शांत करने के लिए पुस्तक के स्थान पर इंटरनेट का सहारा लिया जाने लगा है। युवा वर्ग सोशल मीडिया पर व्यस्त है। महिलाएं किसी व्यंजन को बनाने की विधि जानने के लिए भी इंटरनेट (यूट्यूब) का सहारा लेने लगी हैं।

इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग अनेक प्रकार की समस्याओं का कारण बनता जा रहा है। यथा—

- 1) बौद्धिक आलस्य
- 2) स्मरण शक्ति में कमी
- 3) अधीरता में वृद्धि
- 4) तनाव में वृद्धि
- 5) रचनात्मकता में कमी
- 6) मौलिकता का अभाव
- 7) मानसिक समस्याएं
- 8) सोचने की शक्ति में कमी
- 9) कार्य की उत्पादकता में कमी
- 10) ऑनलाइन गेम्स की लत

उपरोक्त समस्याएं सभी आयु वर्गों को किसी ना किसी रूप में प्रभावित कर रही हैं। भारत सहित विश्वभर में इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के प्रभाव को जानने के लिए अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा शोध किए गए हैं तथा लेखकों द्वारा इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग के दुष्प्रभाव पर पुस्तक लिखी गई हैं, जिनमें से कुछ अध्ययन निम्नानुसार है—

(1) यूएस नेशनल लाईब्रेरी ऑफ मेडिसिन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ की रिपोर्ट के अनुसार 8 से लेकर 28 वर्ष की आयु के लोगों द्वारा एक सप्ताह में 44.8 घंटे से अधिक समय डिजिटल स्क्रीन के सामने व्यतीत किया जा रहा है।

(2) एक रिपोर्ट के अनुसार 23 प्रतिशत युवाओं को लगता है कि उन्हें वीडियो गेम की लत लग गई है।

(3) भारत में 18 से 30 वर्ष की आयु के युवाओं पर किए गए अध्ययन के अनुसार 5 में से 3 युवा स्मार्टफोन के बिना नहीं रह सकते। उन्हें लगता है कि उनके शरीर का कोई हिस्सा गायब हो गया हो। इनमें से 96 प्रतिशत युवा ऐसे हैं, जो सुबह उठकर फेसबुक, व्हाट्सएप या ट्विटर पर जाते हैं।

4) 120 युवाओं के समूह पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार लगभग 70 प्रतिशत युवा प्रतिदिन सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। लगभग 42 प्रतिशत युवा प्रतिदिन ऑनलाइन गेम का उपयोग करते हैं। लगभग 52 प्रतिशत युवा प्रतिदिन यूट्यूब का उपयोग करते हैं।

5) बाल संरक्षण पर कार्य करने वाली गैर सरकारी संस्था 'क्राई' द्वारा दिल्ली एनसीआर के बच्चों पर इंटरनेट के उपयोग के प्रभावों पर किए गए सर्वे में अनेक चौंकाने वाले तथ्य सामने आए हैं। जैसे-

(i) लगभग 48 प्रतिशत युवा इंटरनेट की लत से ग्रसित हैं तथा इससे उनके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

(ii) 13 से 18 वर्ष के 76 प्रतिशत बच्चे हर दिन औसतन 2 घंटे इंटरनेट उपयोग करते हैं। इनमें से 8 प्रतिशत बच्चे 4 घंटे इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

(iii) लगभग 93 प्रतिशत बच्चों के पास इंटरनेट की सुविधा है। इनमें से 41 प्रतिशत बच्चे इंटरनेट का उपयोग केवल फेसबुक तथा यूट्यूब उपयोग करने के लिए

करते हैं।

(iv) लगभग 80 प्रतिशत किशोर इंटरनेट का उपयोग केवल सोशल मीडिया के प्रयोग के लिए ही करते हैं।

इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग के दुष्परिणामों की सूची लम्बी है, लेकिन उपरोक्त तथ्य इसकी भयावहता को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। 'किसी सुविधा का एक निश्चित सीमा तक ही उपयोग किया जाए तो ठीक रहता है। उस पर अधिक निर्भरता व्यक्ति को कमजोर बना देती है।'

इंटरनेट की लत सभी आयु वर्गों यथा बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को प्रभावित कर रही है। इसके अधिक उपयोग से मस्तिष्क के तंत्रिका तंत्र की रीवायरिंग हो रही है, जिसके कारण मस्तिष्क के कुछ विशेष भागों में 'गामा अमिनियोब्यूट्रिक एसिड' (जीएबीए) का स्तर बढ़ जाता है।

जीएबीए असंतुलन मानव में जिज्ञासा, तनाव तथा नींद को प्रभावित करता है। इसके असंतुलन से तनाव, अनिद्रा, अधीरता, बेचैनी तथा एकाग्रता में कमी जैसी अनेक मानसिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

इंटरनेट के दुष्प्रभावों पर प्रसिद्ध लेखक निकोलस कार में अपनी प्रसिद्ध किताब 'द शैलोज' में ठीक ही लिखा है कि 'इंटरनेट हमें सनकी बनाता है, हमें अवसादग्रस्त करता है और हमें उस ओर ले जाता है जहां हम इस पर ही निर्भर हो जाएं।'

यह बात सही है कि इंटरनेट ने हमारे जीवन को सरल बनाने में हमारा सहयोग किया है, लेकिन इसका उपयोग एक निश्चित सीमा तक किया जाए तब तक ही यह ठीक है। यदि हम इसे अनिवार्य आवश्यकता मानकर इसका उपयोग करेंगे तो यह घातक सिद्ध हो सकता है।

## रात्रिभोजन त्याग की महिमा

-पायल वया, बम्बोरा

चम्पापुर नगर में एक सेठ और सेठानी रहते थे। दोनों बहुत ही धर्मात्मा और दयालु थे। उसी नगर में साफ-सफाई करने वाले गरीब मजदूर पति-पत्नी रहते थे, जो रात में साथ बैठकर खाना खाते थे। एक दिन सेठ को अपने व्यापार में किसी काम हेतु उन मजदूर पति-पत्नी की आवश्यकता पड़ी। सेठ उनके पास गया और उन्हें काम बताया। काम समझकर मजदूर ने अपनी पत्नी सुभद्रा को सेठ के साथ भेज दिया। सुभद्रा ने दोपहर तक काम किया।

सेठ दयालु था। उसने सुभद्रा को भूखा महसूस कर उससे कहा कि तू मेरे घर पर जाकर सेठानी को भोजन के लिए बोल देना तो वह तुझे खाना दे देगी, वह खा लेना।

सुभद्रा खुशी-खुशी सेठ के घर के लिए खाना हुई। रास्ते में सहेली मिल गई तो बातों-बातों में रात हो गई। जब वह रात को सेठ के घर पहुंची और सेठानी से खाना मांगा तो सेठानी ने कहा कि बहन, हम रात को खाना नहीं खाते और ना ही बनाते हैं। इसलिए अब तो मेरे पास खाना नहीं है। मैं सुबह होते ही खाना दे दूंगी। तुम रात को यहीं विश्राम कर लो।

सुभद्रा बोली कि मुझे सेठजी ने बोला था कि मेरे घर पर खाना खा लेना। मुझे भूख भी लगी है। आप मुझसे झूठ बोल रही हैं और खाना नहीं देने के बहाने बना रही हैं। तब सेठानी ने कहा कि हम लोग कभी भी रात्रिभोजन नहीं करते हैं। रात्रिभोजन-पानी का हमारे त्याग रहता है। व्याकुल होकर सुभद्रा वहीं रात गुजारने बैठ गई। कुछ देर बाद सेठ का लड़का खेलकूद कर घर आया और माँ से खाना मांगने लगा। सेठानी बोली कि मैं शाम को तुझे बार-बार बुला

रही थी तब तो तू आया नहीं। अब रात हो गई है और हम जिन कुल परम्परा से रात्रिभोजन नहीं करते। बेटा, माँ की बात सुनकर शांत हो गया।

जब ये सब सुभद्रा ने देखा तो सोचने लगी कि सेठानी ने तो अपने बेटे को भी रात को खाना नहीं खिलाया। इसका मतलब ये सत्य बोल रही है। उसके मन में प्रश्न आया कि ये लोग रात को खाना-पीना क्यों नहीं लेते? उसने सेठानी से इस बारे में पूछा तो सेठानी ने कहा कि रात में खाना मांस के बराबर और पानी पीना खून पीने के बराबर है। रात में असंख्यात जीवों की उत्पत्ति होती है, जो हमारे भोजन में गिर जाते हैं। रात्रिभोजन से महापाप का बंध होता है। रात्रिभोजन करने वाले अगले भव में दरिद्र, भिखारी, बाज, सूअर, चील जैसी नीच पर्यायों में जन्म लेते हैं। जो रात्रिभोजन का त्याग रखते हैं वे नियम से अगले भव में राजा, महाराजा, सेनापति, चक्रवर्ती, बड़े-बड़े सेठ जैसी वैभवशाली उच्च पर्यायों में जन्म लेते हैं।

इस प्रकार के वचन सुनकर सुभद्रा बोली- ओह! सेठानीजी, लगता है मैंने पहले के भव में जीवनभर रात को ही खाना खाया-पिया इसलिए आज इस



भव में भिखारी बनकर भटक रही हूं। सुभद्रा के मन में रात्रिभोजन के प्रति उदासीनता उठने लगी। वो सेठानी से बोली- 'मालकिन! आप मुझे नियम दे दो, मैं भी रात को खाने का त्याग कर अपना भव सुधारना चाहती हूं।'

सेठानी बोली- 'नहीं, ये तुमसे संभव नहीं। तुम मजदूर हो, तुम्हारे घर में अधर्म क्रिया होती है। तुम ये नियम नहीं संभाल पाओगी।' फिर भी सुभद्रा नहीं मानी और जबरदस्ती सेठानी को साक्षी मानकर नियम ले लिया और रात को वहीं सो गई। अगली सुबह सेठानी ने उसे खाना खिलाकर शाम के लिए भी अच्छा भोजन देकर भेजा।

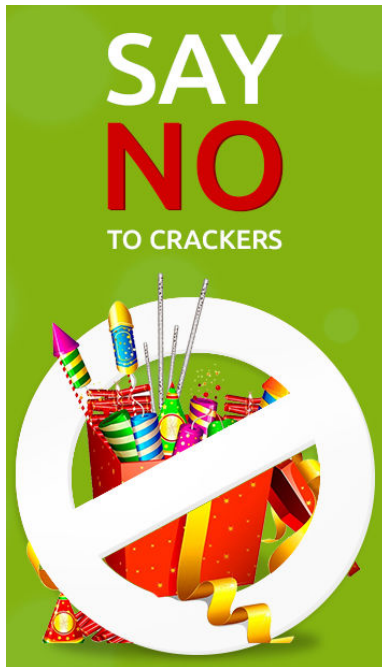
सुभद्रा भी शाम होने से पहले अपने घर लौट गई। रात को उसका पति नशे में धुत होकर घर आया और सुभद्रा ने उसे खाना परोसा तो उसके पति ने कहा कि तुम भी खाओ। तो सुभद्रा ने जवाब दिया कि मैं रात को नहीं खाऊंगी। मैंने सेठानी से यह नियम लिया है कि रात में खाना नहीं खाना।

उसका पति गुस्से में बोला- 'ये कैसे संभव है? हम

दोनों हमेशा रात में ही खाना खाते हैं। हम हमेशा साथ में ही खाना खाते हैं, फिर तुमने ऐसा क्यों किया? ऐसा कोई नियम नहीं चलेगा, तुझे मेरे साथ खाना ही होगा। नहीं तो तुम ये घर छोड़कर चली जाओ।'

सुभद्रा बोली- 'मुझे घर छोड़ना मंजूर है, पर ये नियम नहीं तोड़ूंगी।' उस मजदूर को गुस्सा आया और जबरदस्ती उसे खाना खिलाने लगा तो उसने मना कर दिया। इससे उसके पति को और गुस्सा आ गया और गुस्से में ही उसने पास पड़ी कटार से सुभद्रा के पेट में वार कर दिया, जिससे सुभद्रा लहलुहान हो गई। उस समय में सुभद्रा के मन में सेठानी के वचन ही उमड़ रहे थे और ऐसे सोचते-सोचते ही नियमपूर्वक उसका मरण हो गया। वह सुभद्रा का जीव मर कर उसी चम्पापुर की सेठानी के गर्भ में आया और सेठ की पुत्री के रूप में जन्म लिया।

कहां वह मजदूर की पत्नी और कहां एक सेठ की पुत्री! ये चमत्कार सिर्फ रात्रिभोजन त्याग का परिणाम है। सिर्फ एक दिन प्रत्याख्यान करने से इस जीव को इतना लाभ हुआ तो हम क्यों पीछे रहें? ●●●



दीपावली प्रकाश का त्योहार है,  
अंधकार की ओर क्यों जाएं हम ?  
भाईचारा, सौहार्द, त्याग और निर्वाण का हर ओर राग है,  
कुछ कदम बढ़ जाएं हम, कुछ कदम हट जाएं हम।  
त्याग, तपस्या शांति को बनाएं अहम्,  
पटाखों से थोड़ी दूरी कर जाएं हम,  
बच्चों का मन चंचल होता,  
भयावहता कर्मों की गर उन्हें भी समझाएं हम।  
निश्चय ही यह नन्हें कदम थम जाएंगे,  
गर संयम पाठ इन्हें भी पढ़ा जाएं हम,  
दीपावली प्रकाश का त्योहार है.....।

## मानसिक प्रदूषण की भयावहता

-डॉ. आभाकिरण गांधी, धागड़मऊ

सुबह की सुनहरी रोशनी, परिंदों के सुरीले गीत।  
कलियों की मुस्कुराहट, मन-मस्तिष्क में प्रभु से प्रीत।।

जीवन एक अवसर है श्रेष्ठ बनने का, श्रेष्ठ करने का, श्रेष्ठ पाने का, श्रेष्ठता के सोपान पर चढ़ने का। श्रेष्ठता के सोपान पर कब चढ़ पाएंगे? जब हमारा मन-मस्तिष्क फालतू विचारों से खाली होगा। घर में फालतू सामान कोई नहीं रखता। या तो उसे फैंक देते हैं या बेच देते हैं। ऐसे ही हमारे मन में अशुभ फालतू विचार भर रखे हैं तब तक कुछ श्रेष्ठ कार्य नहीं कर सकते। श्रेष्ठ करने के लिए हृदय में रही हुई गंदगी की सफाई करनी पड़ती है, फिर उसमें श्रेष्ठ विचारों का बीजारोपण करना पड़ता है। जैसे खेत में कहीं कचरा है तो वहां कितना ही श्रेष्ठ बीज डाल दो फसल पैदा नहीं हो सकती। वैसे ही हमारे भीतर भी जब तक बुरे संस्कारों का कचरा भरा है तो कितने ही आगम के सूत्र सुना दो, जीवन परिवर्तन होने वाला नहीं है। मन के भीतर मिथ्यात्व, अज्ञान, तिमिर की जो जड़ें गहराई में बैठी हुई हैं, उनको उखाड़कर फैंकना होगा। उनको नहीं निकाला तो मानसिक प्रदूषण की भयावहता एक जन्म नहीं अपितु अनंत जन्मों तक भटकाती रहेगी।

आज वर्तमान में बाहर का प्रदूषण स्वास्थ्य को खराब कर रहा है तो मानसिक प्रदूषण परिवार, समाज एवं राष्ट्र को खराब कर रहा है। जहां देखो वहां भय के दृश्य नाच रहे हैं। छोटे-बड़े सभी भयभीत हैं।

**मानसिक प्रदूषण की आंधी ने  
हर घर को बर्बाद किया**

**हिंसा, घृणा, वैर, वैमनस्य का  
भयावह दृश्य खड़ा किया**

यह भय कब मिटेगा? जब हमारी सोच सम्यक् होगी, प्राणीमात्र के प्रति हमारा वात्सल्य भाव होगा, प्रेम सदाचारमय जीवन होगा, तभी इस भय से हम निर्भय बन पाएंगे। यह भाव ही शांति की धारा का सिंचन करता है। अखण्ड आनंद और माधुर्य का राज्य उनके पास है, जो हृदयवान हैं। धर्म का शुभारंभ मात्र पुस्तकों, स्थानक, आसन या मुँहपत्ती से नहीं वरन् धर्म की शुरूआत व्यक्ति के अन्तर्हृदय से होती है। व्यक्ति के हृदय में ही अध्यात्म का बीजारोपण होता है। इस बीजारोपण के अभाव में मानसिक प्रदूषण फैल रहा है, जिससे संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, बड़े-बुजुर्गों की उपेक्षा हो रही है, भाई-भाई में तकरार है, सास-बहू में अनबन हो रही है तथा चारों ओर भय के बादल छाए हुए हैं।

सम्यक् सोच, समता दर्शन और व्यवहार को जीवन में लाए बिना सुख-शांति मिलने वाली नहीं है। मानसिक प्रदूषण जीवन को नरक बनाता है। इस प्रदूषण को मन से निकालना होगा तभी हम सुख-शांति का अनुभव करते हुए आनंद के गीत गुनगुना कर जीवन को स्वर्ग बना पाएंगे। बाह्य प्रदूषण में व्यक्ति का दम घुटता है, जिससे वह जल्दी से जल्दी उबरना चाहता है, लेकिन मानसिक प्रदूषण की ओर हमारा ध्यान ही नहीं है। इसी कारण हम संसार में चक्र लगा रहे हैं। इस चक्र को मिटाने के लिए





अरिहंत परमात्मा ने सूत्र दिया- 'कोऽहं' अर्थात् 'मैं कौन हूँ'। हम बाह्य शरीर की आकृति को ही सर्वस्व मानकर जी रहे हैं। इस देह के भीतर वह अमूर्त तत्त्व समाया हुआ है, जिसमें आनंद के गीत गूंजते हैं। जब हम मन का प्रदूषण मिटाएंगे तभी निजता में रमण कर पाएंगे।

मन, वचन, कर्म में हमें अहिंसक शैली अपनानी होगी। अहिंसा वह शस्त्र है, जो अर्जुनमाली, चण्डकौशिक जैसे लोगों को भी बदल सकता है। आज के विषम वातावरण में अहिंसा, त्याग, क्षमा, सहिष्णुता

के शस्त्रों का प्रयोग करके मानसिक प्रदूषण को मिटा सकते हैं। अन्तर्हृदय से बढ़कर कोई तीर्थ या धाम नहीं है। इसकी पवित्रता से मन का प्रदूषण मिट सकता है। हम अज्ञानी जीवों को संसार सागर को पार करना सद्गुरु एवं जिनवाणी के सहारे बिना संभव नहीं है। मन में अथाह ऊर्जा भरी हुई है। उस ऊर्जा के प्रवाह को प्रदूषण से बदलने का काम सत्संग व महापुरुष ही कर सकते हैं। जो इसका संग करता है वह मन का प्रदूषण मिटा सकता है।



॥ जय गुरु नाना ॥



राम चमकते भानु समाना

॥ जय महावीर ॥

**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति**  
( अंतर्गत श्री अ.भा.सा.जैन संघ )

॥ जय गुरु राम ॥



भुक्ति कर्म श्री जय नाना  
Bhawan Karam  
जय चक्र ते खुनु चक्रान

# वीर

## निर्वाण

## दिवस

सामूहिक

तेला

तप

आराधना

लक्ष्य-2551

दिनांक-22,23,24 अक्टूबर 2022

अधिक से अधिक संख्या में सामूहिक तेला तप आराधना करें।

.....

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति ◆ श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

## दीपावली का बदलता स्वरूप

—नेहा संखलेचा, नागौर

धन बढ़ा, वैभव बढ़ा, घटा ज्ञान संस्कार।  
व्यक्ति बाहर से सुखी, भीतर बढ़ा अंधकार।।

आध्यात्म जगत् में आत्मा का स्तर न छोटा होता है न ही बड़ा। भगवान महावीर ने कहा है— सभी आत्माएं एक समान होती हैं। जैसे दीपकों की बनावट में फर्क हो सकता है, पर उनकी ज्योति में कोई फर्क नहीं होता है। ज्योति सब दीपकों में एक जैसी होती है। हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई, ये सब दीये हैं। दीयों का आकार प्रायः अलग-अलग होता है, मगर आत्मज्योति में कोई अंतर नहीं है।

पहले दीपावली का त्योहार तप व त्याग के साथ मनाया जाता था, लेकिन आज फैशनपरस्ती, दिखावा, पटाखे फोड़ना, महंगे-महंगे कपड़े पहनने तक ही सीमित रह गया है। पहले दीपावली पर 3 दिन तक तेल किया जाता था। भगवान महावीर की अन्तिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र के रूप में प्रवाहित हुई थी। भगवान महावीर ने हस्तिपाल राजा के यहां चौमासा किया और बाह्य पुद्गलों का त्याग किया। 9 मल्लि, 9 लच्छि - 18 देशों के राजा भगवान महावीर के चरणों में पहुंचे। उन सभी राजाओं ने पौषध की आराधना की, लेकिन आज के समय में व्यक्ति साधु-संतों का सान्निध्य प्राप्त होते हुए भी उनके पास जाना नहीं चाहता। अवकाश होने पर घर में ही रहना, नींद लेना, खाना-पीना, सैर-सपाटा करना आदि तक ही सीमित रह गया है। वह केवल पटाखे, फोड़ने एवं जीवहिंसा के कार्य में लगा रहता है। आज धर्म के संस्कार का अभाव घर के बड़ों में भी होने लगा है, जिससे बच्चों को धर्म का माहौल नहीं मिलता और वे अपने ही कार्यों में सिमट कर रह गए हैं। आज व्यक्ति अपने मन को धर्म में लगाना ही नहीं चाहता या

फिर ये कहें कि उसे वैसा माहौल नहीं मिल पाता। जिसका मन हमेशा धर्म में लगा रहता है, उसे देवता भी नमन करते हैं। कोई ज्ञानी हो, दानवीर हो, तपस्वी हो, फिर भी आवश्यक सूत्र को नहीं साधा तो विराधक बन जाएगा। क्या आज हम कोई ऐसी प्रवृत्ति तो नहीं कर रहे हैं जो हमें गर्त में गिरा दे? हमारी आत्मा की प्रवृत्तियां ही हमें सुख व दुःख दिला सकती है। जैसे— सीता ने रावण के यहां रहते हुए भी अपने सतीत्व की रक्षा की, ऐसे आदर्श प्रस्तुत करें। राम द्वारा अपने पिता के वचनों का सत्कार करना व 14 वर्षों तक वनवास में चले जाना कोई मामूली बात नहीं है। भाई-भाई का मान-सम्मान, भाई के साथ वनगमन, सीता द्वारा अपने पति राम का पूर्णरूपेण साथ निभाना, राजसी वैभव छोड़ राम के संग वनवास जाना व लक्ष्मण का भ्राता के प्रति अपना कर्तव्य समझना, क्या ऐसा आदर्श आज के परिप्रेक्ष्य में संभव है। भाई-भाई, पिता-पुत्र, पति-पत्नी के आदर्श बनें व माता-पिता का सम्मान कर रामायण का आदर्श प्रस्तुत करें। त्याग जीवन में अत्यावश्यक है।

चाँद बड़ा है, सूरज बड़ा है,  
तुम क्यों छोटे से लगते हो।  
तुम उससे भी अनन्त गुणा हो,  
सोचो, अब क्यों नहीं जगते हो।।

कई श्रावक ऐसे उत्कृष्ट होते हैं, जो दीपावली पर तीन दिन पौषध की आराधना करते हैं। कई श्रावक उत्तराध्ययन सूत्र की वांचना सुनते हैं, तले करते हैं। आज हम सभी को जागृत होने की आवश्यकता है। दूसरों को भी प्रेरणा देने का ध्येय रखें, जिससे हम सभी धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ें व अपने श्रावकत्व को मजबूत करें।



## जीत गए मुकाबला भोले कबूतर

स्लेटी रंग के कोमल पंखों से ढके तन वाला कबूतर बड़ा सीधा-सादा, भोला-भाला सरल स्वभाव वाला होता है। उसमें न तो कौवे जैसी चालाकी होती है, न बगुले-सी धूर्तता। वह गिद्ध, कौवे और बाज जैसे पक्षियों की तरह मांसाहारी भी नहीं होता। मात्र यत्र-तत्र बिखरे अनाज के दानों पर जीवन जीने वाला यह पक्षी अपनी विशिष्टताओं के कारण सदैव ही मानव का मित्र रहा है।

प्राचीन सभ्यता के धनी मिश्र आदि देशों में प्राचीन भव्य भवनों में अंकित भित्ति-चित्र इस तथ्य एवं सत्य की पुष्टि करते हैं कि किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार की पीड़ा पहुंचाए बिना जीवन जीने वाला यह पक्षी वृक्षों पर बसेरा न करते हुए नगर की ऊंची इमारतों और कुओं की कोटरों में ही बसेरा कर हमेशा मानव जाति से जुड़ा रहा है। यह निकटता ही उसे अनादिकाल से मानव से मित्रता के सूत्र में जोड़े हुए है।

अतीत में जब टेलीग्राम का आविष्कार नहीं हुआ था, ये पालतू कबूतर ही थे जो एक मानव से दूसरे मानव के मध्य संदेशवाहक का काम बखूबी करते थे तब युद्ध-क्षेत्रों में अपने भिन्न-भिन्न सैनिक पड़ावों पर शत्रु-पक्ष की गुप्त सूचनाएं कबूतरों द्वारा ही पहुंचाई जाती थी। इतिहास साक्षी है कि वाटरलू युद्ध विजय का संदेश सर्वप्रथम कबूतर ने ही एक व्यावसायिक संस्था को पहुंचाया था।

अपने इन्हीं विशिष्ट गुणों के कारण कबूतर ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांतिदूत होने की उपलिब्ध प्राप्त कर ली। तभी तो विश्व के किसी भी भाग में आयोजित शांति-सम्मेलनों के आगाज पर शांति के प्रतीक श्वेत कपोतों को उड़ाकर किया जाता है।

इसे पीड़ाकारी विडम्बना नहीं तो क्या कहूं कि मानव जाति से कुछ भी नहीं मांगने वाला यह भोला परिन्दा कबूतर, विश्वप्रसिद्ध नगर टूरिन (इटली) के नगर

मेयर को रास नहीं आया। नगर के भव्य भवनों और चौराहों को कबूतरों की बीट की गंदगी से बचाने एवं नागरिकों को प्रसन्न करने के लिए राजनैतिक स्थिति सुदृढ़ करने की भावना से एक अध्यादेश जारी कर नागरिकों द्वारा कबूतरों को दाना डालने पर पाबंदी लगा दी और इस अध्यादेश का उल्लंघन करने पर 142 डालर जुर्माने का प्रावधान था।

कबूतरों के झुण्ड के लिए विश्वप्रसिद्ध इस नगर में अनादिकाल से पीढ़ी-दर-पीढ़ी आश्रय लेने वाले 25 से 60 हजार कबूतरों के लिए यह अध्यादेश एक कहर था। यह सीधी-साधी उनको नगर से बाहर करने की एक धिनौनी साजिश एवं उनके बसेसों को हमेशा के लिए उजाड़ने की क्रूर, काली करतूत थी।

सत्ता के नशे में जारी इस क्रूर, अधिनायकवादी अध्यादेश ने एक दयालु, संवेदनशील नागरिक को तिलमिला दिया। उसने कबूतरों के साथ घोर क्रूरता, निर्ममता और निर्दयता बरतने वाले इस अध्यादेश की वैद्यता को मानवाधिकार के अन्तर्गत न्यायालय में चुनौती दे डाली। उनका कथन था कि कोई संस्था, अधिकारी या कानून कबूतरों को दाना डालने के मानव के इस स्वतंत्र अधिकार पर पाबंदी नहीं लगा सकती। उस समय न्यायालय ने दोनों पक्षों को सुनकर आदेश दिया कि “कबूतरों को दाना डालना हर व्यक्ति का स्वतंत्र अधिकार है। अध्यादेश द्वारा इस अधिकार पर अतिक्रमण नहीं किया जा सकता।”

ऐसा कर उन्होंने अध्यादेश को रद्द करते हुए हजारों कबूतरों को अभयदान दिया। उजड़ने वाले बसेरे फिर से आबाद हो गए। निर्दयता, निर्ममता और तानाशाही हार गई। कबूतर मुकद्मा जीत गए और पक्षी जगत् के इतिहास में दया, करुणा और मानवता का एक और स्वर्णिम पृष्ठ जुड़ गया।

साभार- श्रमणोपासक 1987

आओ तुमको ले चलूं,  
एक अनोखी यात्रा पर  
हुक्मसंघ के पाट पर जहां  
विराजे हैं नवम् पट्टधर।

**हु** विशाल संघ के संस्थापक जो  
कहलाए महान क्रियोद्धारक,  
संयम साधना में जीवन जीया  
प्रतिदिन दो सौ नमोत्थु णं किया,  
बारह महीने एक चादर का आगार  
हमारे आचार्य श्री हुक्मी ने लिया।

दूसरे विराजे आचार्य शिवलालजी  
जिज्ञासाओं को शांत करने में कमाल जी  
33 वर्षों तक एकान्तर तप लगातार  
स्वाध्याय के प्रति रुचि थी अपार।

**उ** भोग से योग की ओर उन्मुख हुए  
मोहमाया त्याग संयम को चुने,  
क्षणभर में 12 व्रतों को अंगीकार कर  
निद्रा विजेता से वो उदय हुए।

चौथे विराजे आचार्य श्री चौथमलजी  
संघ का विकास किया प्रतिपल,  
ना अपनाया अस्वस्थता में भी शिथिलाचार  
संयम को सदैव रखा अविचल।

छह वर्ष की आयु में किया सामायिक पाठ  
जीवन में लगाया ब्रह्मचर्य का ठाठ,  
अष्टम् पट्टधर की करी भविष्यवाणी  
प्रवचनों से इनके, तिरे अनेक प्राणी  
दीक्षा की हठ में किया सत्याग्रह स्वीकार  
ऐसे थे श्रीलालजी पंचम आचार्य।

जेवर के रूप में जवाहर चमके  
इनकी वाणी से नेता भी दमके,  
आध्यात्मिक नव जागृति के साथ  
दिया धर्म को बहुआयामी आकार,  
जनता के दूषित विचारों का  
षष्ठम् पट्टधर ने किया संहार।

**ग** श्रमण संघ को मिली नई बाट  
आचार्य गणेश विराजे सातवें पाट,  
एक आचार्य नेश्राय सिद्धांत में  
फूँके थे आपने प्राण,  
एक ही नगर में था आपका  
जन्म, दीक्षा और महाप्रयाण।

समता शब्द बना इनका पर्याय  
नाना रूप में धर्मपाल प्रतिबोधक कहलाए,  
आपके साहित्य, आपकी कृतियां  
अविस्मरणीय अष्टम् पट्टधर की स्मृतियां,  
अनेक को आगार से अनगार बनाया  
बलाई जाति को सदाचार सिखलाया।

हुक्मगच्छ के नवम् पट्ट-नायक  
कहलाए जग में उत्क्रांति प्रदायक,  
सिरीवाल समाज का उत्थान किया  
युवाओं को व्यसनमुक्ति संकल्प दिया,  
समाज कल्याण हेतु दिए विभिन्न आयाम  
आगम रहस्य के ज्ञाता हैं, हमारे गुरु राम।

**राम चमकते  
भानु समाना**

## उदयपुर वर्षावास : राम महोत्सव में हुए अनेक कीर्तिमान स्थापित, संघ समर्पणा महोत्सव संपन्न, 77 दिनों में 77 मासखमण तप एवं 261 लोच पूर्ण, मुमुक्षु वर्षाजी भंडारी की दीक्षा 4 दिसंबर 2022 के लिए घोषित

एक लक्ष्य, एक दृष्टि के अनुसार ही संघ में गतिशीलता हो -आचार्य श्री रामेश

हमारा जीवन सादा जीवन, सादा भोजन और उच्च विचारों वाला हो -उपाध्याय प्रवर

वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्थान, हिरण मगरी सेक्टर-4, उदयपुर।

ज्ञान और क्रिया के संगम, जिनशासन का तेज सितारा।

कलयुग में श्री रामचरण में, सत्युग का है सदा नजारा॥

रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, आराध्यदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-16 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-71 के राम महोत्सव चातुर्मास में आध्यात्म की पावन गंगा निरंतर प्रवाहित हो रही है। धर्मप्रेमी जनता त्यागी महापुरुषों के पावन सान्निध्य को प्राप्त कर आत्मतृप्त हो रही है। अन्य कई दीर्घ तपस्याएं गतिमान हैं। शिविरों का क्रम जारी है। मुमुक्षु वर्षाजी मनसुखजी-मनीषाजी भंडारी, शिरूड़ की जैन भागवती दीक्षा 4 दिसम्बर 2022 के लिए घोषित होने से जन-जन खुशियां व्याप्त हो गईं। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का तांता लगा हुआ है। आचार्य भगवन् के आगामी चातुर्मास हेतु अनेक संघों की विनतियां गुरुचरणों में निरंतर हो रही हैं।

**16 सितम्बर 2022।** आचार्यदेव के सान्निध्यवर्ती शिष्य प्रातः से रात्रि तक अपनी संयमित दिनचर्या से बाल एवं युवा पीढ़ी में धर्म का बीजारोपण कर रहे हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना के पश्चात् श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धान्त बत्तीसी एवं श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने 'सिद्धान्त के उभरते रहस्य शिविर' में मार्गदर्शन दिया।

गुरुचरणों में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने धर्मसभा में अपनी दिव्यदेशना के माध्यम से फरमाया कि "पुद्गलों के प्रति आकर्षण से भी कर्मबंध हो जाते हैं। हमारा जितना गहरा कषाय होता है, उतना ज्यादा रस और स्थिति हम उन कर्मों में भर देते हैं। फलस्वरूप हमें उतना ज्यादा दुःख होता है। सुपात्रदान देने से हमारे जन्मों-जन्म के पाप धुल जाते हैं। यहां ध्यान रखने योग्य बात है कि हमारा उल्लास कितना है? जिसमें भावनाओं के दोषों के कीड़े लग जाएं, वैसा भोजन साधु-साध्वी को नहीं बहराना चाहिए। निर्दोष आहार-पानी बहराने की महिमा अपरम्पार है। भोजन करने से पूर्व रोज कम से कम 1 मिनिट सुपात्रदान की भावना भाएं।"

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज शराब की दुकानों में लाईनें लगती हैं और दूध की दुकानों में भीड़ ही नहीं है। कहां से अच्छे दिन आएंगे? हमारा आचार-विचार, व्यवहार शुद्ध होना चाहिए।

भोजन में प्रतिक्रिया नहीं देने का संकल्प सभा में उपस्थित अनेक लोगों ने लिया।

**17 सितम्बर।** श्री शोभनमुनिजी म.सा. तत्त्वज्ञान की कक्षा ले रहे हैं। श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने सिद्धान्त के

## श्रमणोपासक

उभरते रहस्य शिविर में 'सम्मूर्च्छिम मनुष्य एक आगमिक सत्य, श्रावक को श्रमण प्रतिक्रमण नहीं, अपितु श्रावक प्रतिक्रमण करना चाहिए' आदि अनेक विषयों पर प्रकाश डाला।

विशाल धर्मसभा में आचार्य प्रवर ने फरमाया कि "परिग्रह की मर्यादा सीमित कर लो। ममत्व का किनारा तय कर लो कि इससे आगे मैं नहीं बढ़ूंगा। हमने यदि मर्यादा की लक्ष्मण रेखा खींच ली तो हम सुरक्षित हैं और फिर मर्यादा के भीतर ही हमारे विचार बनेंगे। उसके आगे विचार और मन नहीं दौड़ेगा। यह तब होगा जब हम परिग्रह की मर्यादा कर लेंगे। सुख से जीना है तो भगवान के सिद्धांतों में जीओ। मर्यादा हमें दुःखी नहीं बना सकती। निर्जरा की दिशा में हम आगे बढ़ें। हम अपनी सुरक्षा के लिए तैयारी करें। इच्छा कभी पूरी नहीं होती है, फिर भी इच्छाएं पैदा हो जाती हैं। इच्छाएं आकाश के समान हैं। संतोष धन आने से ही इच्छाएं शांत होती हैं।" आचार्य भगवन् के आह्वान पर 'भोजन में 11 आइटम से ज्यादा नहीं लेने' के प्रत्याख्यान उपस्थित अनेक जनों ने ग्रहण किए।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मोह को क्षय करने से ही मोक्ष मिलेगा। साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. ने चित्तौड़ में 25 की तपस्या की और आज आचार्यदेव की कृपा से मासखमण पूर्ण कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया है। हुक्मेश शासन में एक से बढ़कर एक कार्य हो रहे हैं।

साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि गुरुकृपा से आज साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा. ने स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने पर भी मासखमण तप करके आत्मशक्ति का परिचय दिया है। साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि सोया हुआ जीव खोता ही खोता है एवं जागने वाला जीव कुछ पाता है, पर धर्म पर चलने वाला बहुत कुछ पा लेता है। सोई हुई आत्मा को जगाने का कार्य आचार्य भगवन् कर रहे हैं। साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. सहित साध्वीमंडल ने तपस्या व गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। आचार्य भगवन् के एक आह्वान पर तपस्या की अनुमोदना में 200 भाई-बहिनों ने तुरंत खड़े होकर हाथ जोड़कर तेले तप का प्रत्याख्यान लिया। यह आचार्य भगवन् का अद्भुत अतिशय है। चित्तौड़गढ़ संघ ने आचार्य भगवन् के वर्ष 2023 के चातुर्मास हेतु जबरदस्त विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

परम गुरुभक्त राकेशजी छाजेड़-बड़ाखेड़ा एवं ज्ञानचंदजी कोठारी-वेल्लेचरी (चैन्नई) के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। आचार्य भगवन् ने प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी।

**18 सितम्बर।** श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी पर सुंदर समझाइश दी एवं श्री लाघवमुनिजी म.सा. तथा श्री राजनमुनिजी म.सा. ने **सिद्धांत के उभरते रहस्य** शिविर में विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन दिया।

विशाल धर्मसभा में उपस्थित ज्ञानपिपासु जनता को आचार्यदेव ने फरमाया कि "आचार शुद्धि के लिए तपस्या को स्वीकार करो, विनय का प्रयोग करो। दर्पण में हम स्वयं को देखें कि हमारे में क्या-क्या कमियां हैं? गलतियां हैं? उनका सुधार कर अपने भावों को निर्मल करूं, जिससे मेरी आत्मा का मार्ग प्रशस्त हो। विनय भाव मन को झुकाने से प्रबल होंगे और गुणीजनों को देखकर मन में उमंग जगेगी। बड़ों, चारित्रात्माओं एवं गुरु की सेवा, भक्ति, पर्युपासना करने, वाणी से पधारजो, बड़ी कृपा की आदि शब्दों का उच्चारण करने से, मन से गुरुजनों और बड़ों के प्रति विपरीत भाव नहीं आने से मन में विनय भाव जागृत होंगे। हमारा आचार, हमारा व्यवहार शुद्ध होगा तो सामायिक में मन क्यों नहीं लगेगा? हम आत्म-समीक्षा अर्थात् आत्मचिंतन करें कि कहां गड़बड़ी हो रही है? आचार शुद्ध होने से पुद्गलों के प्रति ममत्व हटेगा।"

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिनवाणी सदासर्वदा साथ रहने वाली है। अन्य कोई भी चीज साथ नहीं रहेगी। साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा., साध्वी श्री विभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री कविताश्रीजी म.सा. ने "मन

मंदिर में देव पधारे, आओ मिलकर लगाएं जयकारे” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। बैंगलूरु संघ व महिला मंडल ने द्रव्य की मर्यादा का पच्चक्खाण लिया। फतेहनगर से उदयपुर तक की 55 किलोमीटर की पैदल यात्रा कर गुरुभक्त पंकजजी, अनिताजी सरूपरिया ने गुरुदर्शन का लाभ लिया।

**19 सितम्बर।** प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना पश्चात् श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी एवं श्री लाघवमुनिजी म.सा. ने सिद्धांत के उभरते रहस्य शिविर में विशेष मार्गदर्शन दिया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “हम जैसा जानते हैं वैसा हमारा विचार बनता है। गुरु हमारे ज्ञान को निर्मल बनाते हैं। हमारे ज्ञान में जो मिथ्या बातें घुस चुकी हैं, उन्हें गुरु दूर करते हैं। ज्ञान जब निर्मल होता है तो उसका असर आचरण में आता है। सही विश्वास होगा तो सही ज्ञान और आचरण होगा। विश्वास टिकाऊ रखना इतना सरल नहीं है। सद्गुरु हमारे भीतर सही विश्वास जगाते हैं। हम इस बात पर विश्वास करें क्योंकि शास्त्र ऐसा कहते हैं।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने तप की महिमा के साथ ही तपस्वी साध्वियों के मनोबल की सराहना की। साध्वी श्री श्रुतिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि गुरुकृपा से आज साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री मंजरीश्रीजी म.सा. के मासखमण तप पूर्ण हो रहे हैं।

साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत “गुरु का हाथ है तो फिर क्या कमी है” प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि शबरी की चिरकाल की प्रतिक्षा राम के पधारने पर पूर्ण हुई। उस पल को पाकर शबरी अत्यंत प्रसन्न हुई। चंदनबाला, प्रभु वीर के पधारने पर अत्यंत खुशी का इजहार करती है। ठीक उसी प्रकार आज मेरे जीवन में भी 23 वर्षों के बाद तप की पिपासा पूर्ण हुई। गुरु कृपा का करिश्मा है कि अनहोना काम भी हो जाता है।

केसरिया-केसरिया गीतों से माहौल गूंज उठा। साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने पूर्व में 6, 7, 8, 11 व एकांतप तप किया हुआ है। साध्वी श्री मंजरीश्रीजी म.सा. ने पूर्व में 3, 8, 11 एवं एकांतर तप किया है। ‘राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश’ कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूलों में नैतिक शिक्षा, संस्कार जागरण के कार्यक्रम हुए।

**20 सितम्बर।** आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “सहज व्यक्ति जितना समाधि में रहेगा उतना दांव खेलने वाला व्यक्ति समाधि में नहीं रह पाएगा। वह हर बार हारेगा, पराजित होगा। हम किसलिए विवाद कर रहे हैं? हम जिससे विवाद कर रहे हैं उसका परिणाम क्या आएगा? उसका परिणाम होगा असंतोष, दुःख, गम। वस्तुतः शास्त्र जीने के लिए होता है। आगम के एक-एक रस को पीने की कोशिश करें। हमारा धर्म नहीं घटना चाहिए। चाहे धन घटे या बढ़े, चाहे बाकी चीजें बढ़ें या घटें, किंतु हमारा धर्म नहीं घटना चाहिए। धर्म में जीने का हमारा लक्ष्य हो।”

श्री राजनमुनिजी म.सा. ने ज्ञान-ध्यान सीखने एवं प्रतिदिन 15 मिनट स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

**21 सितम्बर।** प्रातःकालीन प्रार्थना पश्चात् श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की तत्त्वज्ञान कक्षा में सुन्दर समझाइश दी। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प्रशान्तमना आचार्यदेव ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “आसक्ति से कर्मबंध होता है। इच्छा, लालसा की सीमा नहीं होती है। कितना भी इकट्ठा कर लो, संतुष्टि नहीं होती है। संतोष से बढ़कर कोई धन नहीं है। पूणिया श्रावक की तरह आकांक्षा, लालसा, अभिलाषा नहीं

होनी चाहिए। यहां से खाली हाथ ही जाना है, लेकिन उससे पूर्व जीवन और मृत्यु के बीच के समय को सार्थक करना है। दुःख के कारणों को दूर करना है। जीवन की डोर दूसरे के हाथों में नहीं खुद के हाथों में होनी चाहिए। आपश्रीजी ने सत्य सदा जयकार चौपाई की सुन्दर विवेचना की।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें तुच्छ भावना को छोड़कर उदार भावना अपनानी चाहिए। मेरा घर-परिवार सुखी रहे यह क्षुद्र भावना है। सभी प्राणियों के प्रति उदारता की भावना जीवन में हो।

साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री इंगिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री जिज्ञासाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री कृतिश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने “मेरे प्राणों के आधार गवरानंदन है” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

**22 सितम्बर।** जैन सिद्धांत बत्तीसी कक्षा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान समझाया। विशाल धर्मसभा को आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “आपस में झगड़ा कैसे करना है वो सीख, वो कला हमने सीख ली। वचन से कैसे हम किसी को प्रताड़ित कर सकते हैं ऐसी कला हमने सीख ली। हम विचार करें कि किया हुआ कर्म जब उदय में आएगा तब किस प्रकार प्रताड़ित करेगा। प्रत्येक का अपना-अपना पुण्य और पाप होता है। हम दूसरों के प्रति हीन भावना न लाएं अपितु उत्कर्ष भावना लाएं। सामने वाला मेरा भला कर रहा है। मेरे भीतर रहे कषाय रूपी कांटों को निकालने वाला है। अपनी आत्मा के समान दूसरे की आत्मा को समझना बहुत उच्च भावना है। मैं स्वयं के लिए दुःख नहीं चाहता हूं तो दूसरों को दुःख क्यों दूं? जन्म हमारे हाथ में नहीं, पर मृत्यु को सुधारना हमारे हाथ में है। हमारा पुरुषार्थ होगा तो हर कार्य होगा।”

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने भक्ति गीत “गुरुवर पधारो, हृदय में विराजो यही प्रार्थना है” प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि इच्छाएं हमेशा बढ़ती रहती है। जो प्राप्त है वह पर्याप्त है। साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने “हुक्मसंघ के दिव्य सितारे, राम गुरुवर लगते प्यारे” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। तपस्याओं के विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। आचार्य भगवन् के आह्वान पर होली से पहले 5 तेल एवं चातुर्मास से पहले खुले-खुले 5 उपवास करने का प्रत्याख्यान अनेक जनों ने लिया।

**23 सितम्बर।** जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कराया। **सामायिक साधना का शिलान्यास शिविर** में नवदीक्षिता साध्वी श्री सिद्धीश्रीजी म.सा. के फरमाया कि समभाव की साधना का अभ्यास सामायिक में किया जाता है। सामायिक साधना मन के भावों को जोड़कर एवं 32 दोषों को टालकर विधि सहित करनी चाहिए। सामायिक में कर्म बांधने का कार्य नहीं अपितु कर्म काटने का कार्य होना चाहिए।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने फरमाया कि “कठिनाइयों से घबराने वाला व्यक्ति ठोस नहीं बन सकता। भगवान महावीर को एक ही रात्रि में 20 उपसर्ग आए, पर विचलित नहीं हुए। कर्मों के कारण हम खोखले बने हुए हैं। जब तक जीवन है तब तक सहना चाहिए। हम सहने में या कहने में विश्वास करते हैं, आत्मचिंतन करें। श्री गगनमुनिजी म.सा. का मन तपस्या में लगा हुआ है। वे सेवा में तत्पर रहते हैं। आपश्रीजी ने अपनी दैनिक साधना के साथ ही मासखमण तप पूर्ण करके अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया है। इच्छा का निरोध तप है। तप से आकांक्षा, अभिलाषा, इच्छा कम हो जाती है।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि बुढ़ापा, बीमारी आने से पहले धर्माराधना कर लेनी चाहिए। धर्म में शरीर सहायक होना चाहिए। साध्वी श्री मृगांकश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि तपस्या करना सरल कार्य नहीं है। लालसा को जीतना कठिन कार्य है। तप के राजमार्ग पर जो सुखी होता है वही चल सकता है। श्री गगनमुनिजी म.सा. ने इस चातुर्मास में दो मासखमण तप कर वीरता का परिचय दिया है।



साध्वी श्री प्रीतिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि आज गूगल का जमाना है, लेकिन गूगल नैतिकता, पवित्रता, सहजता नहीं दे सकता। संसार का उलझा हुआ व्यक्ति शास्त्र, ग्रन्थ से हर समस्या का समाधान प्राप्त कर सकता है। श्री गगनमुनिजी म.सा. ने इस चातुर्मास में दो मासखमण कर शासन का गौरव बढ़ाया है।

श्री लाघवमुनिजी म.सा. एवं श्री मयंकमुनिजी म.सा. आदि ने “धन-धन गुरुवर की शरण, पावन हुए तप में रमण” बधाई गीत प्रस्तुत किया।

मासखमण तपस्वी श्री गगनमुनिजी म.सा. ने अपने भावोद्गार में फरमाया कि जिनवाणी सुनकर जीवन बदलना है और इस पंचम आरे में आराधक बनना है। आपश्रीजी ने भाव गीतिका प्रस्तुत की। तपस्वी संत श्री गगनमुनिजी म.सा. का यह चौथा मासखमण पूर्ण हुआ है। पूर्व में उन्होंने 1 से 20 तक की लड़ी, 100 तेला, 4 अठाई, 3 बार सात उपवास, 3 बार नौ उपवास, 27 माह एकांतर तप आदि तपाराधनाएं की हैं। सामायिक साधना का शिलान्यास शिविर में नवदीक्षिता साध्वी श्री यतनाश्रीजी म.सा. ने मार्गदर्शन देते हुए पूणिया श्रावक जैसी शुद्ध सामायिक करने की प्रेरणा दी। युवा साथी हितेशजी जारोली ने अपने भाव यूं रखे- “तपस्या के इस उपवन में खुशबू यह फैल रही, आत्महित में बढ़ते जाओ, अंतर उद्गार यही”।

**24 सितम्बर।** प्रातः धार्मिक कक्षा में श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी पर ज्ञानार्जन करवाया। सामायिक साधना का शिलान्यास शिविर में साध्वी श्री सिद्धीश्रीजी म.सा. ने समत्व भाव की साधना करने की प्रेरणा दी।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “जब तक दूसरे पदार्थों की अभिलाषा, आकांक्षा करते रहेंगे, तब तक हमारे भीतर उत्तमता प्राप्त नहीं होगी। जो ज्ञान हमें चाहिए वो ज्ञान पुट्टलों से नहीं मिलेगा और ना ही अनुकूल-प्रतिकूल चाह करने से मिलेगा। धर्म क्रिया कोई भी हो, वह अमूल्य है। सामायिक अमूल्य है। उसका मोल लगाना किसी के बूते की बात नहीं है। एक दिन का साधु जीवन और जीवनपर्यंत का श्रावकत्व बराबर है। धर्मकला सर्वश्रेष्ठ कला है। धर्मकला नहीं सीखी तो सारी कलाएं बेमानी है। उन कलाओं से आत्मकल्याण होने वाला नहीं है। माता-पिता, अभिभावक का आदर-सम्मान, सेवाभक्ति करना व्यावहारिक धर्म के अंतर्गत बहुत जरूरी है।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारे मन में किसी के प्रति अशुभ भाव नहीं आने चाहिए। इससे कर्मबंध होते हैं। साध्वी श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., साध्वी श्री विवेकश्रीजी म.सा. आदि ने भजन के माध्यम से भाव रखे। कई लोगों ने माता-पिता, सास-ससुर से कभी अलग नहीं होने का संकल्प लिया। दोपहर में साध्वी श्री यतनाश्रीजी म.सा. ने सामायिक साधना का शिलान्यास शिविर में सामायिक के 32 दोषों को टालकर साधना करने की प्रेरणा दी।

**25 सितम्बर।** प्रातःकालीन बेला में रविवारीय समता शाखा श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने करवाई। जैन सिद्धांत बत्तीसी की धर्म तत्त्वज्ञान कक्षा श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने ली। सामायिक साधना का शिलान्यास शिविर में नवदीक्षिता साध्वी श्री सिद्धीश्रीजी म.सा. ने शुद्ध सामायिक करने की अद्भुत प्रेरणा दी।

अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “हजारों योद्धाओं को जीतना सरल है, पर अपनी आत्मा को जीतना बहुत कठिन है। मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और मुझे कहां जाना है, इस पर सतत् चिंतन करते रहना चाहिए। छोटी-छोटी बात में अहंकार और घमण्ड करते हैं, इससे जन्म-मरण बढ़ता जाएगा। प्रवाह में बहने के लिए कोई योजना बनाने की जरूरत नहीं पड़ती है। हमें स्वार्थ से ऊपर उठना होगा। चित्त की चंचलता को छोड़कर चित्त को शांत करना होगा। परमार्थ भक्ति से समस्या का समाधान मिलता है। अपने मन, इंद्रियों पर नियंत्रण कर लिया तो कल्याण निश्चित है।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध आते ही हम शांत हो जाएं। क्षमा, अहिंसा, तप को धारण करने से जीवन का उद्धार होगा।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री राजमतीजी म.सा., साध्वी श्री किरणप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री भावनाश्रीजी म.सा. ने “प्यारे गुरु राम आ गए” गीत प्रस्तुत किया। सामायिक साधना का शिलान्यास शिविर में साध्वी श्री यतनाश्रीजी म.सा. ने बहुत ही सुंदर तरीके समझाईश दी।

तपस्या के उपलक्ष्य में आचार्य भगवन् के आह्वान पर 160 से अधिक भाई-बहनों ने खड़े होकर तेले तप के प्रत्याख्यान लेकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। संघ द्वारा तपस्या की अनुमोदना में सामूहिक नीवी तप किया गया।

**26 सितम्बर।** श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की तत्त्वज्ञान की कक्षा ली। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि “जो ज्ञान गुरु से मिलता है, वह किसी किताब से नहीं मिल सकता। जब पैसा ज्ञान को खरीदने लग जाता है तो ज्ञान की कीमत कम हो जाती है। हमारी भूमिका जितनी मजबूत होगी, उतना ही हम कार्य को उत्तम परिणाम दे पाएंगे। हमारा जीवन “सादा भोजन उच्च विचार” पर आधारित होना चाहिए। पहले शिक्षा कंठस्थ करने की परंपरा थी, जिससे दिमाग तेज रहता था। अब किताबें आ गयी हैं, उनसे दिमाग कमजोर होता है। श्रावक-श्राविकाएं संकल्प करें कि जब भी गुरुदेव एवं साधु-साध्वियों के दर्शन करने जाएं तो अहिंसा व्रत की आराधना करें। यहां हम आराम करने नहीं अपितु धर्म साधना करने आते हैं।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अरिहंत, सिद्ध की शरण से बढ़कर कोई शरण नहीं है। वैभव में आसक्त नहीं होना चाहिए। शास्त्र मोक्ष की ओर ले जाने का मार्ग है। हमें अधिक से अधिक शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री कविताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विभाश्रीजी म.सा. आदि ने “भक्ति से बोलो जयकार प्यारे” भजन फरमाया। दीर्घ तपस्याओं के अनेक प्रत्याख्यान हुए।

## संघ स्थापना दिवस पर संघ समर्पणा महोत्सव मनाया

संघ हमारा अविचल मंगल, नंदनवन सा महक रहा।

हम सब इसके फूल व कलियां, सुंदरतम निज संघ अहा।।

**27 सितम्बर।** देश के कोने-कोने एवं विदेशों से गुरुभक्त श्रद्धालु आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से धार्मिक, सामाजिक एवं सेवा कार्यों में सहकार की भावना लेकर नई ऊर्जा प्राप्त करने के लिए भारी संख्या में उपस्थित हुए।

संघ समर्पणा महोत्सव में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए संघनायक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि “जब सर्वज्ञ-सर्वदर्शी अवस्था होती है तो केवलज्ञान, केवलदर्शन से आलोकित होते हैं और सबसे पहले उनकी देशना प्रारंभ होती है। वही देशना साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका रूप चार तीर्थ की स्थापना कराने वाली बन जाती है। तीर्थकर देवों का महान उपकार है। पूर्वाचार्यों ने जिनवाणी के रथ को आगे बढ़ाया है। उस रथ को आगे बढ़ाने में सारथी के रूप में आचार्य परम्परा रही है। उसमें साधु-साध्वी का सहयोग सदा बना रहा। सहयोग का अर्थ है कदम मिलाकर चलना। हमारे कदम एक साथ उठने चाहिए और एक साथ आगे बढ़ने चाहिए। समान दृष्टि चाहिए, एक दृष्टि होनी चाहिए। एक दृष्टि का मतलब है कि मोक्ष मेरी आराधना का सूत्र है। समाधि मेरे जीवन का अंग है। चाहे साधु-साध्वी हो या श्रावक-श्राविका सबका एक ही लक्ष्य व एक दृष्टि होनी चाहिए। उसी के अनुसार गतिशील होना चाहिए। वर्तमान में भगवान महावीर का

शासन है। उन्होंने चार तीर्थ की स्थापना की। “सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्राणि मोक्षमार्गः” सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र ही मोक्ष का मार्ग है। हमारा संकल्प जगें कि कि पूरा जैन समाज नहीं तो साधुमार्गी जैन संघ के 9 वर्ष तक के बच्चों को नवकार मंत्र, तिक्रुत्तो एवं 24 तीर्थकर देवों के नाम याद होने चाहिए। संघ गुणरत्नों का समूह होता है। संघ के प्रति हमारी निष्ठा बनेगी तो हम सत्य के प्रति निष्ठा जागृत करने वाले बनेंगे। हमारी दृष्टि गुणात्मक होगी तो हर व्यक्ति के अंदर गुण दिखेंगे। नाम के लिए कोई काम नहीं होना चाहिए। निष्काम भाव से कार्य करें।”

इस अवसर पर गुरु-भगवंतों का प्रेरक मार्गदर्शन श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति, श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों ने प्राप्त किया। इस पावन अवसर पर मुमुक्षु बहन कु. वर्षाजी भंडारी सुपुत्री मनसुखजी-मनीषाजी भंडारी, शिरूड़, धुलिया (महा.) की जैन भागवती दीक्षा हेतु परिजनों ने गुरुचरणों में अनुज्ञा-पत्र सहर्ष समर्पित किया।

मुमुक्षु बहन ने प्रतिज्ञा-पत्र का पठन करते हुए कहा कि गुरु-भगवंतों के निर्मल संयम जीवन से प्रभावित होकर व श्री आदित्यमुनिजी म.सा., श्री अटलमुनिजी म.सा. की पावन प्रेरणा से महान वीतराग पथ पर आगे बढ़ रही हूँ।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थकर देव भी संघ को नमन करते हैं। तीर्थकर के समान आचार्य होते हैं। आचार्य को दीपक के समान बताया गया है। एक दीपक हजारों दीपकों को प्रकाशित कर सकता है। यह धर्म संघ है। यहां छोटे-बड़े सभी का सम्मान होना चाहिए। एक-दूसरे की टांग खींचने की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति का त्याग होना चाहिए। गीत “नमो संघस्स कहता जा, नमो तित्थस्स कहता जा, गुरु राम को झुकता चला जा” जैसे ही प्रस्तुत किया गया पूरा माहौल संघ भक्ति से सराबोर हो गया।

श्री हेमगिरिजी म.सा. ने फरमाया कि जो सच्चा जौहरी होता है वह हीरे की परख करता है, वैसे ही हमारे आचार्य श्री नानेश संयम लेने से पूर्व अनेक स्थानों पर गए, लेकिन उनके पांव गुरु गणेश के पास आकर ही रुके। क्योंकि उन्हें सच्चे गुरु का आश्रय मिल गया। गुरु गणेश ने फरमाया कि मुझे भीड़ नहीं चाहिए। शुद्ध संयम का पालन करने वाले साधक चाहिए। वैसे ही हमारे गुरु राम सच्चे जौहरी हैं। इसी के साथ “जय बोलो, जय बोलो, सभी जय गुरुदेव की” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया।

शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले), साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले) आदि साध्वीवृंद ने संघ भक्ति गीत “साधुमार्गी संघ लागे घणो सुहावणो सो संघ” प्रस्तुत किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि हमने महावीर को नहीं देखा, लेकिन उनके प्रतिनिधि गुरु राम को साक्षात् भगवान महावीर के रूप में देख रहे हैं। गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना भक्ति नहीं, भक्ति के बिना मुक्ति नहीं। संघ समर्पणा महोत्सव में प्रत्येक व्यक्ति 5 व्यक्तियों को जोड़े। आध्यात्मिक आरोग्यम् से हम भी प्रत्येक व्यक्ति के गुणों को ग्रहण करें। हम सब मिलकर संघ सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाएं।

राष्ट्रीय महामंत्रीजी ने संकल्प-सूत्र का वाचन किया।

युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि आचार्य भगवन् प्रतिदिन नए आयाम दे रहे हैं। यह हमारी कमजोरी है कि हम पूर्ण रूप से उस पर नहीं चल पा रहे हैं। हम निष्काम भाव से संघ सेवा करें। मेरे चार साल के कार्यकाल में हुई त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करता हूँ।

युवा संघ के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमितजी बंब ने कहा कि गुरुदेव के प्रदत्त आयामों को जन-जन तक

पहुंचाने के पूर्ण भाव हैं। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि गुरुवर के बताए मार्ग पर पूर्ण निष्ठा रखूंगा।

महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने कहा कि आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महती कृपा से महिला जागरण का अभूतपूर्व कार्य हो रहा है। महापुरुषों के आयामों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हम दृढ़ संकल्पित हैं।

स्थानीय संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने दिव्य महापुरुषों के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने की अपील की। आचार्य भगवन् के वर्ष 2023 के चातुर्मास हेतु नीमच, बीकानेर, जावरा ने भावभरी विनती प्रस्तुत की।

इस अवसर पर संघ संस्थापक सदस्य सरदारमलजी कांकरिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्रीगण, संघ, महिला समिति एवं युवा संघ के अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्षगण, देश-विदेश से पधारे अन्य पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

उड़ीसा सरकार के केबिनेट मंत्री परम गुरुभक्त श्री राजूभाई ढोलकिया ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

**28 सितम्बर।** प्रातः मंगलमय प्रार्थना पश्चात् श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की कक्षा ली। अपार जनमेदिनी से भरे प्रवचन पाण्डाल में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए संयम सुमेरू आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि “मोहकर्म के कारण दुःख होता है और वेदनीय कर्म के कारण कष्ट-पीड़ा होती है। मोह बढ़ेगा तो दुःख बढ़ेगा, मोह घटेगा तो दुःख घटेगा। भगवान के दिव्य विचारों से दुःख, दुर्भाग्य दूर होता है। सम्यक्त्व भाव से दृष्टि बदल जाती है। संशय का तत्काल निराकरण कर लेना चाहिए। तीर्थंकर भगवान जो फरमाते हैं वह सत्य और निःशंक होते हैं। धर्म संस्कार के कारण जैन समाज का नाम अपराध करने वालों में नहीं होता है। तीन मनोरथों- “वह दिन मेरा धन्य होगा जिस दिन मैं आरंभ-परिग्रह का त्याग करूंगा, पंच महाव्रत धारण करूंगा और अंतिम समय में संलेखना संधारा ग्रहण कर पंडितमरण को प्राप्त करूंगा” का चिंतन सभी को हमेशा करना चाहिए।” आपश्रीजी ने आशा-शांतिलाल चौपाई का सुंदर विवेचन किया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि दान छपाकर नहीं छिपाकर देना चाहिए। दान का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए। चार महासतियांजी के मासखमण तप के एक दिन पूर्व 300 भाई-बहिनों ने एक साथ खड़े होकर पोरसी का प्रत्याख्यान चौविहार सहित लिया। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा।

श्री अटलमुनिजी म.सा. ने संस्कार, स्वाध्याय, तप विषय पर प्रेरक उद्बोधन दिया।

## चार महासतियांजी के मासखमण पूर्ण

**29 सितम्बर।** विशाल जनसमूह की ज्ञानपिपासा को शांत करते हुए आचार्यदेव ने सरल-सहज अभिव्यक्ति में फरमाया कि “तीर्थंकर भगवंतों की स्तुति, भक्ति, श्रद्धा हमारे भीतर ज्ञानशक्ति को जागृत करती है। हमारे सामर्थ्य को जगाती है। हमारे भीतर अनंत शक्ति भरी हुई है, किंतु जब तक अपनी शक्ति को नहीं जानेंगे तब तक कुछ भी करने में समर्थ नहीं होंगे। जब अपनी शक्ति का अहसास होता है तब समझ में आता है कि हमारे भीतर भी शक्ति है। शक्ति का जागरण करने वाले कर्म हैं। भिन्न-भिन्न शक्तियों को उद्घाटित करने वाले भिन्न-भिन्न कर्म हैं। ज्ञानशक्ति पर आवरण आना ज्ञानावरणीय कर्म है। दर्शन पर आवरण दर्शनावरणीय कर्म है। साता-असाता का अनुभव कराने वाले वेदनीय कर्म हैं। किसी भी गति में हमें रोके रखने वाला कर्म आयुष्य है। मोह कर्म हमारी विवेकशक्ति को आवरण करता है। हमारी समझ सत्य को प्रकट नहीं होने देती। आठों कर्म हमारी आत्मशक्ति को दबाए हुए हैं। सम्यक् प्रकार से किया गया तप कर्मों को दूर करने वाला होता है। तप से कर्मों की निर्जरा होती है। आज चार-चार महासतियांजी मासखमण के रथ पर आरूढ़ हो रही हैं। इन महासतियों

ने हिम्मत करके मन बनाया। हिम्मत से इनकी कठिनाइयां दूर होती गईं और ये आगे बढ़ गईं। हमें पुद्गल से नहीं परमात्मा से प्रीत लगानी है।”

श्री शोभनमुनिजी म.सा. ने जैन सिद्धांत बत्तीसी की धार्मिक कक्षा में तत्त्वज्ञान दिया।

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मंत्रों का प्रभाव पूर्व काल की तरह आज भी है। नवकार महामंत्र में अपार शक्ति है। तपस्या की अनुमोदना में तप गीत “यह तप का महोत्सव मिलेगा कहां” प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री प्रज्ञप्तिश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि जो ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप की आराधना करता है वह निश्चित ही सुगति को प्राप्त होता है। इन महासतियांजी ने अपनी आत्मा को तपाया है। साध्वी श्री विभाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि तप करने से कोई भी बीमारी नहीं होती और स्वास्थ्य अनुकूल रहता है। पुण्यवानी के बिना गुरुदेव का सान्निध्य प्राप्त नहीं होता। साध्वी श्री जलजश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि गुरुकृपा से आज इन चारित्रात्माओं की दीर्घ तपस्या सम्पन्न हो रही है। इनके आत्मबल की जितनी सराहना की जाए उतनी कम है। शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने तपस्या गीत प्रस्तुत किया। चमड़े की वस्तुओं का उपयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। श्री अटलमुनिजी म.सा. ने प्रभु एवं गुरुभक्ति करने की विशेष प्रेरणा दी।

अ.भा. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष नेमीचंदजी चौपड़ा-पाली, जीवनसिंहजी सिरिया, जवरीलालजी कांकरिया आदि ने गुरुदर्शनकर विभिन्न विषयों पर चर्चा का लाभ लिया।

**30 सितम्बर।** आचार्य प्रवर ने अपूर्व कृपा बरसाते हुए उपस्थित जनमेदिनी को उद्बोधन देते हुए फरमाया कि “योग-वियोग में सारी परिस्थितियों में एक समान रहें। वही आत्मसुख है। यह सुख जिसने समझ लिया वह दुःखी नहीं है। बाकी दुनिया में हर कोई कहीं न कहीं, किसी न किसी कारण से दुःखी है। हम शरीर को जैसा ढालना चाहेंगे वैसा ढाल सकते हैं। सत्य भगवान है, आत्मा भगवान है। जब तक शक्ति की पहचान नहीं कर पाते हैं, बाह्य चीजें सुंदर लगती हैं। सुविधाएं सुख देने वाली नहीं हैं। सत्संगत से सुख मिलता है। परमार्थ का परिचय प्राप्त करें।”

श्री आदित्यमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि अशुभ से शुभ विचारों की ओर जीवन को आगे बढ़ाएं। साध्वी मंडल ने “राम गुरु का जो भी ध्यान धरेगा, भव पार उतरेगा” गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी श्री लक्षिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अंजलिश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री महकश्रीजी म.सा. के 30 उपवास (मासखमण) का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ।

36 मासखमण करने वाले तपस्वी सुनीलजी जैन-दिल्ली ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। बड़ीसादड़ी संघ ने आगामी चातुर्मास, क्षेत्र स्पर्शने एवं अन्य कोई पावन प्रसंग प्रदान करने तथा 4 दिसम्बर 2022 की दीक्षा प्रसंग प्रदान करने हेतु पुरजोर विनती गुरुचरणों में की। उदयपुर-मेवाड़ राम महोत्सव चातुर्मास के रंग में रंगा हुआ है। अनेक उपलब्धियों एवं कीर्तिमानों के साथ राम महोत्सव गतिमान है।

आगामी 11 अक्टूबर को आचार्य भगवन् के मुखारविंद से मुमुक्षु बहन सुश्री प्रियंकाजी भटेवरा-पूना, मुमुक्षु बहन सुश्री मुस्कानजी बरड़िया-देशनोक, मुमुक्षु बहन सुश्री दिशाजी पगारिया-जलगांव की जैन भागवती दीक्षा संभावित है।

अनेक श्रीसंघों से आचार्य भगवन् के 2023 चातुर्मास, दीक्षा एवं अन्य विभिन्न प्रसंगों की विनतियां गुरुचरणों में निरंतर हो रही हैं। प्रतिदिन दोपहर में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी, शिविर आदि विविध कार्यक्रम हुए।

शिरपुर, जावरा, बालेसर, जोधपुर, मुम्बई, हावड़ा, कोण्डागांव, माटुंगा, वरोरा, फतेहनगर, भंडारा, बालोद,

मनावर, नोखामंडी, बैंगलूरु, फलौदी, बाड़मेर, सरदारशहर, मंदसौर, दौलतगढ़, रामामंडी, सिरकाली, नागदा, नेत्रंग, डोंडीलोहारा, सोमेसर, चिकारड़ा, कपासन, सवाईमाधोपुर, धुलिया, शिरपुर, शिरूड़, बासनी, ब्यावर, झालावाड़, आलनपुर, दिल्ली, भालोट, दुर्गा, भोपाल, मंगलवाड़ चौराहा, अहमदाबाद, अजमेर, कोलकाता, रतलाम, साबरमती, कानोड़, बंबोरा, हैदराबाद, फरीदकोट, चंडीगढ़, अलीगढ़, प्रतापगढ़, देवगढ़, नगरी, जलगांव, जावद, बालोतरा, बाड़मेर, बायतु, गढ़ सिवानी, बीकानेर, गंगाशहर-भीनासर, चित्तौड़, खैरागढ़, मदुरांतकम्, खिरकिया आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का अपूर्व लाभ लिया।

## तपस्या सूची

### संत-सती वर्ग

श्रद्धेय श्री गगनमुनिजी म.सा.	30	साध्वी श्री मंजरीश्रीजी म.सा.	30
साध्वी श्री मुदितप्रज्ञाश्रीजी म.सा.	30	साध्वी श्री महकश्रीजी म.सा.	30
साध्वी श्री लक्षिताश्रीजी म.सा.	30	साध्वी श्री सौम्यताश्रीजी म.सा.	31
साध्वी श्री अंजलिश्रीजी म.सा.	30	साध्वी श्री तरुलताजी म.सा.	30
साध्वी श्री अर्चिताश्रीजी म.सा.	30	साध्वी श्री रमामीश्रीजी म.सा.	26

### श्रावक-श्राविका वर्ग

हेमलताजी प्रदीपजी बांठिया-नोखा	81	पुलकितजी गुलगुलिया	79
चेतनाजी कोठारी	33	अशोकजी खुरदिया	31
अजयजी दक	31	नंदप्रभाजी मेहता	31
प्रियंकाजी कोठारी	31	संजयजी वया	31
कल्पनाजी कल्पेशजी पोखरना	30	मीनू धर्मेन्द्रजी आंचलिया-बेगूं	30
आशाजी बोरदिया	30	मैनाजी आंचलिया	30
राजकुमारजी डूंगरवाल	30	अमितजी दिनेशजी मोगरा	30
मनोहरबाई बाबुलालजी नाहर	30		

**उपवास 15-** दिलखुशजी बोकड़िया, मोनिनजी प्रकाशजी सुराणा, **11-** संगीतादेवी कुदाल, **9-** दिलीपकुमारजी वया, नीलमजी वया, दक्ष नलवाया (13 वर्ष), जसवंतजी धींग, प्रकाशजी मारू, हेमलताजी मेहता, विमलजी पितलिया, **अठाई-** पायल सियाल

### आजीवन शीलव्रत

विमलाबाई गन्ना-गोवा, दीपचंदजी-कंचनदेवी लुणावत-नोखा, मदनजी बोहरा-मैसूर, नवरतनजी-मधुजी छाजेड़-हावड़ा, धापूदेवी वीरवाल जैन, जमनादेवी लोहार-गंगापुर, विजयजी कातरेला-बैंगलूरु, सुनीताजी जैन, रेशमाजी जैन-रामामंडी, अरुणाजी जवरीलालजी सुराणा-नंदुरबार, प्रकाशजी छाजेड़, किरणजी कटारिया-रतलाम, हेमलताजी सुराणा-रतलाम, प्रकाशजी चौरड़िया-धुलिया, गोविन्दसिंहजी मंजूलताजी पोखरना, शांतिबाई राठौड़-भालोट, जयकुमारजी-दिल्ली, संतोषजी कोठारी-नीमच, झंकारबाई डूंगरवाल-भीलवाड़ा, सुभाषजी-सोनाजी सुराना-मुम्बई, हीरालालजी गेलड़ा, डालारामजी मीणा-ढालापानी, डॉ. सुभाषजी स्नेहलताजी जैन-फरीदकोट, पवनजी-शशिजी जैन, फरीदकोट, विमलजी-दर्शनाजी जैन-

आजीवन पक्की नवकारसी

250 पक्की नवकारसी

150 पक्की नवकारसी

100 पक्की नवकारसी

1 लाख गाथा का स्वाध्याय

500 गाथा का स्वाध्याय

प्रतिदिन 2 हजार गाथा

1200 गाथा

रात्रिभोजन त्याग

हरी का त्याग

पोरसी

माह में 10 दिन मोबाइल त्याग

माह में 5 दिन मोबाइल त्याग

वर्ष में 250 दिन मोबाइल

प्रत्येक पक्की को मोबाइल त्याग

चार माह एकासन

अलीगढ़, जयरामजी मीणा-चौथ का बरवाड़ा, नानालालजी शकुंतलाजी कोठारी-बड़ीसादड़ी, कांतिलालजी चंद्राजी सिंघवी-सिकन्दराबाद, शिखरचंदजी-किरणदेवी भूरा-हावड़ा, पारसमलजी चंदनमलजी कोठारी-जावरा बालीदेवी गुलगुलिया-भीम, रूपाजी चावत, ओंकारलालजी मानकुंवरजी सोनी-नीमच, अजीतजी सीताबाई-बैंगलूर

प्रेमबाई मेहता-प्रतापगढ़

लीलावतीजी बरड़िया-पाडलिया

कंचनदेवी छल्लाणी-गंगाशहर

कांताजी आंचलिया-हावड़ा, नरेशजी सांखला, सुरेशजी सांखला-जगदलपुर, मीनाजी श्रीश्रीमाल, सुमनजी पीपाड़ा-बिरमावल, सुरेखाजी भंडारी-अलीबाग, विजयश्री मालू-दिल्ली, सोहनलालजी बांठिया-दुर्ग, अनुकृतिजी मांडोत, हेमलताजी सुराणा-रतलाम, आशाजी शामसुखा, कल्पनाजी कांकरिया, आशाजी छाजेड़, लीलाबाई रांका, मयूरीजी बोहरा, मनोहरीबाई सिपानी, सज्जनबाई नागौरी-चित्तौड़गढ़

रेखाजी जैन-सवाईमाधोपुर, जमुनाबाई पितलिया, सपनाबाई मुणोत, विनीताजी सेठिया-कोलकाता, ताराबाई पारख-रतलाम (100 एकासन भी), कुसुमलताजी भंडारी-खिरकिया

सुनीताजी जैन, रेशमाजी जैन-रामामंडी

नोरतबाई सिंधी-अजमेर

कान्ताजी सेठिया-भीनासर

कन्हैयालालजी मांडोत, श्रेणिकजी सियाल-धामनोर, गायत्रीजी जैन (जमीकंद त्याग भी), इन्द्राजी जैन (जमीकंद त्याग भी), शशिकलाजी जैन-सवाईमाधोपुर (जमीकंद त्याग भी), इंद्रादेवी जैन-सवाईमाधोपुर, भैरूलालजी जैन-अलीगढ़, प्रकाशजी भंडारी-नीमच (जमीकंद त्याग भी), नीलेशजी जैन-नगरी (जमीकंद त्याग भी)

शक्तिबाई गेलड़ा

कमलजी कोठारी

100- सुमिताजी गांधी-अमरावती, मोतीलालजी सुराणा-कोंडागांव, चंद्रप्रभाजी रांका (150 स्नान भी), संतोषजी बडेरा-बालोतरा, कुलदीपजी जैन, अरिहंतजी जैन-फरीदकोट, इन्द्राजी आंचलिया, कस्तूरीजी गुलगुलिया-बीकानेर, प्रभाजी पींचा-विराटनगर

प्रकाशबाई-आमेट

भगवतीलालजी सेठिया

संतोषजी पारख-नयापारा राजिम

सुनीताजी पींचा-फलौदी, सुशीलाजी सियाल-धामनेर

वीनूमाला मुणोत-रतलाम

वर्ष में 21 आयंबिल	शारदा बैद-दिल्ली
वर्ष में 25 उपवास	संतोषजी बोहरा-बाड़मेर
15 द्रव्य	विमलजी भारतीजी मुणोत-बैंगलूरु
चौविहार व सचित्त का त्याग	मंजूजी जारोली-निम्बाहेड़ा
एकांतर तप	विद्याजी सियाल-धामनेर
तिविहार	मीनाजी आंचलिया-बेगूं
251 पचक्खाण	झमकुबाई बोथरा-नोखा
वर्षीतप का प्रत्याख्यान	सुशीलाजी मारू-जेठाना
1100 सामायिक	कमलाबाई नागौरी-मुम्बई
31 उपवास	आशाजी जारोली-बंबोरा, प्रियंकाजी वया, रानीजी दक, शांताजी-नंदुरबार
100 संवर	रमेशजी सिंघवी-हैदराबाद, संगीताजी पोखरना-जावरा
100 दया, 100 संवर	मोनिकाजी रांका
4 माह एकासन	विज्जाबाई मांडावत
सचित्त का त्याग	वीर पिता वर्धमानजी कटारिया-भीलवाड़ा
वर्ष में 50 उपवास	मनीषजी सूर्या-उज्जैन

वर्ष में विभिन्न संख्या में एकासन, जमीकंद त्याग, वर्ष में विभिन्न संख्या में बड़े स्नान का त्याग, माह में 1 दिन मोबाइल का त्याग, विदेश जाने का त्याग, टी.वी. का त्याग, बाजार की मिठाई का त्याग, वर्ष में 6 माह स्नान का त्याग, बियासना, रात्रि संवर, धोवन पानी पीने, 10वां तेला, 12 व्रत, ऊनोदरी तप, होटल का त्याग सहित अनेक प्रत्याख्यान गुरुभक्तों ने ग्रहण कर कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित किया।

-महेश नाहटा

## श्री गणेशाचार्यजी से दीक्षित 87 वर्षीय, शासन दीपिका साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. का तिविहार संथारा सजगता व समाधिपूर्वक गतिमान

मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है,  
तुम सामने हो गुरुवर! मेरे प्राण निकल जाएं।।

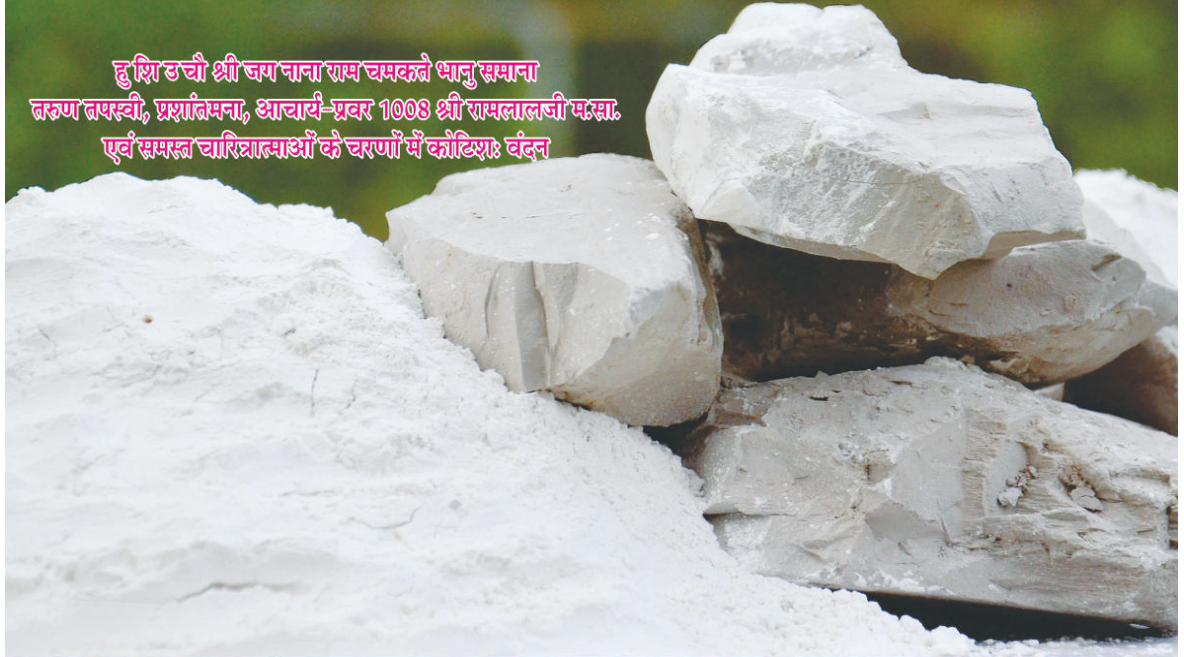
उदयपुर। युगनिर्माता आचार्य श्री रामेश की आज्ञानुवर्तिनी शासन दीपिका वयोवृद्ध साध्वी श्री शांताकँवरजी म.सा. ने आचार्य भगवन् के पावन मुखारविन्द से अपना तीसरा मनोरथ संलेखना संथारा ग्रहण कर उत्कृष्ट भावों एवं आत्मबल का परिचय दिया है। साध्वीश्रीजी ने 3 अक्टूबर 2022 को प्रातः 9:25 बजे तिविहार संथारा ग्रहण किया, जो समाधिपूर्वक गतिमान है। परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं संत-सतियाँजी द्वारा उन्हें निरंतर स्वाध्याय एवं शुभ भावों से ओत-प्रोत भजन, गीत आदि श्रवण कराए जा रहे हैं। भावों की दृढ़ता देखते ही बनती है। पूर्ण सजगता के साथ सभी दर्शनार्थियों को मंगल आशीष प्रदान कर रही हैं। विभिन्न सम्प्रदाय की चारित्रात्माएं भी दर्शन लाभ ले एवं स्वाध्याय सुनाकर कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित कर रहे हैं। स्थानीय सहित देश के अनेक क्षेत्रों से हर सम्प्रदाय के लोग दर्शनों का अवसर प्राप्त कर धन्य-धन्य हो रहे हैं। साध्वी मंडल एवं उदयपुर संघ की सेवाएं सराहनीय हैं।





Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उचौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना  
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.  
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन



**A Premier Clay Specialists in The Country...**

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

**JLD MINERALS**  
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :  
1st Floor, Labhuji Ka Katla,  
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234  
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944  
Email : wbcclay@yahoo.com

[www.jldminerals.com](http://www.jldminerals.com)



## CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT



PATIENT ROOM



RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

### RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095

Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

## संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक	
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ	
प्रधान कार्यालय	
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261 helpdesk@sadhumargi.com अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक	
गौतम चन्द्र जैन, मुम्बई	
सह संपादिका	
श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर	
श्रमणोपासक सदस्यता	
आजीवन (अर्द्ध मूल्य) (केवल भारत में)	500/-
(विदेश हेतु)	10,000/-
वार्षिक (केवल भारत में)	60/-
(विदेश हेतु)	1,000/-
वाचनालय वार्षिक (केवल भारत में)	50/-
प्रस्तुत अंक मूल्य	10/-
संघ सदस्यता	
साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-
साहित्य सदस्यता	
15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-
संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :- E-mail : ho@sadhumargi.com	

बैंक खाता विवरण	
Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner	
State Bank of India	
Account No. :	31264126681
IFSC Code :	SBIN0003401
Branch :	G.S. ROAD, Bikaner
Mob. :	7073311108
E-mail :	accounts@sadhumargi.com
	
व्हाट्सएप्प और ई-मेल आईडी	
श्रमणोपासक समाचार :	8955682153 } news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक :	9799061990 }
साहित्य :	8209090748 : publications@sadhumargi.com
महिला समिति :	7231033008 : ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ :	7073238777 : yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008 }
कर्म सिद्धान्त	7976519363 } examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231933008 : anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113 : vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507 : Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008 : udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन :	6265311663 : globalcard@sadhumargi.com
:- सूचना :-	
निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा। कार्यालय समय- प्रातः 10.00 से सायं 6.30 बजे तक लंच- दोपहर 1.00 से 1.45 बजे तक	

### आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर दें।  
इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही मिजवाई जा सकेगी।  
मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप्प करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

**RAKSHA**

PIPES

OUR GUARANTEE

**INDIA'S MOST TRUSTED BRAND**



**Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand**  
**SHAND GROUP OF INDUSTRIES**

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA  
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.  
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com



**Diamond**  
**Dureflex**



**Diamond**  
**DUROLON**

Now with new  
**M.R.O.**  
Technology  
Resists high Impact

IS 15778 : 2007  
  
OM/L NO : 2526149

**cftri**  
CERTIFIED

**LUCALOR**  
FRANCE

**FIRST TIME IN INDIA**

ISI FITTINGS WITH ADVANCED  
CO-MOULDED DURO RING SEAL

[www.shandgroup.com](http://www.shandgroup.com)

रक्षा जीवन भर की सुरक्षा

[www.rakshapipes.com](http://www.rakshapipes.com)

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।  
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए भण्डारी ऑफसेट, जोधपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24950

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261